हंस

वार्षिक पत्रिका 2017

हंसराज कॉलेज

—दिल्ली विश्वविद्यालय—

Mahatma Hansraj
(1864-1938)

The college was founded to preserve the memory of Mahatma Hansraj, acknowledged as the founding father of the D.A.V. movement in undivided India. Frail in body but heroic in sprit, Mahatmaji was selflessly dedicated to the course of education. He started his career as the Honorary Founder Headmaster of D.A.V. School, Lahore, in 1886 and over the next 50 years went on to shape the destiny of the D.A.V movement in India.

समन्वयक

श्री सुशील कुमार गुप्ता
(कार्यवाहक प्रशासनिक अधिकारी)

प्रकाशन समिति

श्री एस. एन. प्रसाद
डॉ. निवेदिता सेन
डॉ. नृत्य गोपाल शर्मा
डॉ. विजय कुमार मिश्र
सुश्री रूचि
श्री अजीत कुमार

संदेश

डॉ. रमा
कार्यवाहक प्राचार्या

किसी भी शिक्षण संस्थान के लिए अपने विद्यार्थियों की रचनात्मकता को सही दिशा और गति देना सबसे अधिक महत्वपूर्ण कार्य होता है. हंसराज कॉलेज अपनी विविध अकादमिक-सांस्कृतिक गतिविधियों के जरिए इस प्रयास में सर्वदा तत्पर रहा है. अपने सभी विभागों के साथ विविध औपचारिक-अनौपचारिक समितियों के माध्यम से वर्ष भर ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन कर विद्यार्थियों की प्रतिभा, रुचि और कलात्मकता को उपयुक्त मंच प्रदान करने की हमारी कोशिश रहती है. इस वर्ष हमने राष्ट्रीय, अंतर्राष्ट्रीय, विश्वविद्यालय, महाविद्यालय स्तर के कई अभूतपूर्व कार्यक्रमों का आयोजन कर इस दिशा में अनेक उपलब्धियाँ हासिल की है.

अपने विद्यार्थियों के सृजनात्मक लेखन को मंच प्रदान करने के ध्येय से प्रति वर्ष अपनी वार्षिक-पत्रिका 'हंस' का प्रकाशन करना हमारी अकादमिक एवं रचनात्मक गतिविधि का अनिवार्य हिस्सा रहा है. कॉलेज जीवन में हंस में अपनी रचनाएं प्रकाशित करने में सफल रहने वाले विद्यार्थी आगे चलकर मीडिया, साहित्य और कला के क्षेत्र में असीम ऊँचाईयाँ प्राप्त करने में सफल रहे हैं. इसमें हम साहित्य के साथ-साथ चित्रकला और दूसरी कलात्मक विधाओं को भी उपयुक्त स्थान देकर अपने विद्यार्थियों की कलात्मक रुचि और प्रतिभा के परिष्कार का प्रयास करते हैं. विद्यार्थियों की पूरे वर्ष भर की गतिविधियों की चित्रात्मक प्रस्तुति भी 'हंस' को आकर्षक और बहुआयामी बनाती है.

इस वर्ष 'हंस' अपने परंपरागत स्वरुप और ढाँचे को बरकरार रखते हुए नए कलेवर एवं तेवर में आपके सामने प्रस्तुत हुआ है. इसके लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले संपादन मंडल के सभी सदस्यों को मैं हृदय से बधाई देती हूँ. आशा करती हूँ कि आप सबको भी उनके ये प्रयास और विद्यार्थियों की रचनात्मक अभिव्यक्तियाँ प्रभावित करेंगी. मैं इस वर्ष के 'हंस' में शामिल सभी विद्यार्थियों की रचनात्मकता की सराहना करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करती हूँ.

Editorial

S. N. Prasad

Convener, Editorial Board

The college magazine is a record. It is a record of the creative talents of the youthful student community that finds its first artistic expressions in its pages. It is a dynamic space that also includes insightful essays, criticisms and thought-proving pieces by the teachers, students, alumni and members of our college community showcasing an interactive dialogue among all of them. No wonder it is a daunting task for an editor!

The new issue of Hans is a testament to the care and attention that is taken by the editorial board to ensure that every talent and all forms creativity are showcased in its pages, be it painting, poetry, story-writing or photography. The idea is to provide a space for budding minds to express their imagination and experience in creative ways. The multilingual nature of the magazine preserves the diversity which is the hallmark of a premium institute.

Kudos to the student editorial team - Neeraj V Murali, Aakash, Suyash Dixit, and team for sifting, sorting and colleting the innumerable submissions that flood the publication's mailbox. Thank you for bringing method in to madness. The support and help of colleagues and friends has been no less valuable.

It was sheer joy to put together the present volume of so many committed and thoughtful people. Hope it delights you too.

Move on – Vikas Prajapati

Education can come from nature too. – Rishika Revo

– Aastha Khursija

The endless pursuit – Vikas Prajapati

हिंदी

संपादक मंडल

- डॉ. राजेश कुमार शर्मा
- डॉ. नृत्य गोपाल शर्मा
- डॉ. विजय कुमार मिश्र

छात्र-संपादक

- आकाश कुमार सिंह
- सुयश दीक्षित

विषयानुक्रमणिका

1. सफलता के सूत्र | डॉ. राजेश कुमार शर्मा | 9
2. समाकालीन मीडिया के दौर में उभरती नारी प्रतिरोधी दृष्टि | डॉ. नीतू शर्मा | 10
3. ग्लोबल समाज की चुनौतियाँ | डॉ. नृत्य गोपाल शर्मा |12
4. साहित्यिक कृतियों का सिनेमाई रूपान्तरण | डॉ. विजय कुमार मिश्र | 14
5. प्राचार्या डॉ. रमा जी से सचिन एवं साक्षी की बातचीत के अंश | 16
6. बालश्रम | मोहम्मद जावेद | 18
7. विश्वगुरू भारत | डॉ. नीतू शर्मा | 18
8. वो जब कभी...,दिल हो गया तेरा पुजारी है..., | बृजमोहन वत्सल | 19
9. असमन्वित, मुक्तक , हाँ मैं रेहड़ी वाला हूँ | सारांश वशिष्ठ | 19
10. उमंग, एक छोटी सी मुस्कान | आकाश कुमार सिंह | 20
11. नहीं इजाजत, आत्मरक्षा भी तो अहिंसा है | अदिति शर्मा | 20
12. कलम की महत्ता | विकास त्रिपाठी | 21
13. आज का इंसान | शिवा इंसा | 21
14. जल संग्रहण | आसिफ खाँन | 21
15. उसके मुख से | शान्तेश्वर दूबे | 21
16. लड़की, आज का स्टैंडिंग सिस्टम | धर्मेन्द्र गुप्ता | 22
17 साल तेरा आना जाना | पूर्णिमा पाण्डेय | 22
18. सोशल साइट | अनुपम प्रियदर्शी | 23
19. ऐसा हूँ मैं मैं कुछ कह नहीं पाया | सुयश दीक्षित | 23
20. मन की आवाज, सिर्फ तुम | साक्षी अहलावत | 24
21. दहेज | योगेश कुमार | 24
22. गज़ल | अमित कुमार | 25
23. इज़हार ए इश्क | विदिशा गुप्ता | 25
24. रहस्य, दिल्ली अद्‌भुत परिदृश्य | नितेश यादव | 25
25. धरती माँ | मुकेश कुमार | 26
26. ज्ञानार्जन के लिये पढ़ें | निखिल पाण्डेय | 26
27. मैं कर सकता हूँ | शिवा इंसा | 27
28. ऐसा न सोचा था | अफसाना | 28
29. आप मरकर जीना सीख जायेंगे | हेमन्त बंसवाल | 31
30. युवा.... कौन है? | यशवन्त प्रताप यादव | 32
31. अंगदान | हर्षित राज श्रीवास्तव | 32
32. खामोश | गुंजन शर्मा | 34
33. विश्व में हिंदी | आकाश कुमार सिंह | 35

"SHOOTING TEAM" - Men & Women

FIRST POSITION IN THE DELHI UNIVERSITY INTER COLLEGE SHOOTING (M) CHAMPIONSHIP 2016-17

Name of the Players / Teachers from lift to Right:
Kashish Mehra, Meenakshi, Prerna Gupta, Ishita Sajwan, Shivangi, Parul, Mourvi, Sandeep, , Harmandeep Singh, Aakash Chaudhary, , Dr. Gaurav , Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon.

"TABLE TENNIS TEAM" -Men

FIRST POSITION IN THE DELHI UNIVERSITY INTER COLLEGE TABLE TENNIS CHAMPIONSHIP 2016-17

Piyush Parsad, Chirag Kapoor, Krishna Yadav, Dr. Gaurav , Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon.

सफलता के सूत्र

– डॉ. राजेश कुमार शर्मा
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पहचान उसके कई अंगो–प्रशासन, शिक्षक, कर्मचारी एवं छात्रों की संकल्प शक्ति से होती है। यह घटक मिलकर संस्थान को ऊँचाईयों तक ले जाते हैं। इस तरह के सामूहिक प्रयास से जहाँ एक ओर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास होता है, दूसरी ओर समाज तथा देश को भी इसका उचित लाभ मिलता है। विद्यार्थी चूँकि देश का भविष्य होता है, इसलिए उसकी सर्वांगीण उन्नति संस्थान का ध्येय होता है। उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थी अपने लक्ष्य के प्रति आज कहीं ज्यादा सतर्क हैं। साथ ही तीव्र गति से बदल रही सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था उन्हें तनावग्रस्त भी बना रही हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ, वैश्वीकरण का बाजार एवं अन्य अनेक आकर्षण आज के युवा को कहीं–न–कहीं भ्रमित भी कर रहें है। आज विद्यार्थी महाविद्यालय में प्रवेश लेते ही प्लेसमेंट के विषय में सोचने लगता है। उसकी आकांक्षाएँ तो ऊँची होती हैं पर इसके अनुपात में परिश्रम की कमी होती है। दरअसल गलती युवाओं की नहीं बल्कि आज के समाज की है जिसने शिक्षा का घोर बाजारीकरण कर दिया है। हमारी संस्कृति में शिक्षा श्रेष्ठ मनुष्य बनाने का माध्यम मानी जाती रही है, यही कारण है कि स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद, महात्मा हंसराज, महात्मा गाँधी, जैसे मनीषी समाज को मिलते हैं।

'हंसराज महाविद्यालय' के विद्यार्थी होने के नाते आप का दायित्व और अधिक बढ़ जाता है। यहाँ से निकल कर आप कामयाब व्यक्ति तो बनें, पर इससे अधिक देश व समाज के अच्छे नागरिक कैसे बनें, इस लक्ष्य पर भी आपका ध्यान रहना चाहिए। यह अतिसाधारण बात है कि परिश्रम जितना अधिक किया जाये लक्ष्य उतना ही सुंदर मिलता है। आवश्यकता इस बात की है, आप अपने परिश्रम के प्रति कितने ईमानदार एवं लक्ष्य के प्रति कितने प्रतिबद्ध हैं।

कई बार यह सुना जाता है कि मैंने मेहनत बहुत की थी पर अपेक्षित परिणाम नहीं प्राप्त हुआ, ऐसे में कई युवा अपनी किस्मत को कोसने लगते हैं। कई एक अवसादग्रस्त हो जाते हैं, यहाँ तक कि आत्महत्या जैसे घृणित कृत्य तक के विषय में सोचने लगते हैं।

तनिक रुक कर विचार करें, कि हो सकता है, मेरी मेहनत में कोई कमी रही हो और मुझे इस बार अधिक उत्साह से लक्ष्य प्राप्ति का प्रयत्न करना है। फिर देखिये आप का मन भी हल्का होगा तथा आप के भीतर नवीन ऊर्जा का संचार भी होगा। आप कोई भी लक्ष्य अपने लिए निर्धारित करते समय यदि इन कुछ बातों का ध्यान रखेंगे तो निश्चित है कि निराश तथा असफल नहीं होंगे।

युवावस्था जीवन की वसंत मानी जाती है। 15–16 से 25–26 तक की उम्र में हमारे मन एवं शरीर में अपार ऊर्जा संचरित करती है। कुछ भी कर गुजरने का उत्साह मन में हिलोरें लेता रहता है। इस ऊर्जा तथा उत्साह को यदि उचित दिशा मिल जाये तो अपना जीवन तो सार्थक किया ही जा सकता है, समाज में सकारात्मक परिवर्तन भी लाया जा सकता है। स्वामी विवेकानंद, सरदार भगतसिंह, चंद्रशेखर आजाद, रानी लक्ष्मीबाई जैसे महामानव इसी उम्र में अपने किये गये कार्यों से इतिहास में अमर हो गये। यदि हम उतना ना भी कर सकें तो अपने परिवार और समाज के लिए कुछ प्रेरणादायक करने का संकल्प लें और उस पर अमल करने का भी प्रयत्न करें। फिर निश्चित है कि यदि ठान लिया जाए तो कोई भी लक्ष्य हासिल किया जा सकता है।

कई बार आप दृढ़ संकल्प से कर्त्तव्य पथ पर बढ़ते हैं, पर अपेक्षित परिणाम नहीं मिलता तो क्या आप निराश हो कर बैठ जायेंगे? नहीं,

आपको ऐसा हरगिज नहीं करना चाहिए। बल्कि अबतक की गई कोशिश की समीक्षा करनी चाहिए। कार्य एवं भावनाओं की एकता सुनिश्चित करते हुए लक्ष्य साधना करनी चाहिए और हाँ, आशा का दामन अपने हाथ से कभी छूटने ना दें। क्योंकि आपने बचपन से ही सुना होगा कि– 'उम्मीद पर ही दुनिया कायम है, पर उम्मीद के साथ आवश्यक है कि लक्ष्य एवं उसके लिए किये जा रहे परिश्रम में एकता हो। ऐसा नहीं कि कर कुछ और रहें है और आशा कुछ और पाने की करते हैं। स्वेट मार्डेन ने अपनी पुस्तक उन्नति कैसे करें? में कहा है– "संसार में ऐसे अनेक व्यक्ति हैं जो अपनी भावनाओं को अपने प्रयत्नों के अनुरूप नहीं बना पाते इसलिए निर्बल असफल और शक्तिहीन बने रहते हैं। वे कभी भी उचित मार्ग पर नहीं चल पाते। वे ऊपर से यत्न किसी वस्तु के लिए करते हैं और उनके मन में आशा किसी अन्य वस्तु की लगी रहती है। यानी कोई एक लक्ष्य नहीं होता। ऐसे व्यक्तियों को सफलता अथवा विजय का हर्षोल्लास कभी प्राप्त नहीं होता।"

विश्वास जीवन की अनमोल पूँजी है, इसे कभी नष्ट ना होने दें। कई बार विभिन्न कारणों से हम हीन भावना से ग्रस्त हो जाते हैं जैसे मेरा रंग ऐसा है, मैं गरीब हूँ, मैं पढ़ने में कमजोर हूँ, मेरा घर छोटा है, मेरे कपड़े ब्रांडेड नहीं हैं, मैं बेरोजगार हूँ,

मैं अमुक जाति अथवा वर्ग, क्षेत्र आदि से हूँ जैसी अनेक कुंठाएँ आज के लोगों, विशेषकर युवाओं को खतरनाक तरीके से ग्रस रहीं है। इसकी सबसे बड़ी वजह खुद की क्षमता में विश्वास की कमी है। ऐसे में ध्यान देने की बात यह है कि परमात्मा हर व्यक्ति को विशेष क्षमताओं से युक्त रचता है। हर किसी में कुछ ऐसा विशिष्ट होता है जो दूसरे में नहीं मिलता कोई अच्छा लिखता है, कोई अच्छा चित्र बनाता है, कोई अच्छा खाना बनाता है, कोई अच्छी सिलाई करता है, कोई अच्छा बोलता है, कोई अच्छा गाता है, कोई अच्छा खेलता है तो कोई अच्छा अभिनय करता है आदि–आदि। वह अच्छा और विशिष्ट आप में क्या है? उसे तलाशें, पूरे बल से उस विशिष्टता को सर्वोच्च बनाने का प्रयत्न करें। न्यूटन, आइन्सटाइन, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम, सचिन तेंदुलकर या फिर नरेंद्र मोदी इन सबने ऐसा कभी नहीं सोचा होगा कि अपने क्षेत्रों के ये महानायक बनेंगे। बस एक राह चुनी, दृढ़ निश्चय किया, स्वयं की क्षमताओं में भरोसा रखो, चलते रहें और परिणाम, इससे हम सब वाकिफ हैं। अपने भाग्य पर रोने के बजाय अपने कर्मों पर विश्वास रखें, समय का सदुपयोग करें। यह भी ध्यान रखें कि आत्मविश्वास ऊँचा हो पर अति आत्मविश्वास ना हों। क्योंकि अति आत्मविश्वास कई बार विवेक को चोट पहुँचाता है। करणीय–अकरणीय को ध्यान में रख कर यदि आगे बढ़े तो सफलता स्वयं आप को वरेगी। उदाहरणतः यह पंक्तियाँ आपने कई बार कही और सुनी होंगी– ''खुदही को कर बुलंद इतना कि हर तकदीर से पहले खुदा बंदे से खुद पूछे बता तेरी रजा क्या है।''

आप की सफलता में आपके परिवार के साथ–साथ महाविद्यालय की सफलता भी निहित है। अतः जीवन में जो कुछ भी करें वह महाविद्यालय की संस्कृति को भी ध्यान में रख कर करें। दूसरों के प्रति आपका सद्व्यवहार, अपने जीवन में मेहनत, लगन, ईमानदारी, पर्यावरण के प्रति संवेदना, कर्त्तव्यनिष्ठा जैसे अनेक मूल्य हंसराज संस्कृति हमें सिखाती है। इन मूल्यों के प्रति हम जितना जागरुक होंगे महाविद्यालय उतनी ही ऊँचाईयाँ छुएगा।

■■■

समकालीन मीडिया के दौर में उभरती नारी प्रतिरोधी दृष्टि

– डॉ. नीतू शर्मा
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

आधुनिक प्रगति की दौड़ में आसमान तक लम्बी उड़ान भरने वाली नारी जहाँ एक ओर आज अपनी तीक्ष्ण बुद्धि, व्यवहार कुशलता, प्रबन्ध व्यवस्था के बल पर कला, विज्ञान, शिक्षा, उद्योग आदि सभी क्षेत्रों में लोहा मनवा रही है, वहीं दूसरी ओर प्रतिदिन होने वाली आपराधिक घटनाओं में सबसे अधिक प्रताड़ित होने वाले दंश का देश भी इसी नारी को भोगना पड़ रहा है। निरंतर बढ़ते जा रहे अमानुषिक अपराध, हत्या, व्यभिचार, भ्रूण हत्या, आत्महत्या, अपहरण जैसी घटनाएँ समाचार पत्रों के प्रथम पृष्ठ की प्रमुख सूचना के रूप में अथवा दूरदर्शन द्वारा प्रयोग की जाने वाली भाषा चटपटी–चाट की भाँति परोसी जा रही है। इसके अतिरिक्त निजी न्यूज चैनल अलग–अलग मदारी के अलग–अलग तमाशे की तरह महिलाओं के साथ होने वाली घटनाओं को एक दूसरे चैनल की प्रसिद्धि पाने की होड़ में तोड़ मरोड़ करते हुए दिनभर इस प्रकार प्रस्तुत करते हैं जैसे महिला कोई एक माटी की गुड़िया अथवा कठपुतली मात्र हो। आज बहुत सारे चैनल अनैतिक घटनाओं को ऐतिहासिक घटनाओं की भाँति दिखाना बिल्कुल नहीं भूलते और इसके बाद भी यदि कोई कसर बची रहती है तो फिर रात्रि 10 बजे के बाद सनसनी क्राइम रिपोर्टर डायल 100 जैसे सीरियलों में और डिटेक्टिव रूप में वे इस तरह के अपराध की एक–एक बारीकियों से कुछ इस प्रकार परिचय करवाते हैं, ताकि अपराधी प्रवृत्ति का व्यक्ति ही नहीं अपितु एक साधारण व्यक्ति भी सब कुछ जान जाते हैं और फिर आपराधिक घटनाएँ ज्यादा घटती जाती हैं। दूध पीती बच्ची से लेकर युवती, महिलाएँ, विधवा या वृद्धा कोई भी हो उनमें हमारे समाज के अपराध करने वाले कन्या, बहन, मौसी, दीदी, बुआ, माँ, दादी, चाची आदि के आत्मीय और सम्मानजनक रिश्तों को भी नहीं समझ पाते और अपराध कर बैठते हैं।

वर्तमान में भारतभूमि तब अधिक शर्म सार होती है, जब जिन्दा लोगों को काटकर उनके अंग बेचने का दुष्कर्म किया जाता है। यहाँ यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि ऐश्वर्या और

अभिषेक की जासूसी करने वाला कैमरा निठारी 'नोएडा' के पुलिस वाले जहाँ दो साल से बच्चे गुमशुदा हो रहे थे, वहाँ क्यों समय पर नहीं पहुँचते अपितु तब पहुँचते हैं जब सब कुछ समाप्त हो जाता होता है और फिर उसे आनंद के लिए 24 घंटे दिखाता है जैसे कि हमारी चाय, नाश्ता, खाना वगैरह सब कुछ यही है और यह हम भी भली भाँति जानते हैं कि परिणाम देखने की उत्सुकता के कारण समय और बिजली की भी बर्बादी कर देते हैं? और बाद में दोनों को लेकर परेशान होते रहते हैं।

हमारे देश का संचार मंत्री, समाजशास्त्री, कानून निर्माताओं का ध्यान व्यावहारिक स्तर पर इन वर्तमान विषयों पर क्यों नहीं जाता। यह है न्यूज चैनल की वर्तमान दशा।

समकालीन समय में हम यदि निजी चैनलों पर दिखाए जाने वाले सीरियलों के बारे में देखें तो घर परिवार में अपनी पहचान एवं परिभाषा के दायरे से बाहर षड्यन्त्र और उलझन में डालने के कारण सिखाने वाले बन गए हैं, विवाह पूर्व सम्बन्ध, विवाहेतर सम्बन्ध, एक पति, दूसरा पति, एक पत्नी, दूसरी पत्नी, एक दूसरे को नीचा दिखाने की चाल चलती महिलाएँ, घरों में उन्मुक्त पार्टियों में शराब का पीना, वहाँ होने वाली घटनाएँ जिनका कारण? केवल अट्रैक्शन का केन्द्र बिन्दु महिला।

भारतीय घर के अन्दर मानवीय सम्बंधों में बंधी प्रेम और त्याग का पाठ पढ़ाने वाली धुरी को शतरंज की चाल जैसी कुचालें चलने वाली अवगुणों से युक्त ऐसी स्त्रियाँ नारी पात्रों के रूप में दिखाई देती हैं जो लोगों को किसी भी प्रकार के दुष्कर्म के लिए तैयार करती हैं। जिनके कारण आत्महत्या, गर्भपात, एच.आई.वी.एड्स का होना, अवैध प्रसव, मारना जैसे भयंकर अपराध होते हैं क्योंकि खाओ, पीओ और मौज करो, छीनो–झपटो और उच्चवर्गीय जीवन जीने की लालसा ने व्यक्ति में इतनी हताशा, निराशा, अपमान, कुण्ठा, संत्रास भर दिया है कि जिससे एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण हो रहा है जो चरित्र नहीं दौलत और शोहरत के लिए कोई भी काम कर सकता है जिसके कारण कभी–कभी अन्जाने में वह अपराधों को खुला आमंत्रण दे रहा है।

सन् 2007 में किंग फिशर ने मॉडल गर्ल का एक ऐसा कलेण्डर लॉंच किया जिसे किसी भारतीय सांस्कृतिक परिवार की दीवार पर स्थान नहीं दिया जा सकता। वह सीधे तौर पर हमारी नयी पीढ़ी की स्वस्थ मानसिकता पर दुर्भावनाओं का प्रदूषण बढ़ाने का प्रयास है। ऐसे ही प्रभावों से हमारा युवा, हमारी परंपरा और संस्कृति से कटता भी जा रहा है।

कितनी विडम्बनापूर्ण स्थिति है कि एड्स जैसे रोगों की आड़ में ऐसे साधनों का प्रचार हो रहा है जो हमारी संस्कृति के लिए घातक हैं। गुजरात और भोपाल में दुर्गापूजा के समय होने वाले गर्बामण्डपों में लगने वाले स्टॉल इसका प्रमाण माने जा सकते हैं इससे तो बेहतर यही होगा कि भारतीय संस्कृति में 18 वर्ष के होते ही लड़की और लड़के के लिए निर्धारित कर दिया जाए कि यह तुम्हारा ब्वॉय फ्रेंड है, यह तुम्हारी गर्लफ्रेंड है।

वास्तव में आज व्यावसायिकता की दौड़ में कोई चैनल यह मिसाल कायम नहीं कर पा रहा है कि वह महिलाओं का कितना बड़ा हितैषी है। हम संवेदनहीनता की चरम पराकाष्ठा पर पहुँच चुके हैं, जब 31 दिसम्बर को एक ओर निठारी काण्ड को दिखाया जा रहा था तो दूसरी ओर उन्मुक्त मल्लिका सेहरावत कुछ अजीबोगरीब वेशभूषा के साथ अपने आपको प्रदर्शित करती हुई नव वर्ष के आगमन का स्वागत कर रही थीं। संस्कृति, राष्ट्र, समाज और परिवार के प्रति कर्तव्यहीनता से दूर नारी का यह तितली स्वरूप हमें कहाँ तक ले जा सकता है यह विचारणीय है।

आज के परिवेश में गीत संगीत भी शक्ति का नहीं ऐन्द्रिय उत्तेजना को बढ़ाने के साधन बनते जा रहे हैं। भारतीय परम्परा में विशेष उत्सव या मेले की नौटंकी में गाये जाने वाले गीत ही फेमस होकर दिनभर किसी न किसी चैनल पर चलते रहते हैं, उनके इस कार्य के प्रति कोई विरोधी आवाज नहीं उठती जबकि भारतीय परम्परा में इस सन्दर्भ में तीसरी कसम, गाइड की अदाकारा वहीदा रहमान की वेशभूषा और शालीनता की आज भी मिसाल प्रस्तुत की जाती है परन्तु आज की नायिकाएँ भी खलनायिका के कैबेरे जैसी ड्रेस डालने की स्वतन्त्रता और उसके अधिकार की कानूनी व्याख्या करते हुए हमें एक बार फिर भारतीय परिवार के आदर्शों को नये रूप में सही कैसे बनाया जा सकता है इसका संदेश देती हैं। अन्ततः अपने भारतीय स्वरूप की पहचान अगर हमें विश्व पटल पर जीवन्त बनाए रखनी है तो उसकी चिंता आज और अभी से करनी होगी। वरना हम ढूँढते रह जायेंगे और आदर्श भारत की खोज में यही कहते रह जायेंगे 'हम कहते हिन्दुस्तान जिसे वह गुमा कहाँ बाजार में।'

■■■

ग्लोबल समाज की चुनौतियां

– डॉ.नृत्य गोपाल शर्मा
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

विज्ञान, सूचना तकनीकी, अर्थतंत्र, सांस्कृतिक आदान प्रदान, खेल कूद की दुनिया, राजनीतिक चिंतन धारा आदि के क्षेत्र में सकारात्मक विकास से पूरी दुनिया की नजदीकी बढी है । आतंकवाद का वैश्विक भय, ग्लोबल वार्मिंग, प्रकृति दोहन के दुष्परिणाम, अनियंत्रित गैस उत्सर्जन, मानव सभ्यता को ध्वस्त कर देने की क्षमता वाले रासायनिक हथियार, गोला बारूद का व्यापक कारोबार, हथियारों के विकास की वैश्विक होड के बीच मानव जीवन को सुरक्षित रखने की चिंता ने भी विश्व समुदाय को समीप आने के लिए बाध्य किया है । जलवायु परिवर्तन आज के समाज की बडी चिंता हो गयी है । इस पर विचार करने के लिए समय समय पर वैश्विक चिंतन शिविर आयोजित होते रहते हैं । कौन जाने भविष्य में इनमें और प्रगति की आवश्यकता हो ? इस आशा निराशा के बीच एक ग्लोबल समाज विकसित हो रहा है।

शिक्षा के क्षेत्र में भी नव निर्मित ग्लोबल समाज का दबाव स्पष्ट दिखाई पड़ने लगा है। विद्यार्थियों का एक दूसरे देश में पढने या शोध करने जाने का क्रम तेजी से बढा है। समाज की प्रत्येक वस्तु व्यावसायिक पाठ्यक्रम का रूप धारण कर चुकी है । निर्जीव और सजीव सभी बाजार की वस्तु बन गये हैं । लिहाजा सभी को बाजारवाद की दृष्टि से पढा जा रहा है । अर्थशास्त्र और वाणिज्य की शिक्षा का तीव्र विकास इस प्रक्रिया की पुष्टि करता प्रतीत होता है। विज्ञान तथा गणित आदि के क्षेत्र में जिस तीव्रता से पठन पाठन के नये क्षेत्रों का विकास हो रहा है वह उत्साह वर्द्धक है । इस क्रम में मानविकी के विषयों के सामने चुनौतियाँ बढती जा रही हैं । मानव अंग से लेकर मानव तक की तस्करी का कारोबार मानविकी के विद्यार्थियों को नए ढंग से सोचने समझने और पढने के लिए विवश कर रहा है। बदलते सामाजिक परिदृश्य में मानव के व्यवहार में तेजी से परिवर्तन हो रहा है मानविकी वर्ग के सामने इसे समझने की बडी चुनौती है। व्यावसायिक शिक्षा का दबाव एक ओर है तो सामाजिक तानेबाने का चिंतन दूसरी ओर। विभिन्न देशों में विद्यार्थियों पर हो रहे जानलेवा आक्रमण शिक्षा के नए संसार पर सोचने के लिए बाध्य कर रहे हैं ।

कारोबार की दुनिया नये समाज का विकास कर रही है किंतु यहाँ भी समस्या शिक्षा जगत जैसी दिखाई पडती है । समय समय पर विभिन्न देशों से ये स्वर सुनाई पडते हैं कि स्थानीय व्यवसाय को बढावा देने के लिए दूसरे देशों से आने वाले व्यवसायियों या व्यवसाय क्षेत्रों को हतोत्साहित करने के आदेश पारित कर दिए हैं । अन्यान्य क्षेत्र भी हैं जिनसे ग्लोबल सामाजिक ढांचा विकसित हो रहा है । विज्ञान की प्रगति तथा धर्म के बीच संबंध पर टिप्पणी करते हुए प्रसिद्ध भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग ने कहा था कि –''विज्ञान और धर्म के बीच एक बुनियादी फर्क है, जो अधिकार पर आधारित है । विज्ञान जीतेगा क्योंकि यह काम देता है।'' अधिकार की बुनियाद पर खडे नए समाज को पढना और दिलचस्प होता जा रहा है ।

ग्लोबल होते समाज में नया सामाजिक ताना बाना विकसित हो रहा है। मानव संबंधों के नए मानक विकसित हो रहे हैं। मानव समाज समय समय पर अपने लिए व्यवस्था विकसित करता रहा है । आदि मानव कंदराओं को घर , पत्तों को वस्त्र, पत्थरों को हथियार बना लेता था तो आगे आने वाले समाज ने भी समूह सृजनकर नयी व्यवस्था को अपनाया । वर्ण व्यवस्था, जाति व्यवस्था इसी तरह का व्यवस्थापन था । पुरानी सामाजिक व्यवस्थाओं में अनेक लोगों को खूबियाँ और खामियाँ दृष्टिगत हो सकती हैं । पर, यह देखना भी दिलचस्प है कि समूह में रहना हमारी प्राथमिकता में आज भी है । हॉं, इसके स्वरूप में जो परिवर्तन आया है उसके संकेत कुछ भिन्न हैं । अधिकारों के लिए क्रांति दल या समूह भावना बलवती रहती है जबकि वैयक्तिक स्वार्थ के सम्मुख यह भावना एक झटके में दम तोड देती है ।

सामाजिक संरचना में कोई बुनियादी अंतर तो आया है ? संबंधों को बचाने के लिए अंतर्राष्ट्रीय दिवस मनाने की आवश्यकता कुछ तो संकेत दे रही है ? महिला अधिकारों के लिए 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस– 8 मार्च', मातृ दिवस–14 मई, पिता दिवस–18 जून, बेटी दिवस–24 सितंबर, अभिभावक दिवस– 1 जून आदि ग्लोबल सामाजिक तानेबाने की नयी तस्वीर बना रहे हैं । अलग अलग राष्ट्र भी संबंधों को बचाने के लिए मुहिम चला रहे हैं । भारत में ही बाल दिवस–14 नवंबर, राष्ट्रीय बालिका दिवस–24 जनवरी अलग से मनाए जाते हैं । वृद्धों की सम्मान सुरक्षा के लिए अंतर्राष्ट्रीय वृद्ध दिवस 8 अक्टूबर को मनाया जाता है । वृद्धाश्रमों का तेजी से विस्तार कुछ सामाजिक संकेत तो देता है । 1 मई को मनाया जाने वाला मजदूर दिवस सामाजिक

संरचना के ढांचे को एक खास अंदाज में देखने को प्रेरित करता है ।

संयुक्त राष्ट्र की ओर से 136 विशेश दिवस मनाए जाने की सूची जारी की गयी है । याद रखना होगा कि इसमें वे नाम शामिल नहीं हैं जो विश्व के अलग अलग भागों में देशकाल के अनुरूप मनाए जाते हैं । यानी राष्ट्रीय स्तर पर ऐसे अलग अलग अवसर और दिन निश्चित हैं।

मानव जीवन से जुडे अनेक ऐसे दिवस भी हैं जो मानव सभ्यता और समाज को सीधे प्रभावित करते हैं । जैसे स्वास्थ्य की दृष्टि से विश्व स्वास्थ्य दिवस –7 अप्रेल,तथा 24 अक्टूबर को मनाए जाने वाला पोलियो दिवस आदि शामिल हैं । अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण दिवस –5 जून, अंतर्राष्ट्रीय ओजोन परत दिवस 16 सितंबर तथा 22 मार्च को मनाए जाने वाला जल दिवस इस ओर संकेत कर रहे हैं कि वर्तमान समय में ग्लोबल समाज बन रहा है तो इसकी समस्याएं भी ग्लोबल हैं । निश्चित रूप से यह सामाजिक तानाबाना भी ग्लोबल है ।

नस्लभेद, रंगभेद, प्रवासियों के प्रति द्वेशपूर्ण व्यवहार, धार्मिक कट्टरता, भाषायी कट्टरपन ग्लोबल समाज के सम्मुख बड़ी चुनौती हैं । महात्मा गांधी, मार्टिन लूथर किंग, नेल्सन मंडेला आदि ने इसके प्रति लंबी लड़ाई लड़ी है । फिर भी यह सोचना होगा कि क्या यह लड़ाई समाप्त हो गयी है? या नये समाज में इस संघर्ष को और अधिक गति देने की आवश्यकता है? अफ्रीकी–अमेरिकी नागरिक अधिकार आंदोलन (1955–1968) मूलतः नस्लभेद का आंदोलन था । सन् 1966 से 1975 तक चला अश्वेत शक्ति आंदोलन भी इसकी महत्वपूर्ण कड़ी था । डॉ.मार्टिन लूथर किंग , जिन्हें अमेरिका का गांधी कहा जाता है, तथा दक्षिण अफ्रीका के पूर्व राष्ट्रपति नेल्सन मंडेला इस नयी समाज व्यवस्था के अगुवा बने । ग्लोबल समाज के भारतीय संस्करण पर भी विचार करना होगा । वर्ग संघर्ष, धर्मातिरेक,जातीय भावनाओं का उद्दाम आवेग भारतीय समाज में नये समाज का गठन कर रहे हैं । धर्मांतरण, लव जिहाद, अतिराष्ट्रवादिता के स्वरों के बीच समाज का नया आकार बना रहे हैं। सामूहिक और वैयक्तिक जीवन शैली के नये ढांचे आकार ले रहे हैं । समाज के नव निर्मित ढांचे के बीच हमें नऐ भारत के दो निर्माताओं को अवश्य याद कर लेना चाहिए । एक महात्मा गांधी और दूसरे डा. भीमराव अंबेडकर । दोनों वकील । दोनों का रहन सहन एकदम भिन्न । एक धोती लपेटे तो दूसरा सुंदर कोट पैंट टाई पहने । चाहते तो दोनों एक ही वेश भूषा अपना सकते थे । दोनों का ध्येय राष्ट्र उत्थान था । पर, एक त्याग का पाठ पढा रहा था और दूसरा आत्म सम्मान का । वर्तमान समाज व्यवस्था में इन दोनों के समावेश और समन्वय की आवश्यकता है।

भारतीय समाज व्यवस्था में जीवन शैली और आचरण की प्रधानता रही है । 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है । यह भारतीय जीवन शैली की ग्लोबल स्वीकृति भी है । जीवन की चार महत्वपूर्ण क्रियाओं– आहार, निद्रा, भय एवं मैथुन को तो हम मानव और पशु में समान स्वीकृत करते हैं । 'आहारनिद्राभयमैथुनंच समान एतत पशुर्भिनराणाम् ।" भारतीय जीवन शैली में पुरुषार्थ चतुष्टय– धर्म, अर्थ , काम, मोक्ष– की विशिष्टता स्वीकार की गयी है । इस विशिष्टता को कैसे प्राप्त किया जाए? जीवन को व्यवस्थित करके । जीवन की व्यवस्था क्या है– ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम के अनुरूप जीवन शैली ।

ऐसा लगता है जैसे भौतिक सुखों की लालसा ने हमें व्यक्तिगत स्वार्थ की ओर धकेल दिया है । यह भी कहा जा सकता है कि जब भौतिक सुख थे ही नहीं तो भोग कैसे करते? जिन्हें ये सुख जब भी उपलब्ध हुए उन्होंने इसे भोगा । फिर आज इसके भोग में क्या समस्या है? सचमुच समस्या कुछ नहीं है। पर, तनिक रुककर यहाँ सोचना होगा कि शिवाजी और महाराणा प्रताप के पास भौतिक सुख नहीं थे? निश्चित रूप में थे । पर, अधीनता आत्मचिंतन की थी। उस समय भी भौतिक सुख की चाह में जिन्होंने भी अपने आत्म सम्मान को परे रखा वे जल्दी कालकवलित हो गये ।

ग्लोबल समाज की नयी समस्याओं के समाधान का एक रास्ता भारतीय जीवन शैली में से भी निकलता है । व्यष्टि पर समिष्टि की प्रधानता । अधिकार प्रधानता के साथ कर्तव्यनिष्ठा का समन्वय । गहन चिंतन में हास्य का सहयोग । हास्य के बिना जीवन तकनीकी बनकर रह जाएगा । सकारात्मक सोच के बिना व्यक्ति विकलांग बन जाएगा । भौतिक विज्ञानी स्टीफन हॉकिंग एक बार पुनः याद आ रहे हैं–" अगर आप विकलांग हैं या अपंग हैं तो इसमें आपकी कोई गलती नहीं है और साथ ही दुनिया को दोष देने या अपने ऊपर किसी दया की उम्मीद करना सही नहीं है । बस आपके भीतर सकारात्मक विचार होने चाहिए और स्थिति के अनुसार जितना हो सके अपना अच्छा योगदान देना चाहिए ।"

■■■

साहित्यिक कृतियों का सिनेमाई रूपांतरण

– डॉ. विजय कुमार मिश्र
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

साहित्यिक रचनाओं का सिनेमाई रूपांतरण कोई नई बात नहीं है। सवाक् फिल्मों के आरंभ से ही यूरोप और अमेरिका में शेक्सपीयर, दोस्तोवस्की, गोर्की, टॉल्सटॉय, चेखव आदि कई महान लेखकों की कृतियों पर फिल्में बनी हैं। भारत में भी रवीन्द्रनाथ ठाकुर, प्रेमचन्द, शरतचन्द, रेणु, साहनी, मोहन राकेश, धर्मवीर भारती, आर.के.नारायण आदि अनेक कथाकारों की रचनाओं पर सफल–असफल फिल्में बन चुकी हैं और आज भी बन रही हैं। सत्यजीत राय, विमल रॉय, मृणाल सेन, श्याम बेनेगल, गोविन्द निहलानी, बासु भट्टाचार्य, बासु चटर्जी आदि कई प्रख्यात फिल्मकारों ने फिल्म निर्माण के लिए प्रसिद्ध साहित्यिक कृतियों को चुना।

साहित्यिक कृतियों पर बनी फिल्मों के संबंध में अनेक निर्देशकों और फिल्म जगत से जुड़े लोगों ने अपनी राय व्यक्त की है। विशाल भारद्वाज का मानना है कि "समझदार निर्देशक को साहित्यिक कृति से बहुत मदद मिलती है, लेकिन कोई कृति के कंटेंट को नहीं समझ पाया, तो फिर उस फिल्म को हेंडल कर पाना काफी कठिन हो जाता है।" यूँ रवीन्द्रनाथ टैगोर, बंकिम चन्द्र, प्रेमचंद, विमल मित्र, आर.के. नारायण, रेणु, निर्मल वर्मा, कमलेश्वर, विजयदान देथा, धर्मवीर भारती, महाश्वेता देवी और खुशवंत सिंह जैसे अनेकानेक साहित्यकारों की कृतियों पर चर्चित फिल्में बन चुकी हैं। साहित्य को परदे पर उतारने की बात नई तो नहीं है, लेकिन उनमें से कुछ को पर्याप्त सफलता मिली है तो कई बुरी तरह से विफल रही हैं। प्रेमचंद की कथा–रचनाओं के साथ भी ऐसा ही हुआ है।

साहित्यिक कृतियों और सिनेमा के संबंध पर विचार करते हुए हम पाते हैं कि "पढ़ने, लिखने और सुनने के भेद से कला के आस्वाद में अंतर आ जाता है। साहित्यिक कृति में किसी बिम्ब को या संवाद को पढ़ना और बिम्ब को कथा–प्रवाह के साथ दृश्य रूप में देखना अलग–अलग प्रकार का अनुभव है। फिल्म में प्रायः बिम्ब किसी संगीत के अंश से जुड़ जाता है तब उसका आस्वाद और तरह से सम्भव होता है। एक ही संरचना माध्यमों के भेद से अलग–अलग तरह का प्रभाव पैदा होता है।''

फणीश्वरनाथ रेणु का कहना है कि "हर अच्छी साहित्यिक कृति अपने आप में फिल्म होती है। फिल्म की सभी संभावनाएँ लिए हुए। होता यह है कि कभी–कभी ही दृष्टिसंपन्न साहित्यिक संवेदना से सुपरिचित फिल्मकार किसी कहानी या अन्य विधा की कृति को प्रस्तुति के लिए चुनता है। फिर वह अपनी दृष्टि के अनुसार उन सम्भावनाओं को मूर्त करने में भी सफल हो जाता है। जबकि दूसरी ओर जहाँ व्यावसायिक आग्रह से ही रचना फिल्मांकन के लिए चुनी जाती है वहाँ हर तरह से रचना की मूल संवेदना ही क्षतिग्रस्त होती है।"

साहित्यिक कृतियों का सिनेमाई रूपांतरण साहित्य को नई संचारात्मक और संप्रेषण शक्ति प्रदान कर देता है। निरक्षर लोग और गैरभाषाई लोगों तक भी साहित्य की पहुँच इसके फलस्वरूप हो जाती है। हम पाते हैं कि साहित्य संरचना का मूलाधार भाषा है जबकि यही साहित्य जब फिल्मी पर्दे पर आता है तो दृश्य उसके केन्द्र में होता है। भाषाओं का भूगोल सीमित और दृश्यों का व्यापक होता है। जरूरी नहीं कि दृश्य हमेशा असीमित भौगोलिक विस्तार को संबोधित करने की क्षमता रखते हैं। हिन्दी साहित्य की महान कृतियों का फिल्म विधा में रूपांतरण इनकी लोकप्रियता और पहुँच को सुनिश्चित करता है। 'तीसरी कसम' फणीश्वरनाथ रेणु की महत्वपूर्ण कहानी है जिस पर बनी फिल्म आम लोगों के लिए भी सहज संप्रेष्य हो उठी। उसमें गानों ने अतिरिक्त ऊर्जा का समावेश कर दिया और उसकी व्यापकता को सुनिश्चित कर दिया। अभिनय, संगीत, दृश्यांकन ने मिलकर इस कहानी का कायाकल्प कर दिया। कहानी में अनेक मार्मिक स्थल स्टेशन पर हीरामन, हीराबाई का बिछोह आदि भारतीय समाज के स्मृति पटल पर सदैव के लिए अंकित हो गए। इसी तरह से अनेक ऐसी फिल्में बनी हैं जिन्होंने सफलता के कीर्तिमान स्थापित किए हैं।

साहित्य हर युग में सुन्दर दुनिया की निर्मिति का प्रयास करता रहा है। ऐसी दुनिया जिसमें मानवीय संवेदनाओं का सहज विस्तार हो और आपसी सौहार्द्र एवं सद्भाव का वातावरण निर्मित हो सके। इस दिशा में अनेक साहित्यकार जिसमें कलम के सिपाही मुंशी प्रेमचन्द भी शामिल हैं अपनी कालजयी कृतियों के सहारे निरंतर प्रयास करते रहे। युग विशेष में इन साहित्यिक कृतियों का प्रभाव निर्विवाद है परन्तु बदलते युग के साथ तब जबकि तकनीकी विकास और सोच ने पूरी दुनिया के संवेदनात्मक विस्तार के माध्यमों को बदल कर रख दिया है, संचार के अन्य माध्यमों के साथ–साथ फिल्मों के प्रभाव और विकास की नयी स्थिति पैदा हुई है, इन कृतियों को आम लोगों तक पहुँचाने के संबंध में नए सिरे से काम करने की जरूरत सामने आयी है। कम होती पठनीयता और फिल्मों के बढ़ते प्रभाव के बीच अनेक उत्साही निर्देशकों ने साहित्यिक कृतियों के सिनेमाई रूपांतरण की दिशा में बढ़–चढ़कर काम करना शुरू किया। यही कारण है कि अन्य भारतीय या विदेशी भाषाओं की तो छोड़िये केवल हिन्दी की

दर्जनों साहित्यिक कृतियों का सिनेमाई रूपांतरण और प्रदर्शन किया जा चुका है। भीष्म साहनी का 'तमस', मन्नू भण्डारी का 'यही सच है' (रजनीगंधा), धर्मवीर भारती का 'सूरज का सातवाँ घोड़ा', फणीश्वरनाथ 'रेणु' का 'मारे गये गुलफाम उर्फ तीसरी कसम', राजेन्द्र यादव का 'सारा आकाश' आदि के साथ–साथ प्रेमचन्द की अनेक साहित्यिक कृतियों का विभिन्न भारतीय भाषाओं में सिनेमाई रूपांतरण स्मरणीय रहा है। इन साहित्यिक कृतियों के सिनेमाई रूपांतरण का ही नतीजा था कि इन कृतियों के पात्र और इनकी कथा अधिकाधिक लोगों तक पहुँचने में समर्थ हो सकी।

उपन्यास और कहानियों के फिल्मांतरण पर विचार व्यक्त करते हुए हरीश कुमार लिखते हैं–"उपन्यासों की अपेक्षा कहानियों पर भी ये प्रयोग सफलतापूर्वक हो रहे हैं। 'माया दर्पण', 'तीसरी कसम' से लेकर 'उसकी रोटी' और 'शतरंज के खिलाड़ी' जैसी कहानियों पर सफल फिल्में बनी हैं। इन कहानियों पर निर्मित फिल्में देखने से ज्ञात होता है कि सिनेमा में भी साहित्यिक सिनेमा जैसी धारा उभर रही है। जिसमें हिन्दी कहानी का अपना महत्व है। हालाँकि कहानी के एक संक्षिप्त रूप को फिल्मांकन के माध्यम से मूल कथ्य में बनाए रखते हुए विस्तृत आकार देना दुरूह कार्य है लेकिन मोहन राकेश, प्रेमचंद, निर्मल वर्मा आदि साहित्यकारों की कहानियों पर निर्मित फिल्में देखने से ज्ञात होता है कि साहित्य की तरह इनमें भी एक गंभीरता है जो दर्शकों को समान रूप से सोचने पर विवश करती है।"

साहित्यिक कृतियों के फिल्मांतरण के संबंध में मूल प्रश्न यह भी है कि क्या साहित्यिक रचनाओं पर उसी स्तर की और उनके अर्थ को यथावत् संप्रेषित करने वाली फिल्में बनाई जा सकती हैं? क्या किसी श्रेष्ठ साहित्यिक रचना पर फिल्म या धारावाहिक का निर्माण उसकी स्वायत्तता में हस्तक्षेप है? प्रेमचंद की प्रसिद्ध रचनाओं सेवासदन, गबन, गोदान पर बनी फिल्मों और निर्मला एवं कर्मभूमि पर बने धारावाहिकों के संबंध में भी कोई उत्साहजनक प्रतिक्रिया नहीं मिली। प्रेमचंद के रहते सेवासदन पर बनी फिल्म को लेकर तो खुद प्रेमचन्द भी असंतुष्ट रहे। 'दो बैलों की कथा' पर बनी फिल्म 'हीरा–मोती' जरूर बहुत हद तक अपना प्रभाव छोड़ने में सफल रही। यही नहीं प्रेमचन्द की अन्य साहित्यिक रचनाओं पर फिल्मों के निर्माण की बेहतर कोशिशें भी विवाद से परे नहीं रहीं।

सत्यजीत राय द्वारा निर्देशित 'शतरंज के खिलाड़ी' की भी कटु आलोचना की गई। उन्होंने न केवल कहानी का अंत बदल दिया था वरन् वाजिद अली शाह की कहानी जिसका उल्लेख प्रेमचन्द की कहानी में भी हुआ था, फिल्म में हावी हो गई और प्रेमचन्द की कहानी में कही गयी कई बातें अनकही ही रह गई। अब सवाल यह है कि साहित्यिक कृतियों को समझने योग्य पर्याप्त संवेदना और दृष्टि के बावजूद इस विफलता का कारण क्या है? प्रेमचन्द की कथा रचनाओं के सिनेमाई रूपांतरण की समस्याओं और सीमाओं की बहस की शुरूआत यहीं से होती है।

सत्यजीत राय की दूसरी हिन्दी फिल्म 'सद्गति', 'शतरंज के खिलाड़ी' की तुलना में मूल रचना की संवेदना को ज्यादा ईमानदारी से व्यक्त करती है। फिल्मकार के रूप में राय इस फिल्म में ज्यादा स्वतंत्रता नहीं लेते। यही कारण है कि अपने प्रभाव में यह फिल्म लगभग वही असर छोड़ती है जो कहानी को पढ़ते हुए मन पर पड़ता है।

वैसे तो साहित्यिक कृतियों के सिनेमाई रूपांतरण की अनेक समस्याएँ हैं और प्रेमचन्द की कथा रचनाओं के साथ भी ऐसा ही है। "साहित्यिक रचनाओं के सिनेमाई रूपांतरण में सबसे बड़ी बाधा यह है कि एक फिल्मकार रचना में दिए गए डिटेल (भौतिक स्थितियों का वर्णन) को तो प्रभावशाली ढंग से फिल्मा सकता है परन्तु भाव और विचार–स्थितियों के आंतरिक 'डिटेल्स' को व्यक्त करना लगभग असंभव हो जाता है। क्योंकि वे रचना के शिल्प से इस रूप से अंतर्ग्रथित होते हैं कि वे उस विशिष्ट रूप में आकर ही अर्थवान बनते हैं और उसी रूप में वह पाठक को आनन्द देते हैं। जो कृति इस दूसरे पक्ष पर ज्यादा बल देती है, उसका फिल्मांकन उतनी ही बड़ी चुनौती बन जाता है। शायद यही कारण है कि साहित्यिक रचनाओं पर बनी फिल्मों और धारावाहिकों की सबसे बड़ी कमजोरी यही रही है कि वे उन रचनाओं की विषय–वस्तु को कच्चे माल की तरह तो इस्तेमाल करती है, परन्तु उनमें निहित अर्थ को न ग्रहण कर पाती है और न ही संप्रेषित कर पाती है।"

साहित्यिक कृतियों के सिनेमाई रूपांतरण अथवा फिल्मांतरण की अपनी विशिष्ट परंपरा है। लेकिन ऐसी कृतियों के रूपांतरण की अपनी विशिष्ट समस्याएँ भी हैं। दरअसल साहित्य और सिनेमा का अपना पृथक स्वरूप है और फिल्मांतरण की प्रक्रिया को समझने के क्रम में उनके इस भिन्न और विशिष्ट स्वरूप का ध्यान रखना आवश्यक है। प्रायः मूल कृति में होने वाले परिवर्तन आदि को स्वरूप की इस भिन्नता को समझकर ही समझा जा सकता है। किसी भी कृति के सिनेमाई रूपांतरण में अनेक व्यावहारिक कठिनाइयाँ हैं। ये कठिनाईयाँ कृति की आत्मा अथवा उसके मूल संवेदनात्मक उद्देश्यों की रक्षा, मूल कृति के आधार पर पटकथा लेखन की समस्या, व्यावसायिकता का दबाव, कृति में चित्रित देशकाल एवं वातावरण के प्रस्तुतिकरण की समस्या, संप्रेषण की समस्या सहित अनेक व्यावहारिक समस्याओं से संबंधित है और यह सैद्धांतिक समस्याओं के अतिरिक्त है।

■ ■ ■

साक्षात्कार

प्राचार्या डॉ.रमा जी से सचिन एवं साक्षी की बातचीत के अंश

अध्यापक के रूप में आपने कई वर्षों तक अध्यापन का कार्य किया है । अब जब आप एक प्रशासनिक पद पर हैं तो अध्ययन अध्यापन का समय कम ही मिलता होगा और एक अध्यापक की स्वतंत्र कार्यशैली भी कई बार प्रबंधकीय विवशताओं के आगे समझौतावादी हो जाती होगी । ऐसे में स्वयं के भीतर के स्वतंत्र अध्यापक को जीवित रखना आपको कितना चुनौतीपूर्ण लगता है ?

निःसंदेह , यदि मैं यह कहूँ कि मेरे ऊपर कोई फर्क नहीं पड़ा है तो मैं आपसे झूठ बोलूंगी। मेरे मुताबिक अध्यापन जो मेरा पूर्णकालिक पेशा बन चुका था पिछले 25 सालों में मैंने अध्यापन को ही अहमियत दी है और आज भी मुझे लगता है कि मैं प्रशासनिक दुनिया के लिये नहीं बनी हूँ। प्रशासन की एक अलग दुनिया है। यह भी कहा जाता है कि जो प्राचार्य के प्रशासनिक पद पर बैठे उसकी चमडी मोटी होनी चाहिये क्योंकि ये सीट ऐसी है जिसके रास्ते में कोई भी आयेगा और शौक से कुछ भी बोलकर चला जायेगा। छात्र आयेंगे अध्यापक आयेंगे और नॉन टीचिंग स्टाफ भी आयेंगे साथ में कॉलेज के अन्दर के लोग भी आयेंगे और कॉलेज के बाहर के लोग भी आयेंगे। सौभाग्यवश मैं साहित्य से जुड़ी रही अतः मेरा व्यवहार साहित्यिक रहा कहा जाता है कि साहित्य के लोग संवेदनशील होते हैं। या तो आप सहते जाइये या समय आपको परिपक्व कर देगा। मैं अध्यापन को मिस करती हूँ। मेरा मानना है कि मुझे अध्यापन ही करना चाहिये क्योकि मैं अध्यापन के लिये ही बनी हूँ।

मैम पत्रकारिता का क्षेत्र महिलाओं के लिये ज्यादा चुनौतीपूर्ण था। आप पत्रकार भी रही हैं अतः इस पर आपके विचार क्या हैं?

पत्रकारिता का क्षेत्र ही नहीं हर क्षेत्र महिलाओं के लिये चुनौतीपूर्ण है। आप क्या सोच रही हैं कि इस कुर्सी पर बैठी हुयी हूँ तो इस कुर्सी पर बैठने के बाद चुनौती आयीं? यहां पत्रकारिता से ज्यादा चुनौती हैं। पत्रकारिता में तो आपने इंटरव्यू ले लिया । किसी घटना की रिर्पोटिंग कर ली पर यहाँ तो रोज नया अनुभव हो रहा हैं। लेकिन मुझे अभी भी यह लगता है कि हम जिस समाज में खास तौर से जिस भारत में रह रहे हैं वहाँ महिलाओं के लिए एक आदर होना चाहिये। यह बिल्कुल ठीक है कि सब बराबर हैं पर मैं यह नही मानती कि हम सब बराबर हैं । ईश्वर ने दो लोगों को अलग अलग बनाया है । स्त्री और पुरुष ईश्वर के बनाये हुए है अतः स्त्री को स्त्री और पुरुष को पुरुष समझना चाहिये। पुरुष के सामने चुनौती इसलिये कम हैं क्योंकि अगर वह रात में 12 बजे भी घूम रहा है तो घूम रहा है उसकी मर्जी है चाहे वह कुछ न कर रहा हो वह घूम रहा है। पर मैं कहती हूँ कि शायद पुरुष के पास जिम्मेदारियाँ भी कम हैं। उदाहरण के लिये मान लीजिये कि पति पत्नी दोनों नौकरी करते हैं। मान लीजिये दोनों साथ साथ सुबह काम पर निकलते हैं । अचानक घर से बच्चे के रोने की आवाज आती है। पता चलता है कि बच्चे को चोट लगी है। 90 प्रतिशत पुरुष, मान लीजिये 10 प्रतिशत पुरुष दूसरी तरह के हैं रुक जायें, परन्तु 90 प्रतिशत पुरुष ऐसे हैं जो पिता हैं पति हैं कहेंगे कि तुम सम्भाल लेना मैं चलता हूँ मुझे देर हो रही है। वह स्त्री जो एक माँ है उसे पता है कि अगर वह नहीं जायेगी तो उसे बॉस से डॉट पडेगी । वह उस परिस्थिति से परेशान नहीं होती। रोते बच्चे व उसकी चोट को देखकर यह नहीं कहती कि अच्छा तुम खुद देख लो। वरन वह उस परिस्थिति को सुलझाती है। इस तरह चुनौती तो पत्रकारिता में भी हैं परन्तु अगर महिला निडर है साहसी है आत्मविश्वास से भरी है तो हर चुनौती का सामना कर सकती है।

हंसराज कॉलेज में पहली बार महिला प्राचार्या बनी है। इस निर्णय को आप किस प्रकार देखती हैं ?

जो परिस्थितियाँ बनीं मुझे लगता है कि, हालांकि प्राचार्या पद के लिये मैंने कभी नहीं सोचा था, सपने में भी नहीं सोचा था कि मैं हंसराज कॉलेज की प्राचार्या बन सकती हूँ , यह मेरी कल्पना में भी नही था और मेरी कोई कोशिश भी नहीं थी। पर कहते हैं कि कभी कभी आपका भाग्य बड़ा प्रबल होता है।

जिस तरह की परिस्थितियाँ बनीं मुझे लगता है ईश्वर ने मेरे लिये रास्ता बनाया। मैंने इस पद की जिम्मेदारी को भी लिया और ईमानदारी से निभाया भी। यह काम कैसा भी हो सकता है अच्छा या बुरा। इसका मूल्यांकन कई बार मैं स्वयं करती हूँ क्योंकि व्यक्ति का सबसे अच्छा मूल्यांकन स्वयं वही व्यक्ति कर सकता है। मुझे लगता है मैं जो भी काम करूँ ईमानदारी से करूँ। प्राचार्या के तौर पर सबको नाराज़ नहीं कर सकती क्योंकि कॉलेज चलाना है। बड़ा कॉलेज है प्रतिष्ठित कॉलेज है तो सबको खुश भी नहीं कर सकती हूँ। फिर भी चुनौती है मुझे हंसराज कॉलेज की पहली महिला प्राचार्या का पद मिला है। ईश्वर मुझे बुद्धि दे , सबका साथ ईमानदारी व साकारात्मक सोच के साथ मिले तो यह मेरे लिये सबसे बड़ा सौभाग्य होगा। चुनौती तो है इस सच को स्वीकार करना होगा।

पिछले एक डेढ़ साल में विचारधारा का प्रश्न महत्वपूर्ण हुआ है। विश्वविद्यालयों में विचारों की स्वतंत्रता पर रोक लग रही है। ऐसे में विचार निर्माण की प्रक्रिया में हंसराज कॉलेज का क्या योगदान है? आप इसे किस प्रकार से देखती हैं?

यहाँ पर चिंतन की आवश्यकता है। विचारधारा प्रबल नहीं हो रही हैं। विचारों की स्वतंत्रता पर रोक नहीं लग रही है। विचारों की स्वतंत्रता पर रोक लगनी ही नहीं चाहिये। पर हमारे विचार कैसे हैं यह चिंतन का विषय है। मान लीजिये हम बाहर जाएं और सड़क पर लोगों को उल्टा सीधा बोलने लगें तो सब कहेंगे न कि पागल है। अभिव्यक्ति की आजादी के साथ साथ दूसरा बड़ा दायित्व हमारे पास आता है जिम्मेदारी का और साहित्य में कहा जाता है कि मन वचन और कर्म से किसी को दुःख नहीं होना चाहिये। अब अगर कोई भी व्यक्ति वह चाहे विद्यार्थी हो अध्यापक हो या नॉन टीचिंग स्टॉफ हो। यदि कोई भी कॉलेज में गलत बोल रहा है तो उसे कॉलेज में जगह नहीं मिलनी चाहिये । चाहे वह किसी विचारधारा का हो। मैं कहती हूँ कि जो हंसराज कॉलेज में सकारात्मक सोच के साथ आयेगा, सीखने की इच्छा से आयेगा व जिसके आने से सकारात्मक वातावरण का निर्माण होगा वह आमंत्रित है। विचार निर्माण की प्रक्रिया में हमारा उद्‌देश्य है कि हंसराज कॉलेज एक अच्छी भावना के साथ एक अच्छी सोच के साथ जो हमारे पास भविष्य की पीढ़ी है, जिसको माता पिता ने बड़े अरमान से हमारे पास भेजा है, उसको कम से कम हम अच्छी शिक्षा दें।

विश्वविद्यालय के अनेक महाविद्यालयों में अपनी स्वायत्ता की बात हो रही है। इस परिपेक्ष्य में हंसराज कॉलेज के क्या विचार हैं?

हंसराज कॉलेज के सामने अभी स्वायत्ता की बात नहीं आयी है। जब यह प्रश्न हमारे सामने होगा तब विचार करेंगे।

निकट भविष्य में हंसराज कॉलेज को लेकर आपकी क्या योजनायें हैं?

अगर मुझे विद्यार्थियों, अध्यापकों और नॉन टीचिंग स्टॉफ का सकारात्मक सोच के साथ सहयोग मिलता रहा तो सपना एक ही है कि हम हंसराज कॉलेज को विश्व का नम्बर वन कॉलेज बनायेंगे।

हंसराज कॉलेज की वार्षिक पत्रिका हंस का कई बार आपने सम्पादन किया है । हंस को लेकर आपकी क्या राय है ?

वार्षिक पत्रिका हंस अच्छी पत्रिका है। यह कॉलेज की एकमात्र पत्रिका है जहाँ छात्र अपने विचारों की स्वतंत्र अभिव्यक्ति कर सकते हैं। कुछ वर्ष पूर्व हमारे यहाँ भित्ति पत्रिका नियमित रुप से निकलती थी। वार्षिक पत्रिका हंस अच्छी तरीके से कार्य कर रही है। आपकी टीम भी अच्छे से कार्य कर रही है। अतः मुझे लगता है आप एक अच्छी वार्षिक पत्रिका लेकर आयेंगे।

वार्षिक पत्रिका हंस के माध्यम से आप हंसराज परिवार को क्या संदेश देना चाहती हैं ?

मेरा एक ही संदेश है अच्छा सोचो अच्छी भावना रखो । सकारात्मक सोच के साथ पूरी ईमानदारी के साथ भविष्य की पीढ़ी को सँभालो और हंसराज कॉलेज को विश्व का नम्बर वन कॉलेज बनाओ।

■■■

बालश्रम

– मोहम्मद जावेद
एम.ए. हिंदी, पूर्वार्द्ध

जिस समाज में भेड़ बकरी, खरीदने के लिए 20,000 की आवश्यकता होती है, उसी समाज में एक बच्चे की कीमत 20 रुपये लगायी जाती है। व्यवस्था और हालात एक माँ को अपना बेटा बेचने पर मजबूर कर देते हैं। दो जून की रोटी कमाने के लिए अपना स्वाभिमान तक गिरवी रखना पडता है। बालश्रम के उन्मूलन के लिए आज तक अस्तित्व में आये तमाम अधिनियमों और आयोगों के गठन के बावजूद स्थितियाँ जस–तस बनी हुई हैं।

बालश्रम संसार में आतंकवाद के बाद दूसरी विकराल समस्या है। भारत के सन्दर्भ में स्थितियाँ कहीं अधिक खतरनाक नजर आती हैं। अफसोस की बात है कि– ''संसार में पाये जाने वाले कुल 24 करोड बालश्रमिकों का 50: यानि 12 करोड़ सिर्फ भारत में पाये जाते हैं।''

हम अपने समाज में, चाय की दुकान से लेकर कोयले की खान तक बालश्रमिकों को श्रम करता हुआ देखते हैं, और तटस्थ बने रहते हैं। इससे पता चलता है कि हमारा समाज चारित्रिक रूप से उदात्त न होकर पतन की ओर अग्रसर है। यहाँ एक बड़ा सवाल उठता है कि– जिस देश के भावी कर्णधारों के साथ, व्यवस्था के कारिन्दे इस प्रकार का घिनौना खेल–खेल रहे हों तो क्या किसी भी देश का विकास सम्भव है?

आखिर क्या कारण हैं जिसके कारण मासूमों के बचपन को आग की भट्टी में झोंका जा रहा है।

मेरी नजर में इसका सबसे बड़ा कारण गरीबी है। यह संकट दो जून की रोटी का संकट है। जिसे हमारी मशीनरी आजादी के 70 साल बाद भी उपलब्ध न करा सकी।

दूसरा महत्वपूर्ण कारण है– 'अशिक्षा'। अशिक्षा के कारण ही व्यक्ति अधिक से अधिक बच्चे ऊपर वाले की देन समझकर करता रहता है। दूसरी बात उसके मस्तिष्क में यह रहती है कि जितने अधिक बच्चे होंगे, उनका श्रम मूल्य भी उतना ही अधिक होगा। यही कारण है कि एक दिन दो वक्त की रोटी के भी लाले पड़ जाते हैं, और उसे बच्चों को श्रम के कुचक्र में धकेलना पड़ता है।

इस सबका बच्चे पर क्या प्रभाव होगा इसकी परवाह न बच्चे को है और न ही माँ बाप और न ही उसके मालिक को। यही कारण है कि बच्चों में भगौड़ापन, चिढ़ चिढ़ापन, मूल्यहीनता जैसी विकृतियाँ उत्पन्न हो जाती हैं, जो उन्हें अनैतिक कार्य करने को बल देती हैं। संविधान से लेकर सरकार तक बालश्रम के उन्मूलन के लिए, अधिकारों से आयोगों तक तमाम योजनाएँ बनायी जाती रही हैं, किन्तु सरकारी कारिन्दे उसके क्रियान्वयन में असफल रहे हैं।

दूसरी बात यह कि– क्या मात्र कानून बनाने से बालश्रम का उन्मूलन किया जा सकता है? ऐसा कतई नहीं है। यह मनुष्य की नैतिक जिम्मेदारी है कि– नैतिकता के आधार पर बालश्रम में लिप्त लोगों की तरफ से आँख मूँद कर न रहें, बल्कि अपने स्तर से, अथवा सम्बन्धित संस्था अथवा अधिकारी के माध्यम से बालश्रम की रोकथाम में भूमिका निभाएँ। तभी इस समस्या से छुटकारा मिल सकता है। अन्यथा नैतिक पतन निश्चित है।

■■■

विश्वगुरू भारत

– डॉ. नीतू शर्मा
सहायक प्रोफेसर, हिंदी विभाग

विश्वगुरू है हमारा भारत
इसमें हैं विभिन्न धर्म–सम्प्रदाय,
भाषा–समाज, रस्मो रिवाज
खान–पान, पर्व और त्यौहार।

विश्वगुरू है हमारा भारत
इसकी अनेक खासियतें हैं
एकता, समानता, स्वतंत्रता,
सद्भावना, प्रेम और भाई चारे
का सर्वत्र साम्राज्य है।

विश्वगुरु है हमारा भारत
इसका स्वरूपाकार है अत्यंत विस्तृत
जो कि पूर्व से पश्चिम और
उत्तर से दक्षिण तक फैला है।

विश्वगुरू है हमारा भारत
ऊँचा मस्तिष्क स्वाभिमान की
गौरवगाथा सुनाता है और
हाँ सुर्ख रंग उन्नत चेतना, वीरता
और राष्ट्रप्रेम का अमर संदेश बताता है।
यह विश्व का सिरमोर है, विश्वगुरू है हमारा भारत।

■■■

वो जब कभी....

– बृजमोहन वत्सल
सहायक प्रोफेसर गणित विभाग

वो जब कभी मेरे सामने
आकर बैठ जाया करती थी
बहुत चुराती थी नज़रें
पर कमबख्त मिल जाया करती थीं।

बालों को अपने बाँधने को
वो देती रहती थी ऐंठें
पर कमबख्त वो ऐंठें भी
बार बार खुल जाया करती थी।

अपनी आँखों को छुपाने को
वो लेती थी पलकों का सहारा
पर कमबख्त वो पलकें भी
शरारत कर जाया करती थी।

अब जैसे मेरी आँखों को
इसकी आदत सी हो गयी है
पर कमबख्त अब वो आती नहीं
ना जाने कहा खो गयी है।

■■■

मुक्तक

– सारांश वशिष्ठ
एम. ए. हिंदी (पूर्वार्द्ध)

मैं ये नहीं कहता तुझको भूल जाऊँगा।
मगर जानता न था तेरा शूल बन जाऊँगा।
ये जानता था तू उसूल है घर की।
मगर ये भूलना न तू पीर है दिल की।

जो कहते थे तू मेरे दिल में रहता है।
हम उनके दिल से दूर जाने लगे हैं।
जो कहते थे मैं तुम्हें बहुत चाहता हूँ।
आज हम उन्हें सताने लगे हैं।

मोहब्बत की किताबों में तेरा भी नाम आएगा।
मुझको बेवफा लेकिन खुद को जान–ए–वफा बताएगा।
मोहब्बत का दस्तूर है मजा–ए–तन्हाई में,
तुझको बे–वफा कहकर ये दिल कैसे खुशी पाएगा?

■■■

दिल हो गया तेरा पुजारी है....

– बृजमोहन वत्सल
सहायक प्रोफेसर, गणित विभाग

बताऊँ कैसे रात हमने गुजारी है
हर पल की तेरी याद लिख लिख उतारी है।
ये चाँद, सितारे, हवाएं और ये बादल
अदाएं जैसे बस गयी सब में तुम्हारी है।
आँखे हो बंद या खुली है तेरी ही सूरत
लगता है कि दिल हो गया तेरा पुजारी है।
आजा कि तुझे भूल जाना है बड़ा मुश्किल
गाता हूँ मै जिसको वो सभी कविता तुम्हारी है।

■■■

असमन्वित

– सारांश वशिष्ठ
एम. ए. हिंदी (पूर्वार्द्ध)

मिट्टी के दिये, हाथ से बनी कपड़े–कागज की झालरें।
लगने लगती हैं फीकी उन विद्युत चालित झालरों के मुकाबले।

सुनाई देती हैं सबसे ज्यादा जिनके मुँह से बिजली बचाओ,
पानी बचाओ, पर्यावरण बचाओ की आवाजें।
चमक रहे होते हैं उनके मकान टिम–टिमाती झालरों से,
उठ रहा होता है धुआँ उन्हीं मकानों की छतों से, आ रही
होती हैं भयंकर ध्वनियाँ।

खाँस रहा होता है कहीं कोई दमे से, चौंधिया जाती हैं
आँखें उस रोशनी और धुँए से।

■■■

हाँ, मैं रेहड़ी वाला हूँ।

– सारांश वशिष्ठ
एम. ए. हिंदी (पूर्वार्द्ध)

हाँ, मैं रेहड़ी वाला हूँ।
लगाता हूँ अपनी दुकान नाले के किनारे।
मैं बेचता हूँ खिलौने, इनके साथ खुशियाँ फ्री में।
मुझे झिड़कते हैं तथाकथित दुनिया की नजरों में बड़े
कहे जाने वाले लोग।
कोई भी दे जाता है गालियाँ।
फिर भी मैं हँसता हूँ.....
मुझे मिली है उपहार में नाले की बदबू, दमे की बीमारी।

सूख चुका है शरीर, चिपक गयी है हड्डियों से खाल।
हो चुका है लीवर शहीद, फेफड़े भी देने लगे हैं जवाब।
फिर भी मैं हंसता हूँ.... हाँ, मैं रेहड़ी वाला हूँ।

■■■

एक छोटी सी मुस्कान

– आकाश कुमार सिंह
बी.ए. हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

कोई खाने के लिये जीता है
तो कोई जीने के लिये खाता है।
कोई करने के लिये जीता है,
तो कोई जीने के लिये मरता है।
कोई सपने के लिये सजता है,
कोई कोई सजाने के लिये सजता है
कोई हँसने के लिये हँसता है,
तो कोई हँसाने के लिये हँसता है।
बस एक छोटी सी मुस्कान दुनिया बदल देती है
नहीं पाव–भाजी यह तो प्यार की रोटी है

■■■

उमंग

– आकाश कुमार सिंह
बी.ए. हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

उल्लास लिया, भर के उमंग
चल दिया है, जीवन के संग–संग
मद्धम–मद्धम ही चाल सही
अब छोड़ दिया है मैंने पलंग।
निश्चल बनता, निश्चल करता
कर बाधा को अब तंग–तंग
आहुति देने को तैयार हुआ
भर ऐसी शक्ति अंग–अंग।
कल–कल कर छल–छल
कर रहा अनुनाद मन का मीठा जल
अंकुर होने को व्याकुल, विह्वल
पा रहा हूँ खुद को पग हर पग।
"उल्लास लिया, भर के उमंग
चल दिया है, जीवन के संग।

■■■

आत्मरक्षा भी तो अहिंसा है

– अदिति शर्मा
बी.ए हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

आत्मरक्षा भी तो अहिंसा है,
कौन कहे आक्रमण इसको?
आँख उठे जो मातृभूमि पर,
कैसे सहें उस अतिक्रमण को?
आए कोई तोपें लेकर,
हम पर आग बरसाने को।
खेले कोई हमारी अस्मिता से,
अपना दिल बहलाने को।
वार करे हमारे प्रहरी पर,
कहे उसे चुप रहने को।
आग लगाए मानवता को,
लूटे माँ के गहने को।
क्यों न काट डालें उन हाथों को
जो बढ़ावें आतंकवाद को।
अब मिटाकर छोड़ेंगे यक्षों को,
यही प्रण अब हमारा है।
अहिंसा तो परम धर्म है
पर देश जान से प्यारा है।

■■■

नहीं इज़ाजत

– अदिति शर्मा
बी.ए हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

नहीं इज़ाजत मुझे जन्म की,
देखता नहीं कोई राह मेरी
जालिम इस दुनिया में
नहीं हिफाज़त कोई मेरी।
नहीं इज़ाजत, फिर भी मैं आई
अपने परिवार में जा समाई,
लड़के की चाह ने, लेकिन
मेरे हर सपने की चिता जलाई
पिता तुम्हारा अंश हूँ मैं
माँ तूने है मुझे जन्म दिया,
फिर भैया की चाह में क्यूँ
मुझे खुद से दूर किया।
जन्मी थी कुछ सपने लेकर
मन में चाह और उमंग लेकर
पिता तुम्हारा नाम मैं
लिखना आकाश पर चाहती थीं,
माँ तेरे आँचल को, अमर मैं करना चाहती थीं
पर नहीं इज़ाजत मुझे उमंग की
नहीं इजाजत स्वप्न दर्शन की कारण
बस, हूँ मैं एक लड़की
हूँ मैं एक लड़की।

■■■

उसके मुख से

– शान्तेश्वर दूबे
बी.ए. हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

उसके मुख से वो कथ्य सुना।
निर्भ्रान्त सजग सब तथ्य सुना।।
उसके मुख......
उसके नयनों में स्नेह अटल,
पर गिरती थी धारा अविरल
वो रूपवान इक जीव मात्र थी,
दुनिया के आधीन मात्र थी
फिर भी उसके सम्मुख विह्वल
होकर मैंने सब सत्य सुना।
उसके....
वो सागर के लहरों जैसी
उठकर गिरती रहती प्रतिपल
वो इस वसुधा के रंगमंच में
सिंहासन पर आसीन मात्र थी।
बिन बोले उसके अधरों से,
उसके जीवन का कृत्य सुना।
उसके....
वो प्रेमसुधा की प्यासी थी,
केवल दर्शनाभिलाषी थी
दुख के बादल से घिरकर भी,
सुख की छाया में लीन मात्र थी
उसके भीतर की करुणा से
परिचित होकर सब वृत सुना।
उसके........

■■■

आज का इंसान

– शिवा इंसा
बी. एससी. गणित (विशेष), तृतीय वर्ष

लोग जीने के लिए क्या–क्या ढूँढते हैं?
मैं दूसरों के लिए जीने की हर वजह ढूँढता हूँ,
लोगों से किस तरह से मिलूं वो हर वजह ढूँढता हूँ,
लोग अपने लिए अपनों को भूल जाते हैं,
मैं लोगों को अपना बनाने की वजह ढूँढता हूँ,
खामोश हो जाते हैं लोग अपनी सच्चाई पर,
मैं सच को जानने की हर वजह ढूँढता हूँ,
भूल जाते हैं लोग अपने माता–पिता जी को,
मैं उनके लिए स्वर्ग से भी सुन्दर
बनाने की जगह ढूँढता हूँ,
रोते हैं, बिलखते हैं चन्द सिक्कों के लिए,
मैं लोगों के रोने की हर वजह ढूँढता हूँ,
दिल तोड़कर यूँ ही
चले जाते हैं लोग अपनों का,
मैं अपनों का दिल जीतने की हर वजह ढूँढता हूँ,
ना जाने क्यों लोग अपने लिए जीते हैं,
मैं दूसरों के लिए जीने की वजह ढूँढता हूँ,
पल में ही दूर हो जाते हैं अपने न जाने क्यों?
मैं लोगों के करीब और दिल के करीब
आने की वजह ढूँढता हूँ,
यही मेरी जिन्दगी का मकसद है मेरे दोस्त,
इसीलिए इसे पाने की हर वजह ढूँढता हूँ–
हर वजह ढूँढता हूँ।

■■■

जल संग्रहण

– आसिफ खाँन
बी.ए. हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

जल जीवन जीवों का धन
अतः करो तुम जल संग्रहण
हे मानव तू कर उद्धार
मत कर जल का तू व्यापार
बहता निर्मल धाराओं में
सहता दुर्बल नाराओं में
सबकी प्यास बुझाता है जल
रंगों में मिल जाता है जल
जल जीवन जीवों का धन,
करो, करो, करो, जल संग्रहण
हो जाए न खाली नीर
हो जाओ अब तुम गंभीर
भावी होकर चिंता कर लो
विश्व गुरू हो कुछ तो सोचो
पानी देव को यूँ न नोंचो।

■■■

कलम की महत्ता

– विकास त्रिपाठी
बी.ए. हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

कलम नहीं, है यह एक अस्त्र।
अपने ऊपर प्लास्टिक और लौह का ओढ़ती है वस्त्र।
जूझती है दिमाग और कागज के बीच
फिर भी सुन्दर लेख के कारण होती है नीच।
हमारे भीतर के द्वंद्व को करती है व्यक्त।
न जाने कितने कष्ट से बहाती है रक्त।
मनुष्य को उसकी अलग–अलग पहचान दिलाती है।
और खुद कूड़ेदान में अपने लिए जगह बनाती है
हमारे जीवन में इसने महत्वपूर्ण जगह बनाई
समय–समय पर नए–नए रूप में हमारे काम आई
हमें इसका कभी नहीं करना चाहिए उपहास
क्योंकि विद्यार्थी जीवन में है यह किरण की आस।

■■■

लड़की

– धर्मेन्द्र गुप्ता
बी.ए. तृतीय वर्ष

लड़की का जन्म हुआ, हो गये सब कंगाल।
थाली आंगन ना बजी, बँटा न लड्डू थाल।।
भाई को माँ दे रही, खाना नित पुचकार।
लड़की जितना खा रही, उतना ही फटकार।।
भैया इंग्लिश सीख ले, लड़की कपड़े फींच।
घर से बाहर जाये जब, सिर पर पल्ला खींच।।
बेटा कॉलेज जा अभी, लड़की जा ससुराल।
बन्ने संग अब आइयो, छटे छमाहे साल।।
लड़की तेरा बाप घर, काम नहीं अब और।
हम डोली उठवा चुके, लड़की तक उस ठौर।
बत्तीस तोले तागड़ी, तीस का कंठी धार।
बेटे की बहुरिया पे, माँ ने दीनी वार।।
बेटा गया विदेश को, बीते बारह साल।
खाट पकड़ ली बाप ने, माँ का न पूछो हाल।।
बेटा न आया अभी, काम पड़े थे बीस।
खाली घर में माँ रो रही हाथ पे रखे सीस।।
लड़की तब से कर रही, माँ की देखभाल।
लेकिन माँ न पूछती, कैसी तू ससुराल।।
लड़की माँ को देखने, खड़ी हुई थी पास।
बेटा–बेटा कर रही छूट चली जब सांस।।
इसलिए बेटा–बेटी में खत्म करो अब भेदभाव।
नहीं तो आगे हो जायेगा माँ, बहन, पत्नी का अभाव।

■■■

साल : तेरा आना जाना

– पूर्णिमा पाण्डेय
बी.ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

ऐ साल तेरा जाना, ऐ साल तेरा आना।
कुछ पल हुए दिलों को, कुछ पल हुए बेगाना।
सहमे कभी–कभी थे, मजबूर भी हुए हम,
कुछ पास आ गये थे, कुछ दूर भी हुए हम,
तनहाई कुछ मिली तो, कुछ पल मिले सुहाना
ऐ साल तेरा जाना, ऐ साल तेरा आना
है वक्त की प्रकृति ये, आना भी है जाना भी,
दे जाये कभी खुशियाँ, हृदय को सुलाना भी
अवशेष याद है बस, अपनों का थपथपाना।
ऐ साल तेरा जाना, ऐ साल तेरा आना।
चाहत हो दिलो में, अपनों में अपना पन हो,
हो स्नेह भरी आँखें, मानव में मानवपन हो,
महफिल सजे खुशी की, तनहाइयां ले जाना
ऐ साल तेरा जाना, ऐ साल तेरा आना।
अभिलाष भी पूरी हो, इच्छित जो कामनाएं,
कोई दूर न हो दिल से, सबको गले लगायें,
स्वागत तेरा है नववर्ष कुछ इस तरह से आना।
ऐ साल तेरा जाना, ऐ साल तेरा आना।।

■■■

आज का स्टैंडिंग सिस्टम

– धर्मेन्द्र गुप्ता
बी.ए. तृतीय वर्ष

मित्रो! आप चाहे मानें या ना मानें सबसे बड़ी आफत,
स्टैण्डिंग सिस्टम की दावत
धक्का–मुक्की करके खाना बड़ी टेढ़ी खीर है।
एक दिन हमें भी जाना पड़ा बारात में।
बीबी–बच्चे थे सभी के साथ में।
ऊपर से शो पीस, अन्दर से सूखे थे।
पर क्या करें बेचारे सुबह से ही भूखे थे।।
जैसे ही खाना खाने का संदेशा आया हाल में।
भगदड़ सी मच गयी पूरे पांडाल में।
एक के ऊपर एक बरसने लगे, जिसने जो झपट लिया।
ओ झपट लिया, बाकी बेचारे तरसने लगे।
एक व्यक्ति हाथ में प्लेट लिये
इधर से उधर चक्कर लगा रहा था।
खाना लेना तो दूर
वह खाने को देख भी नहीं पा रहा था।
दूसरा अपनी प्लेट में चावल लेकर आया था।
उससे तो ज्यादा अपना कुर्ता ही फाड़ लाया था।।
तीसरी एक महिला थी, जो काफी बनी और ठनी थी।
उसकी आधी साड़ी पनीर की सब्जी में सनी थी।
किनारे खड़ी नेत्रों को भिगो रही थी।
पड़ोसन से साड़ी मांगी थी इसलिए रो रही थी।
चौथा बेचारा गरीब था–लाचार था।
इसलिए कपड़े उतारकर पहले से ही तैयार था।।
रोटी तो किसी तरह पा गया था।
मगर उसे सब्जी पाने का इंतजार था।।
पांचवा बेचारा अकेले ही सारे झटके झेल रहा था।
भोजन देखने के लिए सबको धकेल रहा था।
प्लेट दूसरों की देख रहा था, मुंह अपना चला रहा था।।
छठा इन हरकतों से काफी परेशान था।
इसलिए बीबी बच्चों से अधिक अपनी प्लेट पर ही ध्यान था।।
सातवां स्वयं लड़की वाला था, जिसके प्राण कंठ में अड़े थे।
घराती तो सारे खा रहे थे बाराती बेचारे सड़क पर खड़े थे।

■■■

सोशल साइट

– अनुपम प्रियदर्शी
बी.ए. हिंदी (विशेष), द्वितीय वर्ष

सोशल साइट पर मैंने इक दिन देखा था,
कुछ अक्षर टाइमलाइन पर तैर रहे थे,
अपने–पन की हद से ज्यादा अपने लगते,
उन लफ्जों के प्रेषक शायद गैर रहे थे?
लिखा हुआ था गर एक लेखक
लिखने से भी ज्यादा तुमको लिखना चाहे
या फिर कोई कलमकार की कलम बेचारी
स्याही से ज्यादा तेरे संग दिखना चाहे
तो फिर समझो तेरी नश्वरता का उस क्षण नाश हो गया
लिये अमरता तेरा होना तुझसे ज्यादा खास हो गया,
काल चक्र की क्रूर कलाएँ तुमको कब तक रहने देंगी
ईश्वर गर दे तुम्हे शतायु जीवन भी तो
उससे आगे क्या ये दुनिया बढ़ने देगी?
लेकिन जब कुछ लेखक के भीतर पलता है,
कालगति से परे कभी न वो ढलता है,
सोचा यह किस्सा रोचक है तुम्हें बताऊँ
दुर्लभ सा अमरत्व तुम्हारे लिए सुलभ है
यह समझाऊँ
यही बताने की कोशिश में,
उस जुमले को तुरत वहीं से,
तुम तक भी पहुँचाना चाहा
अपनी उलझन तुमसे साझा कर,
खुद को सुलझाना चाहा,
लेकिन हुआ वही आखिर में,
जिसका मुझको अंदेशा था, आम सही हूँ,
तेरे कारण खास बनूँ क्यों,
तुझसा ही अनुपम तेरा यह संदेशा था।
नश्वरता तुमको प्यारी यह कहकर भी
तुम जिंदा थीं लेकिन तुमको बाँट अमरता
मैं जिंदा था यह हैरत थी,
इस किस्से का जिम्मा लेता हूँ मैं
लेकिन सच तो यह है इसमें मेरी खता नहीं है।
तुमको खुद में जिंदा रखने की कोशिश में
कितनी बार मरा हूँ अबतक पता नहीं है।
■■■

ऐसा हूँ मैं

– सुयश दीक्षित
बी.ए. हिंदी (विशेष), द्वितीय वर्ष

एक नाम एक पहचान हूँ मैं।
जिंदगी को खुद में समेटे हुए एक इंसान हूँ मैं।
थोड़ा शरारती थोड़ा शैतान हूँ मैं।
कभी जलता कभी बुझता, उस दिए के समान हूँ मैं।
अँधेरों में रोशनी का उद्गार हूँ मैं।
किसी की ममता किसी का दुलार हूँ मैं।
उस ममता से ही तो साकार हूँ मैं।
एक विश्वास एक अंहकार हूँ मैं।
किसी की उलझन तो किसी का इंकार हूँ मैं।
उन्हीं उलझे से सवालों का जवाब हूँ मैं।
जिन्दगी की जरूरत, किसी का स्वार्थ हूँ मैं।
उन खुदगर्जों से ऊब चुका एक अधूरा प्राण हूँ मैं।
एक तरफ इश्क और उसका इन्तजार हूँ मैं।
उसकी आहों का ही तो शिकार हूँ मैं।
किसी का दुश्मन और उनका मुखालिफ हूँ मैं।
वैरी को भूलने वाला एक यार हूँ मैं।
हाँ सच कहता हूँ।
इस दर्द–ए–दिल को बयाँ करने वाला एक इंसान हूँ मैं।
गिरकर सीखने वाला एक नौजवान हूँ मैं।
कुल के रत्न के अपने, उसका ताज हूँ मैं।
खुद में ढूंढा, खुद को पाया कुल भूषण हूँ मैं।
■■■

मैं कुछ नहीं कह पाया

– सुयश दीक्षित
बी.ए. हिंदी (विशेष), द्वितीय वर्ष

मेरे प्यार को बयां करने के लिये,
मैं कुछ कह नहीं पाया।
बस मेरी आँखों ने तेरे लिये,
अपने असीम प्रेम को दर्शाया।
तब पास तेरे आने के लिये,
मैंने कलम को सहारा बनाया।
पर कुछ लिखने को तेरे लिये
मेरी कलम ने सदा खुद को खामोश ही पाया।
मेरे प्यार को बयां करने के लिये,
मैं कुछ कह नहीं पाया।
इन्हीं चक्रवातों के बीच तेरे लिये,
मैंने अपने आप को सदा बेहोश पाया।
पर जब तेरे सामने मैं कुछ कहने के लिये आया।
पर मैं कुछ कह नहीं पाया।
मेरे प्यार को बयां करने के लिये
मैं कुछ कह नहीं पाया।
■■■

मन की आवाज

– साक्षी अहलावत
बी.ए. हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

आँखों ही आँखों में ऐसी बात हो गई,
ना तूने जाना ना मैंने समझा,
और हमारी एक नई शुरूआत हो गई।
मेरे मन मंदिर में तू ही बसता गया
और मेरा मन प्रेम–जाल में फँसता गया,
मन प्रेम जाल में फँसकर भी खुश रहता है
तभी तो गमों को भी मुस्कुराकर सहता है।
तुम्हारी ये मुस्कान ही मेरी दुनिया बन गई
इसी को पाने के लिए मैं हद से गुजर गई
जिंदगी अब एक ऐसे मुकाम पर खड़ी है,
जिसमें मरना तो आसान पर जीना मुश्किल है,
इन्हीं मुश्किलों को आसान कर दिखाऊँगी
और एक दिन सिर्फ तुम्हारी ही हो जाऊँगी,
मेरी खुशी में ही तुम्हारी खुशी हो
ये कोई जरूरी तो नही,
ये मोहब्बत है जनाब कोई
जी–हुजूरी तो नहीं।
मन को बहुत समझाती हूँ
थोड़ा कम याद करे तुम्हें
और इसी समझने–समझाने में
मेरी आंखे भर आती हैं।

■■■

दहेज

– योगेश कुमार
बी.ए हिंदी (विशेष), द्वितीय वर्ष

एक दिन निकला मैं अपनी, बेटी की शादी करने को।
पर तैयार न था कोई मुझे, अपना समधी स्वीकारने को।।
लौट कर ज्यों मैं घर आया, बिटिया मेरी लगी पूछने को।
क्या मिला आपको कोई वर, मेरी वरमाला वरने को।।
उत्सुकता से पूछ रही वह, सच मुझसे सुनने को।
आँखें नीची करके बोला, धिक्कार मुझे तेरा पिता कहलाने को।।
पता नहीं क्यों भुगत रही तू, सजा गरीब घर आने की।
विधि ने मुझको नहीं दी, ताकत शादी तेरी कराने की।
सजा सका न मैं, डोली तेरी शादी की।
धन जो होता मेरे, लौटा देता हँसी तेरे होंठो की।।
दहेज की अग्नि में जलकर, रह गयी इच्छा तेरी शादी की।
आज समाज ने ही छीनी, खुशियाँ तेरे दामन की।
सुन उत्तर उसको मेरा, एक बात समझ में आयी है
बोझ होती हैं बेटियाँ इस बात की तस्वीर सामने आयी है।
इस दहेज के मौसम में, मेरी बेटी के कुँवारी रहने की खबर आयी है।
और किसी रात में उसके, जल कर मरने की बात सामने आयी है।

■■■

सिर्फ तुम

– साक्षी अहलावत
बी.ए. हिंदी (विशेष) द्वितीय वर्ष

तुम मेरी आँखों की नमीं हो,
तुम ही मेरी कमी हो,
तुम ही मेरा आसमां
और तुम ही जमीं हो।
मेरी जान हो तुम
दिल का अरमान हो तुम,
अब तो मेरी मन्नत भी तुम
और जन्नत भी तुम।
मेरे होठों की मुस्कान हो तुम,
मेरी नई पहचान हो तुम
मेरी मर्ज भी हो तुम,
शायद पिछले जन्म का कर्म भी हो तुम।
मेरी आँखों की चमक हो तुम
मेरे गीतों की धमक हो तुम
मेरे चेहरे का नूर,
और मेरा गुरूर हो तुम।
मेरी आवाज हो तुम,
सिर का ताज भी हो तुम,
हाथों की लकीर भी तुम,
और मेरी तकदीर भी तुम।
तुम ही मेरा रास्ता
तुम ही मेरी मंजिल
अब तो दर्द भी तुम
और मरहम भी तुम।
अब और क्या कहूँ
क्या लिखूँ
कुछ और नहीं है सूझता
अब तो तुम ही हो
मेरी प्यारी सी कविता।

■■■

गज़ल

– अमित कुमार सिंह
बी.ए. गणित (विशेष), द्वितीय वर्ष

हाथों में आपके ये जाम कैसा है
रकीब के साथ गुजारे शाम जैसा है,
हमने तो उनसे बस मोहब्बत की है
उन्होंने ये लगाया बेबाक इल्ज़ाम कैसा है,
दर्द से हुई न हो मुलाकात जिसकी
समझ नहीं आता वो इन्सान कैसा है,
मेरे हुजरे में हर शब खामोशी रहती है
यह उनकी चाहत का इंतजार कैसा है,
अफवाह किसने फैलाई कि खुदा होता है
वफा की भी सज़ा जो दे वह खुदा कैसा है।।

■■■

इज़हार–ए–इश्क

– विदिशा गुप्ता
बी.ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

सारी उम्र जी हूँ इन होठों को सिले हुए
पर अब सोचती हूँ इन्हें खोल दूँ
दिल के कुछ राज बोल दूँ।
हाँ ये दिल तेरे दीदार को रहता बेकरार है
शायद इसी को कहते प्यार हैं।
शायद ये तुम्हारे सामने कभी न कह पाऊँ
दिल को ही मसोस कर रह जाऊँ
इसी लिए हाल–ए–दिल लिख रही हूँ।
समझ सको तो समझ लेना
जो मैं सुनना चाहती हूँ कह देना।
लड़की हूँ इससे ज्यादा नहीं कह सकती
मर्यादा के हर बंधन को नहीं लाँघ सकती
पर हाँ इतना विश्वास जरूर करना
फर्ज़ है मेरा तुम्हारे इज़हार पर हामी भरना
इजहार–ए–इश्क पर ना नहीं करूँगी
सबके सामने तुझे बाँहों में भरूँगी

ये लिखना तभी सफल होगा।
तेरा इजहार–ए–इश्क जब इसका प्रतिफल होगा
तेरे इजहार का रहेगा मुझे इंतजार
तब तक ये दिल रहेगा यूँ ही बेकरार।

■■■

दिल्ली : अद्भुत परिदृश्य

– नीतेश यादव
बी.ए हिंदी (विशेष), प्रथम वर्ष

है ये परिदृश्य अद्भुत
कर रहा मुझको ये विचलित
छीनता है मेरी निजता
धूमिल हो रही मेरी अस्मिता,

आकर्षण प्रतिरोधक बन कर
करता मुझको दूर एकाग्र से
लौह–पथ सा लगता नवीन उदय
प्रतिघातों से करना है संघर्ष मुझे

अपलक कर तूँ नेत्र बिंदु पर
चलता है तू बस अविचल सा चल
पुष्पित–पुलकित होगा तूँ उस रज पर
जिसने संचित कर दिये नव प्राण तुझे।

■■■

रहस्य

– नीतेश यादव
बी.ए. हिंदी (विशेष) प्रथम वर्ष

रहस्य है इन गुमनामी आँखों में,
गहरे से दर्द का,
रहस्य है मेरी रूह में,
मीठी यादों का
रहस्य है इन बहती हवाओं में,
मेरी उजड़ी–सी संभली दास्तां का,
रहस्य है मेरी सहमी सी जुबा पर
कुछ मजबूरियाँ बताने का
रहस्य है मेरे हाथों की लकीरों में
मेरे ऋणी भाग्य का
रहस्य है मेरी कल्पना में,
कुछ अनछुये से अहसास को कुरेदने का,
रहस्य है मेरे सामने लगे आइने में,
देखकर, कुछ मुझे कहना चाहता है,
रहस्य है मैं और मेरा जीवन
सोचता हूँ इसे रहस्य ही रहने दूँ
न कुरेदूं इस रहस्य को कलम से
बस! इसे दिल में रहस्य ही रहने दूँ
अफसोस! है कि मेरा दिल कमजोर बहुत है।

■■■

धरती माँ

– मुकेश कुमार
बी.ए. हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

मैं आवाज हूँ उन पेड़ पौधों की जो बे जुबान हैं। मैं आवाज हूँ उन पशु पक्षियों की जो कुछ बोल नहीं पाते। मैं आवाज हूँ उन पीड़ित मानवों की जो अन्याय सहकर भी हृदय के भेद खोल नहीं पाते।

विज्ञान कहता है कि मानव ने काफी विकास कर लिया है उसने अंतरिक्ष की सैर कर ली है, वह अब उड़ना सीख गया है। मगर, एक माँ जो अपने ही बेटों के द्वारा एक दूसरे की तबाही देख रही है?

वो इस बात से परेशान है कि भविष्य के गर्भ में क्या छिपा है? अभी इतना अंधेरा उस की जिंदगी में है।

आज हमारी सारी मानवता खत्म हो रही है और हमें इसका ज्ञान भी नहीं है क्योंकि हमने ही अपनी धरती माता के काफी टुकड़े कर दिए हैं और जो कुछ मानवता बची थी वह राजनीति, भ्रष्टाचार, काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि गुणों के कारण समाप्त हो गई है। आज मानव और दानव के बीच का अंतर कम होता जा रहा है।

मानव हो या पशु–पक्षी या पेड़ पौधे सभी के हृदय में से केवल एक ही पुकार आ रही है त्राहीमाम त्राहीमाम त्राहीमाम

आज का दौर एक ऐसा दौर है जब भाई–भाई को मारता है। पुत्र पिता का हत्यारा बन जाता है। ये सभी परिदृश्य हर एक सभ्य व्यक्ति को सोचने पर विवश करते हैं कि क्या मानवता, इन्सानियत, सहानुभूति, मर्यादा आदि शब्दों का आने वाले समय में कोई महत्व नहीं? आज लोग भगवान के नाम पर भी आपस में लड़ने लगते हैं तो क्या वह भगवान भी इन सभी अपराधों में शामिल है? और यदि नहीं तो भगवान उन को न्याय क्यों नहीं दिलाता जिनके साथ घोर अन्याय हो रहे हैं? भगवान स्वयं अपने ऊपर उठ रहे प्रश्नों का खंडन क्यों नहीं करता? पापियों का नाश करने तो भगवान राम और कृष्ण आदि के रूप में आए थे तो क्या भगवान के कोश में पाप और पुण्य की परिभाषा बदल गई है? मुझे आज तक इन प्रश्नों के उत्तर नहीं मिले।

■■■

ज्ञानार्जन के लिए पढ़ें

– निखिल पाण्डेय
बी.ए. हिंदी (विशेष) तृतीय वर्ष

आज हमारे सामने अध्ययन संबंधी एक बहुत ही महत्त्वपूर्ण समस्या है कि हम अपने जीवन में जल्द से जल्द सफलता पाने की चाह में मात्र उतना पढ़ना चाहते हैं जिससे हमारी कार्यसिद्धि हो जाए अर्थात् हम परीक्षामूलक अथवा तथ्यगत पढ़ना चाहते हैं। हम किसी विषय को विस्तार से नहीं जानना चाहते।

हमारा उद्देश्य ज्ञानार्जन की अपेक्षा परीक्षाओं में अच्छे अंक प्राप्त करना हो गया है जिससे न केवल हम रट्टू होते जा रहे हैं बल्कि हमारे पढ़ने की आदत में भी परिवर्तन आया है। परीक्षामूलक अथवा अंक प्राप्ति के लिए पढ़ने की हमारी यह आदत हमें सूक्ष्म व दूरदर्शी बनने से भी रोकती है क्योंकि हम उतना पढ़ते हैं जितना परीक्षा हेतु उपयोगी होता है और इस कारण हम विषयों पर पर्याप्त चिंतन नहीं करते। कई बार तो हम हमारे मस्तिष्क में उठ रहे प्रश्नों तक का हल नहीं खोजते और संतुष्ट हो जाते हैं। हमें अध्ययन सदैव गहराई व विस्तार से करना चाहिए ऐसा करने से हम न केवल उस विषय से संबंधित सभी प्रश्नों के उत्तर देने में समर्थ होते हैं अपितु वह विषय हमें अच्छे से समझ में भी आ जाता है जिसका परिणाम यह होता है कि चाहे परीक्षा में कोई प्रश्न किसी भी तरह घुमा फिरा कर पूछा जाए परन्तु हम उसका उत्तर दे पाते हैं और अच्छे अंक भी प्राप्त कर पाते हैं। किसी विषय पर पर्याप्त ज्ञान होने से हममें आत्मविश्वास भी बढ़ता है जिसका लाभ हमें साक्षात्कार संबंधी परीक्षाओं में सर्वाधिक मिलता है। अधूरा ज्ञान हमें सदैव असमंजस की स्थिति में डालता है और इससे हमारा आत्मविश्वास भी डगमगा जाता है। किसी विषय पर किया गया पर्याप्त चिंतन व अध्ययन हमें एक कुशल वक्ता भी बनाता है क्योंकि ऐसे में हम अपनी बातों को भली प्रकार से व आत्मविश्वास के साथ श्रोताओं के सम्मुख रख पाते हैं। हमारे साथ ऐसा भी हो सकता है कि शायद हम परीक्षा हेतु परीक्षा उपयोगी सामग्री मात्र पढ़कर अच्छे अंक तो प्राप्त कर लें परन्तु आगे जीवन में नौकरी हेतु, साक्षात्कार में हमें हमारी यह प्रवृत्ति और अधूरा ज्ञान धोखा दे जाए। अतः मैं यही कहना चाहता हूँ कि सदैव ज्ञानार्जन के लिए पढ़ें, संक्षेप में पढ़ने के स्थान पर थोड़ा विस्तार से पढ़ें, विषय पर पर्याप्त चिंतन मनन करें और फिर आप पाएंगे कि न केवल आपके अच्छे अंक आएंगे अपितु आप अपनी जिंदगी में आसानी से सफलता प्राप्त कर सकेंगे।

■■■

मैं कर सकता हूँ!

– शिवा इंसा
बी. एससी. गणित (विशेष), तृतीय वर्ष

अक्सर हमारे दिमाग में ये सब सवाल आते रहते हैं कि यार अब क्या होगा, क्या करूँ, बहुत परेशान हूँ, दिमाग सही नहीं रहता। मतलब इन सभी बातों से ये मालूम पड़ता है कि आपका दिमाग (मन) भटकने लगा है। कुछ भी सही नहीं दिखाई देता। सब कुछ बेकार लगने लगता है। बस यही चिन्ता सताती रहती है कि ये कैसे होगा, होगा भी या फिर नहीं। करूँ या नहीं? होता क्या है जैसे ही हम कोई भी कदम आगे बढ़ाते हैं तो नतीजा जीरो (शून्य) मिलता है। अब तो ये ही आवाज़ आती है अब तुझसे ना होगा। कुल मिलाकर वो पूरा टूट जाता है और अपनी कमियों को सुधारने की जगह कोशिश करना ही छोड़ देता है। यानि खुद के बनाये खेल में वह खुद ही हार जाता है। याद रखिए आप हारते तो कभी हो ही नहीं, आप खुद हार मान लेते हो। यहाँ तक तो सही है कि अब क्या करूं, कैसे करूं, अब नहीं होगा, होगा भी या नहीं आदि–आदि। लेकिन अब आपको ये समझना होगा कि क्या करूं, कैसे करूं, होगा भी या नहीं, ये जो आपकी 'ना' करने वाली सोच है ये शब्द 'ना' हैं, ही नहीं अगर आप सोच कर देखो कि "मैं ये सोचता हूं कि मैं ये नहीं कर सकता" मतलब आपसे नहीं होगा। अब इसके (वाक्य के) कुछ पल बाद रुकिये और ध्यान दीजिए आपको 'नहीं' शब्द मना करने के लिए नहीं बल्कि वे, यह कह रहा है कि मैं यह कर सकता हूँ। यह आपको उस वाक्य को सोचने के लिए मना कर रहा है और आपको वो करने का साहस दिला रहा है। मतलब, "नहीं = मैं कर सकता हूँ, मैं करूंगा, लो मैंने कर लिया।"

आइये अब आपको याद दिलाते हैं जब आप कोई भी काम कर रहे होते हैं चाहे वो कुछ भी क्यों ना हो? तो आपने अपनी ये आदत बना ली कि उसका नकारात्मक जरूर सोचोगे। चाहे वो 100: ही क्यों ना सही हो फिर भी विश्वास नहीं होता। नकारात्मकता अन्दर–ही–अन्दर घूमती रहती है। इससे क्या होगा कि आप अपने दिमाग में एक ऐसा माहौल पैदा कर लेते हो कि अब तक– ये गलत है, नहीं, सही मतलब उलझन में फँसने लग जाते हो, तो जाहिर सी बात है परिणाम आपको परेशान करने वाला ही होगा। निराशा ही मिलेगी। लेकिन इससे बचा कैसे जायें इसका तरीका हम सोच ही नहीं पाते। आइये जानते हैं कि आप कहाँ मात खाते हैं। मान लीजिए आप कहीं शान्त माहौल में बैठ कर बड़े खुशी मन से संगीत सुन रहे हो। याद रखो इस संसार, ब्रह्माण्ड में नकारात्मक ऊर्जा कोई भी नहीं है, अगर है तो वो जो आपने उत्पन्न की और कोई नहीं। जाहिर सी बात है आप शान्त वातावरण में बैठकर संगीत सुन रहे हों यानि आपके पास 'सकारात्मक ऊर्जा' का भंडार है। सबकुछ अच्छा चल रहा है। अचानक हुआ यूँ कि आपका कोई दोस्त जो नकारात्मकता का शिकार है वो आपके पास आता है और आपको अपनी नकारात्मकता बताने लगता है यानि आपके दोस्त ने अपनी सकारात्मक ऊर्जा को नकारात्मक ऊर्जा में बदल दिया फिर वो आपके पास आया और आपको अपनी आप–बीती सुनाकार आपके सकारात्मकता वाले माहौल को बदलने लगा। हुआ यूँ कि आप उसकी सभी बातें सुनते रहें और इंतजार करते रहें कि ये कब बन्द होगा। फिर क्या, आपने भी उसको अपनी आप–बीती सुनानी चालू कर दी। ध्यान दीजिए कि आप एक शान्त माहौल में बैठकर संगीत का आनन्द ले रहे थे लेकिन आप भी नकारात्मकता का शिकार हो गये। आप भी नकारात्मक सोचने लगे। अब सवाल ये उठता है कि इससे बचा कैसे जाये? वापस वहीं जाइये जब आपका दोस्त आपको अपनी आप–बीती सुना रहा हो तो आप अपनी–बीती ना सोचकर इस बात पर ध्यान दीजिए कि "भाई तूने जो किया है न, ये तरीका गलत था, इसको छोड़कर तुमको ये सही तरीका अपनाना होगा" आपको उसको उपाय देना होगा न कि और नकारात्मकता, एक तो वह परेशान है और अपनी आप बीती जो गुजर चुकी है उसको बताकर और परेशान नहीं करना बल्कि एक अच्छी, नई, सकारात्मक ऊर्जा उत्पन्न करनी है उसके अन्दर। फिर देखना उसके चेहरे पर जो हँसी की चमक होगी, उसको महसूस करके देखना, हमेशा ये याद रखो "आप में वो सब है जो आप करना चाहते हो, जो आप बनना चाहते हो, सब कुछ मिलेगा, सब कुछ आपका होगा बशर्ते अगर आप अपना 'खेल' अधूरा ना छोड़ें तो।"

"अगर दिल में कुछ करने का जुनून हो,
और वो करना चाहे तो वो कर जायेगा।"

फिर देखना सब कुछ आपका होगा जो आपका सपना था। बस जरूरत है तो, इसको अपनाने की–

"आप अपनी किस्मत खुद बदल सकते हो,
बस जरूरत है तो उस प्रयास की,
जिसको आपने आखिरी प्रयास कहकर छोड़ दिया

■■■

ऐसा ना सोचा था

– अफसाना
एम.ए. हिंदी

दो सालों से माँ कह रही है, क्यों ना हम केदारनाथ जाएं? पर कभी मेरी परीक्षा तो कभी पापा की व्यावसायिक उथल–पुथल के कारण हर बार कोई ना कोई व्यस्तता रहती ही है। इस बार हम जा रहे हैं। माँ, पापा और मैं। बहुत अच्छा अनुभव होगा यह!

लो! आ गई माँ की आवाज कल से ही माँ हर छोटी–छोटी चीज़ को अपने सामान के साथ बांधने में लगी हुई है। कभी वो मुझे कुछ लाने को कहती है तो कभी पापा को। पापा तो बस इतना ही कहते हैं 'बस अब रहने दो किसी चीज़ की जरूरत होगी तो हम बाहर ही ले लेंगे। अब माँ फिर से आवाज़ लगा रही हैं। ... आज के लिए बस इतना ही। (11 जून, 2013)

आज हम तैयार हैं और बस! घर से निकल कर पहले हम बस अड्डे पहुंचेंगे और अभी–अभी माँ को याद आया। ' अरे! सपना के लिए नींबू नहीं रखे हैं और कुछ गर्म कपड़े भी मैं रखना भूल गई'। माँ वहीं अपना सर पकड़ कर बैठ गयीं फिर पापा बोले, भई! कोई बात नहीं हम बस अड्डे पर कोई इंतजाम कर लेंगे।'' मैंने माँ को परेशान करने के लिए पूछा 'माँ आपने आपातकालीन बक्सा रखा है ना? माँ कुछ देर चुपचाप मेरी शक्ल देखती रहीं और फिर उन्होंने मुझे सामान में से वह बक्सा निकाल कर दिया। 'यह ले इसे अपने बैग में रख ले जरूरत पड़ने पर आसानी से इस्तेमाल कर सकते हैं।

ऐसे ही आपाधापी में हमने बस पकड़ी। अब हम बस से गौरीकुंड तक जाएंगे फिर 14 मील का सफर पैदल ही तय करेंगें। यह बहुत रोमांचित करने वाला अनुभव होगा। अभी रात के 9 बजे हैं और हम अभी भी बस में हैं। हमारे साथ बहुत से लोग और भी हैं, जो केदारनाथ के लिए जा रहे हैं। हमारी पिछली सीट पर एक नवविवाहित जोड़ा है, जो अब हमारे परिवार के सदस्यों के समान हो गऐ हैं। रवि भईया और सरिता भाभी। रवि भईया जब से बस में चढ़े हैं तब से बातें करते जा रहे हैं। माँ, पापा को भाभी का खाना बहुत अच्छा लगा।

यहाँ अब लगभग पहाड़ दिखने शुरू हो गए हैं चारों तरफ हरी–हरी घाटियाँ और पहाड़ों पर चढ़ने की अनुभूति दिल में एक अलग सी हलचल पैदा कर जाती है। (12 जून 2013)

सुबह 5.30 बजे गौरीकुंड पहुंचने के बाद, यहाँ की स्वच्छ हवा में साँस लेकर सारी बस की थकान उतर गई। यहाँ एक छोटा सा ढाबा है। हमने यहीं चाय और नाश्ता किया। पता नहीं यह कैसे हुआ? इस बार मुझे उल्टी नहीं आई बल्कि, माँ पूरे रास्ते परेशान रही। खैर, हमारा इंतजाम काम आया और माँ पूरे रास्ते नींबू पानी, पीती हुई आई। अब वो भी स्वस्थ महसूस कर रही हैं।

हमने पहाड़ों पर सुबह 7.30 बजे करीब चढ़ाई शुरू की और रवि भईया और सरिता भाभी भी हमारे साथ ही चढ़ाई कर रहे हैं। ज्यादा सामान तो हमारे पास था नहीं लेकिन, जो भी सामान था उसको लेकर चढ़ने में बहुत तकलीफ हो रही थी, क्योंकि कहीं सीधी चढ़ाई तो कहीं ढलान। यही पहाड़ दूर से देखने में सुंदर लगते हैं लेकिन, यहाँ रहना बहुत मुश्किल है। अब हमने जो ठान लिया है, वह करना जरूरी है। जितने ऊपर हम पहाड़ पर चढ़ते गये, उतनी ही ठंड बढ़ती गयी। ठंड के मारे बुरा हाल हो गया। चढ़ाई में हमारे साथ और भी बहुत से यात्री थे जो केदारनाथ जा रहे थे। हम भी उनके साथ हो लिए और रास्ता कटता गया।

बीच–बीच में छोटे–छोटे ढाबे थे। वहाँ हमने दोपहर का भोजन किया और शाम 6:30 बजे के करीब रामबाड़ा पहुंचे, जो गौरीकुंड से सबसे करीबी गाँव है। पर यह गाँव जैसा नहीं है। यहाँ बहुत सारे होटल, आश्रम हैं जहाँ यात्री अपनी रात काटते हैं। हम बहुत थक गये थे। हम लोग एक अच्छी नींद लेना चाहते थे, इसीलिए पापा ने बहुत से होटलों में पूछा, पर कहीं हमें कमरे नहीं मिले। फिर रवि भईया हमें एक आश्रम में ले गए, जहां उनके जान पहचान के लोग थे। यहां भीड़ कम थी, हमने अपने लिए कमरे लिए और मैं यहीं बैठ कर अपने पूरे दिन का ब्यौरा लिख रही हूं।

माँ तो कमरे में लेटते ही सो गयीं और पापा भी। रवि भईया और भाभी कुछ देर बाहर टहलने गये हैं। हम बहुत थके जरूर हैं पर कल के लिए उत्साह भी बन रहा है। (13 जून 2013)

थके प्राणी ऐसे सोये, कि 8 बजे से पहले आँख नहीं खुली। पापा और माँ तो पहले ही जाग गये थे और भईया और भाभी तैयार हो रहे थे। जब मेरी आँख खुली तो सूरज की रोशनी एक नये दिन की शुरूआत कर चुकी थी और मुझे अपनी ओर बुला रही थी।

हमें जल्दी ही निकल जाना चाहिए था पर हम 11 बजे से पहले आश्रम से नहीं निकल पाए। केदारनाथ जाने वाली सड़क पर पहुँच कर हम भी यात्री दल के पीछे हो लिए। पहाड़ों पर अब बादलों के छोटे–छोटे दल आसमान में नज़र आने लगे। मैं बारिश का बेसब्री से इंतजार करने लगी क्योंकि इस महाभीड़ में ऊर्जा का स्रोत इतना तीव्र था कि ठंड का कोई नामोंनिशान नहीं था। यहाँ कुछ लोग पैदल तो बूढ़े और बीमार लोग घोड़ों और पालकियों पर जा रहे थे। जो बहुत लुभावना दृश्य था।

तीखी सीधी–चढ़ाई पर हम कई बार गिरे पर हमने एक दूसरे के हाथ पकड़ रखे थे। इसलिए हम बार–बार सँभल जाते थे, जिससे हमें चोट भी कम लगी। अंततः शाम तक हम केदारनाथ पहुँचे इतना सुंदर दृश्य देख दिल खुश हो गया। मंदाकिनी और सरस्वती जैसी नदियों के बीच में, केदारनाथ, समुद्र के बीच एक छोटे से टापू के समान लगता है। यहाँ एक मात्र पुल है जो इसे दूसरे गाँवों से जोड़ता है। पुल से गुजरते ही केदारनाथ में मेले जैसा माहौल लगता है। अब मैं केदारनाथ मंदिर के अन्दर जाने के लिए छटपटा रही थी। पापा ने कहा पहले हम नहा धो लेते हैं और फिर उसके बाद हम मंदिर चलेंगे।

तरो–ताजा हो कर हम मंदिर जाने के लिए निकले। घने काले बादलों के बीच यहाँ का दृश्य इतना विस्मयजनक था कि, विश्वास करना मुश्किल हो रहा था। चारों तरफ साधुओं का झुंड और साथ ही श्रद्धालुओं का मेला। सभी भक्त जन अपनी पूजा का थाल लिए बढ़े जा रहे थे। इस भीड़ में लोगों के चेहरे देख पाना लगभग मुश्किल था। हम भी अपनी आरती का थाल लेकर जा रहे थे। हम जैसे–तैसे भीड़ के प्रवाह के साथ मंदिर के प्रवेश द्वार पर पहुंचे। हिमालय की ऊँची चोटियों से बहती नदियाँ और केदारनाथ एक अद्भुत त्रिभुज का निर्माण करता है। इस भव्य दृश्य को देखकर मन में एक हर्ष उत्पन्न होने लगा।

मंदिर में असंख्य पुजारी थे। हमने आरती की और हाथ जोड़कर प्रार्थना करके भगवान को हमें यहाँ तक सुरक्षित लाने के लिए धन्यवाद कहा। फिर हम बाहर आ गये, यहाँ बहुत तेज बारिश हो रही थी। यह पहाड़ों पर पहली बारिश थी और साथ ही इस साल की पहली बारिश भी। मेरी खुशी और दुगनी हो गयी। हम सब बारिश में भीगते हुए अपने आश्रम पहुंचे। आश्रम में हम कल की तैयारियों में लग गये। (14 जून, 2013)

अगली सुबह जब आँख खुलीं तो पता चला कि कल से मूसलाधार वर्षा के कारण बाढ़ जैसी आशंका बन गई है। अब हम थोड़ा डर गये और जो जरूरी सामान था जैसे– पानी की बोतलें, पैकेट बंद खाना, आपातकाल बक्सा आदि संग्रहित करना शुरू कर दिया। बारिश के कम होने की प्रार्थना करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। सभी लोग अपनी जान बचाने के लिए विभिन्न उपाय करने लगे।

नदियों में उफान इतना तेज़ था कि हर जगह घुटनों तक अचानक से पानी आ गया। और हम आश्रम में दुबके बैठे रहे। मेरी तो चीख निकल गई। उस पानी में कुछ भी विषैला या खतरनाक हो सकता है। इसके बाद हमें वहाँ से बाहर निकाल दिया गया। हम एक–दूसरे का हाथ पकड़कर एक पंक्ति में आश्रम से बाहर निकल रहे थे। इन हालातों को देख कर दुकानदारों ने खाने–पीने की चीजों के दाम बीस गुना बढ़ा दिये थे। इसके बावजूद भी लोग अपना काम चलाने के लिए, छोटे बच्चों के लिए दूध व अन्य खाद्य सामग्री खरीदने में लगे हुए थे।

हर दुकान में जन–सैलाब आ रहा था। हम सब आगे बढ़ रहे थे। तभी एक बच्चा रोता हुआ दिखा। वह पानी–पानी चिल्ला रहा था। मैंने उसे पानी दिया और उसको अपने साथ ले लिया। अब रात होने को थी। हमें एक सहारा रात काटने के लिए चाहिए था। हम पहले मंदिर गये वहां बहुत भीड़ थी कुछ देर वहाँ हम रुके। लोग मंदिर में आते जा रहे थे और देखते–देखते पानी भी बढ़ता जा रहा था। हमें कोई ऊँचा स्थान ढूँढना अतिआवश्यक हो गया था। सौभाग्यवश हमें एक चट्टान दिखी। जो मंदिर के काफी पास थी। हम उस पर चढ़ गये और बैठ गये। हमारे पीछे बहुत से लोग भी वहां आ गये।

पूरी रात वहाँ पानी और ठंड में काटने के बाद जब सुबह हुई तो पानी में तैरते ज्यादातर लोग मर चुके थे। कुछ लाशें हमारी ओर बह कर आ गयी थीं। हम प्रार्थना करने लगे कि भगवान इससे बुरा और कुछ न दिखाना। परंतु किस्मत ने हमारे लिए कुछ और ही सोच रखा था। 16 जून को हमने निश्चय किया कि हम केदारनाथ का पुल पार करेंगे। हम पुल

की ओर बढ़ते जा रहे थे। पानी में तैरती लाशें फूल कर गुब्बारों के समान हो गयी थीं। हम उनको हटा कर आगे बढ़ रहे थे। पहाड़ों ऊपर पानी का एक जलस्रोत था जो बर्फ पिघलने और बारिश की वजह से बहुत भर गया था। नदियों के उफान के कारण वह जल स्रोत फट गया और उसका पानी केदारनाथ को धोता हुआ, पुल तोड़कर अपने साथ सारे होटल और आश्रम बहाकर ले गया। हम एक बड़े से पत्थर के पास से गुजर रहे थे तो हमने उसको पकड़ लिया। परंतु रवि भईया और भाभी का हाथ हमसे छूट गया और वह बहाव के साथ आगे निकल गये। वह बचाओ–बचाओ चिल्ला रहे थे और मैं भी चीख रही थी।

यह हमारे लिए भयानक सपने से भी बुरा था लोग बहाव में बहे जा रहे थे। मलवा लोगों को घायल कर रहा था। पत्थर को पकड़े–पकड़े पैर हाथ शिथिल हो रहे थे और बच्चा भी रोये जा रहा था। बारिश बहुत तेज थी, अब यह पत्थर ही हमारे बचे रहने का एक मात्र सहारा था। ना, हम प्रवाह को काट कर मंदिर जा सकते थे और ना ही पत्थर छोड़ सकते थे। हमसे थोड़ी दूरी पर मलवे में एक छोटा सा समतल स्थान था और थोड़ा ऊंचा भी था। हमने वहाँ जाने का फैसला किया और हम सब हाथ पकड़ कर धीरे–धीरे वहां गये। बारिश भी हो रही थी। वहां जा कर हमें चारों ओर का दृश्य बहुत आसानी से दिख रहा था। चारों ओर पानी के अलावा सिर्फ तैरती लाशें दिख रहीं थीं। हमें बहुत प्यास लगी फिर सबने पानी पीया और कुछ खाया। हम सब को चोटें आईं थीं तो हमने बैंडेट लगा लिए और बारिश कम होने की प्रार्थना करने लगे। पिछली रात से हम सोये नहीं थे परंतु फिर भी नींद का कोई नामोंनिशान नहीं था। बस हम थोड़ा थक गये थे। कभी पानी का प्रवाह तेज होता तो कभी कम। इस प्रवाह के साथ आते लोगों की तरफ हम हाथ बढ़ाते पर वह हमसे दूर निकल जाते।

शाम होने को थी। अब हमारा पानी भी खत्म हो गया था और हमें पता नहीं था कि हमें कितने दिन और ऐसे काटने हैं। हम सब एक दूसरे को पकड़ कर बैठ गये। रात तक वर्षा का प्रवाह कुछ कम होता महसूस हुआ। आंखें बंद होते ही मरे हुए लोगों की आवाजें चिल्लाते हुए नजर आतीं और आंखें खुल जातीं। रात को यह लाशें देखकर ऐसा लगता जैसे वह हमसे मदद मांग रही हों और रोना आ जाता। ऐसा लगता हमें कोस रही हों ये लाशें तुम ने हमारी मदद क्यों नहीं की?

सुबह तक हमारी हालत मरने–मरने जैसी हो गई थी। पीने का पानी समाप्त हो चुका था और हमें भगवान के किसी दूत की जरूरत थी जो हमें यहाँ से कहीं सुखदायी जगह पर ले जा सके। हम एक–पर–एक गिरे पानी–पानी दोहरा रहे थे। अब पानी का स्तर भी कम होना शुरू हो गया था। कुछ होश आया तो यह देख कर हैरानी हुई कि हमारे चारों तरफ मलवे का ढेर था। जिससे हमारी जान बच पाई क्योंकि मलवे के कारण जल प्रवाह कम हो गया था। हेलिकॉप्टर से कोई फौजी सूचना दे रहा था कि अगर कोई जीवित है तो अपना हाथ ऊपर उठा कर हमें संकेत दें। यह आवाज़ सुनते ही हमारे हाथ उठ गये और हम मूर्छितों को उठाकर हेलिकॉप्टर पर बैठाया गया।

आज 19 जून है और हम सपरिवार घर पर हैं। हम बहुत खुशकिस्मत निकले परंतु हर कोई खुशकिस्मत नहीं था। रवि भईया और सरिता भाभी का कुछ पता नहीं चला। यह त्रासदी एक भयानक सपनों की तरह है जिसे भूल पाना बहुत मुश्किल है। मैं आज भी रात को सोते हुए चीख कर जाग जाती हूँ। समाचारों से पता चला 2000 लोग ही बचाव कार्य में बचाये जा सके और कई हजार लोग लापता हैं। यह सब अनुभव डायरी में लिख कर जीवंत हो गये हैं।

■■■

आप मर कर जीना सीख जाएंगे

– हेमन्त बंसवाल
बी.ए. इतिहास (विशेष), तृतीय वर्ष

आप मर कर भी जीना सीख सकते हैं। जी हाँ, यह अंगदान के बारे में हैं। हमने भद्र एवं शिक्षित लोगों को अक्सर इस बारे में बात करने से कतराते हुए देखा है। अतः शिक्षा से इसका कोई सरोकार नहीं है। इसका संबंध आपकी भावनाओं एवं मानवीय गुणों से है। इसलिए दूसरों की वेदना को समझने की आपकी योग्यता एवं उसके अनुसार निर्णय लेने का साहस इस कला को सीखने में सहायक सिद्ध हो सकता है।

अंगदान का विषय सर्वविदित है। जिसमें मृत व्यक्ति के अंगों को, अस्पताल में उसके परिजनों की अनुभूति के साथ, सम्मानपूर्वक निकालकर जरूरतमंद व्यक्ति के शरीर में स्थापित कर दिया जाता है। यह कार्य राष्ट्रीय अंग एवं उत्तक प्रतिस्थापन संस्थान (एन.ओ.टी.टी.ओ) (नोटो) की देखरेख में किया जाता है। इस संस्थान के अंतर्गत हम मरणोपरांत अंगदान के लिए प्रतिज्ञा भी कर सकते हैं। इस सबके बावजूद भारत में अंगदान का प्रतिशत सिर्फ 0.20 प्रतिशत है जो बहुत कम है। देश में लगभग 1,20,000 लोग अंगदान की प्रतीक्षा सूची में शामिल हैं, जो 10 मिनट प्रति व्यक्ति की दर से विस्तारित हो रही है। अंगों की अनुपलब्धता के कारण 25 लोग हर दिन अंगों के इंतजार में दम तोड़ देते हैं। आंखों के संदर्भ में भी ऐसा ही है। कॉर्निया की 2,50,000 की वार्षिक मांग में से सिर्फ 2000 की ही पूर्ति हो पाती है। नेत्रदान जिसमें प्राकृतिक रूप से अथवा अन्य कारण से मृत व्यक्ति जिसे कोई संक्रमित बीमारी ना हो की आंखों से सिर्फ कॉर्निया को सम्मानपूर्वक निकाला जाता है। क्योंकि 95: कॉर्निया प्रत्यारोपण सफल होते हैं। इसलिए यदि सभी मृत व्यक्तियों के नेत्र दान किए जाएं तो 2,50,000 कॉर्निया की वार्षिक मांग को पूरा करना कोई बडी बात नहीं है। बशर्ते हम उस वेदना को महसूस कर पाएं, जो कोई भी नेत्रहीन व्यक्ति अपने जीवन में महसूस करता है। जिसका कभी बयान नहीं किया जा सकता। उसे सिर्फ महससू किया जा सकता है। आज विज्ञान एवं प्रकृति ने हमें यह क्षमता प्रदान की है कि हम किसी के जीवन से ऐसी वेदना को हमेशा के लिए खत्म कर सकते हैं। फिर ना जाने कौन सा प्रोत्साहन हमें अंगदान करने के लिए प्रतिज्ञा करने से रोक लेता है। उन्हें रोक लेता है जो बचपन से नैतिक शिक्षा व निःस्वार्थ सेवा का पाठ अपने परिवार एवं स्कूलों में सीखते आ रहे हैं। क्या हम नहीं चाहते की उन स्वावलंबी लोगों को जो दृष्टिहीन होने के बावजूद जिंदगी के सभी पहलुओं का मुकाबला कर रहे हैं। उन्हें अपनी बहादुरी का सम्मान एवं पुरस्कार मिले?

आपको नहीं लगता कि अपने अंतिम संस्कार के वक्त अपने अंगों व नेत्रों को नष्ट करके हम उन बहादुर लोगों से उनका हक छीन लेंगे जो अंगों की कमी के बावजूद जिंदगी जी रहे हैं।

क्या हमें यह नहीं सिखाया गया है? कि यदि हमारे पास दो रोटियां हों और भूख सिर्फ एक रोटी की है, तो एक रोटी किसी ऐसे को दे दें जिसे इसकी जरूरत है। बजाए इसके कि अपने पास रख कर इसे बासी कर दिया जाए। बांटकर खाना हमें बचपन से ही सिखाया गया है। फादर डेविस चेरामल ने अपनी एक किडनी जीते जी दान कर दी। जिससे एक इन्सान की जान बच गई। क्या इससे बड़ा तोहफा कोई इंसान किसी दूसरे इंसान को दे सकता है? आज वो अंगदान के लिए ही केरल में एक संस्था (किडनी फेडरेशन ऑफ इंडिया) और विश्व भर में अपने भाषणों से अंगदान के लिए लोगों को प्रेरित कर रहे हैं। पहले बताए गए आंकड़ों में से सिर्फ एक व्यक्ति (जो किसी अंग की कमी से जूझ रहा हो) से मुलाकात ही बिना आंकड़ों और बगैर चिकित्सकीय योग्यता के आपको अंगदान का महत्व समझा सकती है।

उससे मुलाकात के बाद आप आई.सी.यू में अपने मृत रिश्तेदार के अंगों को सम्मानपूर्वक आसानी से दान कर पाएंगे। आप खुद व खुद अपने परिवार से अपनी मृत्यु के पश्चात् अपने अंगों को दान करने की इच्छा जाहिर करेंगे। तब आप समझ जाएंगे कि अंगदान मृत्यु के बारे में नहीं है, जीवन के बारे में है। तब आप मृत्यु पर विजय पा लेंगे। आप स्वामी विवेकानन्द के मरणोत्तर जीवन को समझ जाएंगे। आप मर कर भी जीना सीख लेंगे।

■■■

युवा ...... कौन है

– यशवन्त प्रताप यादव
बी.ए. हिंदी (विशेष), द्वितीय वर्ष

युवा वह होता है जिसमें कुछ नया आगाज करने की हिम्मत होती है। युवा वह होता है जो तनावमुक्त होकर जीना जानता है और वर्तमान में जीना जानता है। जो पुरुषार्थ का प्रयोग करना जानता हो, आत्मविश्वास को बढ़ाना जानता हो।

युवा उत्साह और शौर्य के धारक हैं, क्रांति और परिवर्तन के अग्रदूत हैं। युवा न तो वय (परंपरा) की मर्यादाओं में बंध सकते हैं, न शक्ति की सीमाओं में रह सकते हैं। युवा वह जो सब कुछ कर सकता है, युवा वह जो सब कुछ सोच सकता है:–

जिसके लिए बालक अयोग्य है और बुजुर्ग असमर्थ है।

युवा समाज की आशाओं और भविष्य का केन्द्र बिन्दु हैं। हमारी भविष्य निधि हैं और संस्कृति के उन्नायक भी हैं। युवा का अभिप्राय प्रगतिशीलता से है। युवा की शानदार सफलता का राज जिज्ञासा, प्रकृति और प्रयत्नशीलता इसी विशेषता ने उन्हें अनूठा है। और अजेय बना दिया है। युवा किसी के पदचिह्नों के अनुगामी बनने के बजाय स्वयं अपना पथ प्रशस्त करना चाहते हैं। वे जीवन की अनुभूति स्वयं लेना चाहते हैं। युवा हर असंभव को संभव कर सकते हैं। असंभाव्य उनके लिए कुछ भी नहीं है, क्योंकि उनकी प्रज्ञा खड्ग (तलवार) से भी धारदार और पैनी है। शक्ति अमिट है और क्षमता अपरिमित युवा एक शारीरिक अवस्था नहीं है। बल्कि यह एक ऐसा दीपक है जो सूर्य की तरह 12 घंटे नहीं अपितु 24 घंटे प्रकाश देने का साहस रखता है।

"सपनों के साये में इतिहास हमारा पलता है।
जिस ओर जवानी चलती है उस ओर जमाना चलता है।"

"आसमाँ भी नहीं जिनके जद से बाहर
चाँद सूरज भी जिनकी जिद का मान रखते हैं।

युवा को नहीं दे सकती कोई शक्ति अपना आकार इतिहास तो क्या युवा भूगोल भी बदलने की हिमाकत रखते हैं।"

■■■

अंगदान

– हर्षित राज श्रीवास्तव
बी. ए. हिंदी (विशेष), द्वितीय वर्ष

आज का युग विज्ञान का युग है, जिससे भारत देश भी अछूता नहीं है चूंकि विज्ञान प्राचीन काल से चला आ रहा है। वर्तमान में भारत की जो स्थिति है वो काबिले तारीफ है, अर्थात् अब वो समय नहीं रहा जिससे आपको काफी तकलीफों या दिक्कतों का सामना करना पड़े क्योंकि वर्तमान में तो लाईलाज बीमारियों का भी तकनीक से ईलाज संभव होने लगा है। लेकिन गौर करने वाली बात तो यह है कि इतनी तरक्की करने के बावजूद भी कोई देश चाहे वह विकसित हो या विकासशील अभी तक ऐसी तकनीक विकसित नहीं कर पाया है जिससे अंग की क्षतिपूर्ति की जा सके। अर्थात् किसी कारणवश किसी इन्सान के किसी अंग की क्षति हो जाये तो उस अंग की पूर्ति कर सके। शायद यह संभव भी नहीं है। इसके लिए सिर्फ एक ही उपाय है वह है, अंगदान।

भारत जैसे विकासशील देश में जहाँ साक्षरता दर सिर्फ 74% ही हो, ऐसे देश में अंगदान कराना बहुत मुश्किल कार्य है। लेकिन नामुमकिन नहीं है। इसके लिए ज्यादा से ज्यादा लोगों को जागरुक किया जाना चाहिए। साथ ही रेडियो व टेलीविजन की मदद से, नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से अंगदान के महत्त्व को समझाया जाना चाहिए जिससे ग्रामीण तबके के लोगों का यह भ्रम खत्म हो जाये कि अंगदान करने का मतलब मृत शरीर को कब्जे में लेना नहीं है। बल्कि जीवित होने पर उसकी इजाजत ली जाती है और इजाजत के अनुसार मृत्योपरांत सिर्फ उपयोगी अंग को ही सम्मानपूर्वक निकाला जाता है।

दूसरी ध्यान देने वाली बात यह है कि कई लोग इस बात से अनभिज्ञ और अनजान होते हैं कि उनके दान किये हुए अंग एक तरह से पुनर्जन्म को प्राप्त होते हैं तथा साथ ही जरूरतमंद के लिए दान किया व्यक्ति भगवान होता है।

ग्रामीण अंचलों में आज भी यह भ्रामक धरणा लोगों के मन में घर कर गई है कि उनके द्वारा किये गये अंगदान, N.G.O., अस्पतालों का व्यवसाय है। अर्थात् कई लोग इस बात से वाकिफ नहीं हैं कि उनके द्वारा किये गये अंगदान को किसी को बेचा नहीं जाता और न ही अंगदान का पेशा किया जाता है। बल्कि इससे तो सिर्फ जरूरतमंद की मदद की जाती है सिर्फ मदद ही नहीं बल्कि जान तक बचायी जाती है।

देश के प्रत्येक व्यक्ति को इस बात से जागरुक कराना बहुत जरूरी है कि अंगदान करने का मतलब ऐहसान करना नहीं है बल्कि सभी का दायित्व होता है क्योंकि अंगदान सिर्फ आप दूसरों की मदद करने में नहीं करते हैं बल्कि उन दूसरों में आपके अपने भी हो सकते हैं। क्योंकि अंगदान की समस्या किसी विशेष धर्म, जाति, व्यक्ति से जुड़ी नहीं है। यह सामूहिक कर्तव्य है।

परन्तु चाहे केन्द्र सरकार हो या राज्य सरकार न तो इस पर कोई चर्चा करता है और न ही चर्चा करना चाहता है क्योंकि हमारे नेताओं के पास इतना समय ही कहां है कि ऐसे मुद्दे पर बात करें। क्योंकि वर्तमान में अंगदान को लेकर न तो कोई नियम बना है और न ही लोगों को जागरुक किया जाता है। अगर नियम कानून बन भी जाता है तो इससे बहुत बड़ा लाभ नहीं मिलता। जब तक उसे कड़ाई से पालन न किया जाये, या जब तक लोगों को जागरुक न किया जाये।

अतः उपर्युक्त चर्चा से स्पष्ट है कि यदि लोगों को जागरुक किया जाये, अंगदान के महत्व को बताया जाये, तो कईयों की जिन्दगी बचाने के साथ–साथ, देश में दिन दुगुनी रात चौगुनी बढ़ रही मृत्यु दर में कमी लायी जा सकती है। जहां तक मेरा मानना है कि अंगदान को सिर्फ दायित्व ही नहीं बल्कि मौलिक कर्तव्य के रूप में समझना चाहिए। अंत में मैं कहना चहूँगा–

"अंगदान"

"विचार लो कि मर्त्य हो, न मृत्यु से डरो कभी,
मरो परन्तु यों मरो, कि याद तो करे सभी।
यही तो पशुप्रवृत्ति हैं, कि आप आप ही चरे,
वही मनुष्य हैं, कि जो मनुष्य के लिए मरे।"
(मैथिलीशरण गुप्त)

जी हाँ। वास्तव में अगर हम मानवता को परिभाषित करते हैं, तो मनुष्य सच्चे अर्थों में वही है, जो दूसरों के काम आये। अंगदान भी मानवता का ही एक भाग है। अंगदान के जरिए हम किसी को नया जीवन दे सकते हैं। भारत में

0.005: लोग ही अंगदान करते हैं। दाता एवं ग्राही में अंतर बहुत अधिक है, अंगदान जीवन का दान है, जो किसी व्यक्ति को जीने की उम्मीद देता है। 13 अगस्त को हम Organ Donation कंल मनाते हैं।

"Be a Donor, Be a Hero".

भारत के अतिरिक्त अन्य देशों में अंगदान का अनुपात अधिक है। U.S.A. में 25%, न्व्ज्ञ्ण में 30% के करीब है। अंगदान को लेकर हमारे देश में अनेक भ्रांतियाँ फैली हुई है तथा इस प्रकार अंगदान का अनुपात भारत में कम है। 'NOTTO' जैसी संस्था सामाजिक जागरुकता बढ़ाने का काम बखूबी ढंग से कर रही हैं। अंगदान कम होने के पीछे निम्न कारण हो सकते हैं–

1. Social Awareness
2. Religious View
3. Ethical issue.

सामाजिक जागरुकता का न होना, अंगदान कम होने के पीछे का तर्क है, लोगों को इस बात की जानकारी होनी चाहिए कि अंगदान क्या है? और इसके द्वारा कैसे लोगों को बचाया जा सकता है?

धार्मिक दृष्टिकोण की अगर बात करें, तो आज भारतीय समाज में लोगों को धर्म ने जकड़ रखा है। वे यह समझते हैं, कि अगर अंगदान किया, तो अगले जन्म में अंधे होंगे या असक्षम होंगे, आदि परंतु इनको समझना होगा कि और किसी भी धर्म से ऊपर मानवता का धर्म है।

"बच्चे बूढ़े और जवान,
सब धर्मों से ऊपर अंगदान।"

अंगदान मुख्यतः 3 स्तर का होता है–

i) Cardial Death
ii) Brain Death
iii) Living Donor

अंगदान हम कार्डियक मृत्यु पर कर सकते हैं, पर इस condition में केवल 'Tissue' ही donate कर सकते हैं, बाकी दोनों स्थितियों में Organ और Tissue दोनों donate कर सकते हैं।

"इदं शरीरं परोपकारणाय्।"
–शंकराचार्य

यह शरीर परोपकार के लिए है, तथा एक मनुष्य होने के नाते अंगदान करना एक पुण्य का काम है। मृत्यु के बाद हम शव को दफना या जला देते हैं, परंतु अगर हम उनका अंगदान करें तो कितने लोगों के जीवन में खुशहाली आ सकती है। जीवन का सही अर्थ यही है।

"औरों को हंसता देखो मनु,
हँसो और सुख पाओ,
अपने सुख को विस्तृत कर लो
जग को सुखी बनाओ।"

– जयशंकर प्रसाद

जीवन का सुख इसी में है, जब हमारी वजह से किसी को खुशी मिलती है, जीवन जीने का जज्बा एवं एक नवजीवन मिलता है।

इसी के साथ–साथ कुछ लोग इसे **नैतिक मूल्यों** से जोड़कर देखते हैं, कि हमारी नैतिकता यह नहीं है कि हम इस प्रकार का कृत्य करें। समाज में असमानता है, और प्रकृति का नियम यही है। तो यह असमानता, जो ईश्वर प्रदत्त है, उसको कैसे खत्म कर सकते हैं।

निकोलस मेरी ने कहा था–''जिंदगी का सही अर्थ है, किसी को जीवन देना। अंगदान एवं रक्तदान उनमें से एक है।''

अंगदान करना सही अर्थ में एक परोपकार का काम है, ईरान में तो अंगदान का अनुपात अन्य सभी देशों की तुलना में सर्वाधिक है।

सरकार का भी इसमें एक अहम योगदान होना चाहिए जो अंगदान को अनिवार्य करें। अंगदान को सही अर्थों में साकार करने के लिए निम्न उपाय करने चाहिए–

1. सामाजिक जागरुकता बढ़ाकर
2. सरकार का आर्थिक रूप से योगदान
3. रक्तदान आदि को बढ़ावा देना।
4. विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन जागरुकता बढ़ाने के लिए।

अंततः हम यह कह सकते हैं कि अंगदान एक साकार एवं साक्षात् पुण्य, परोपकार एवं मानवता का कार्य है, इससे किसी को नवजीवन मिलता है, एवं एक समर्थ भारत की नींव भी पड़ती है।

अंगदान जीवनदान महादान।

■■■

एनेबलिंग यूनिट एवं छात्र–संघ हंसराज महाविद्यालय के सौजन्य से आयोजित कार्यक्रम 'रोशनी' के अंतर्गत अन्तर्महाविद्यालयी निबंध प्रतियोगिता के पुरस्कृत निबंध।

खामोश

– गुंजन शर्मा
बी.ए. प्रोग्राम गार्गी महाविद्यालय

कमरे की खिड़की से दिखती वो इमारत
रात के अंधेरे में क्या खूब जगमगाई
सभी खिड़कियों में खुशियाँ बिखरी थीं
जिंदगी उमंग से चल रही थी।
तभी नजर पड़ी उस दरीचे पर
खामोश तन्हा और कोई हरकत नहीं
मन में सवाल उठा
कोई रहता नहीं क्या यहाँ
इस खिड़की के चराग बंद क्यों हैं
रहने वाले के ताल्लुकात कम क्यों हैं।
मगर मैं दावे से कहती हूँ
कभी जगमगाया इस खिड़की का भी सितारा होगा
फिर महताब की आरजु में उसे निगाह से
हिज्र–ए–जमाना यूँ ही नहीं अपनाया होगा
तर्ज़–ए–तवाफ्फुल जमाने ने आजमाया होगा
अब, जिस्म दिखा एक मगर खोखला है
बेवजहा हँसता है और दिल खोल कर रोता है
अश्कों की सिसक का इशारा है
वहाँ रहती है वो,
बजम–ए–जात में डूबी एक दरहम लड़की
हाँ वो लड़की मैं हूँ
हाँ वो खिड़की मैं हूँ।

■■■

हिंदी साहित्य परिषद् (हंसराज महाविद्यालय) द्वारा आयोजित अन्तर्महाविद्यालयी स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता की पुरस्कृत कविता

विश्व में हिंदी

– आकाश कुमार सिंह
बी.ए. हिंदी (विशेष), तृतीय वर्ष

भाषा बहता नीर "भाषा तथा पानी किसी एक देश की सीमा में प्रतिबंधित नहीं होते हिंदी भी केवल भारत तक ही सीमित नहीं है। हिंदी आज राष्ट्रभाषा न रहकर विश्वभाषा बन गयी है। विश्व में संख्या की दृष्टि से हिंदी बोलने वालों का स्थान तीसरा है। विश्व के अनेक देशों में हिंदी की शिक्षा विधिवत् रूप से दी जाती है विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी के अध्ययन क्षेत्र को निम्नलिखित रूप में देख सकते हैं–

(क) एशिया महाद्वीपः–

नेपालः– नेपाल में 51 प्रतिशत लोग हिंदी भाषा ही बोलते है। यहाँ त्रिभुवन विश्वविद्यालय में पीएच.डी. स्नातक की व्यवस्था है

चीनः– चीन में 1942 ई. से हिंदी अध्ययन की व्यवस्था है पेइचिंग विश्वविद्यालय स्कूल ऑफ ओरियंटल लेंग्वेजेज एण्ड लिटरेचर दक्षिण एशियाई संस्थानों में हिंदी विधिवत् रूप से पढ़ाई जाती है।

वर्माः– इस देश में गांधी महाविद्यालय तथा 350 हिंदी विद्यालयों द्वारा शिक्षा दी जा रही है।

पाकिस्तानः– लाहौर विश्वविद्यालय, इस्लामाबाद स्कूल ऑफ मार्डन लेंग्वेजेज के माध्यम से स्कूल स्तर तथा स्नातकोत्तर स्तर पर हिंदी अध्ययन की व्यवस्था है।

बांग्लादेशः– ढाका विश्वविद्यालय, इंडिया इंटरनेशनल स्कूल के माध्यम से हिंदी अध्ययन की समुचित व्यवस्था है।

भूटानः– यहाँ के पाँच संस्थानों में हिंदी अध्ययन की पूर्ण व्यवस्था है।

अफगानिस्तानः– यहाँ पर सी.बी.एस.ई. द्वारा संचालित विद्यालयों में हिंदी अध्ययन कराया जाता है।

थाईलैंडः– शिल्पाकोन विश्वविद्यालय भारत विद्या केन्द्र में हिंदी अध्यापन की व्यवस्था है। भारत के अनेक विद्वान यहाँ पर अपनी सेवायें दे चुके हैं।

जापानः– टोक्यो एवं ओसाको के विश्वविद्यालयों में हिंदी का विधिवत् अध्यापन कराया जाता है।

कोरियाः– हांकुक विश्वविद्यालय में हिंदी पढ़ाई जाती है।

फिलीपीन्सः– मनीला विश्वविद्यालय में हिंदी का पाठ्यक्रम विधिवत रूप से कराया जा रहा है।

मंगोलिया, सिंगापुर, बहरीन, कुवैत सऊदी अरब, टर्की, अबूधावी, दुबई, शारजाह आदि स्थानों में हिंदी अध्ययन कराया जाता है।

(ख) यूरोप महाद्वीपः– रूस, चैकोस्लावाकिया, पोलैण्ड, बल्गारिया, युगोस्लाविया, रूमानिया, हंगरी, इंग्लैड, जर्मनी, फ्रांस, इटली, बेल्जियम, आस्ट्रिया, हालैण्ड, स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क या फिनलैण्ड के विश्वविद्यालयों में तथा धार्मिक संस्थानों एवं प्रवासी भारतीयों द्वारा हिंदी का पठन–पाठन, प्रचार–प्रसार किया जा रहा है।

(ग) अफ्रीका महाद्वीपः– दक्षिण अफ्रीका, इथियोपिया, केन्या, लीबिया, मॉरीशस, नाइजीरिया, तंजानिया तथा घाना के विश्वविद्यालयों तथा विभिन्न संस्थानों में हिंदी का अध्यापन होता है।

(घ) अमेरिका महाद्वीपः– अमेरिका के 113 विश्वविद्यालयों में हिंदी शिक्षण की व्यवस्था है पेनसिलवेनिया, कैलिफोर्निया, हारवर्ड, टेक्सास, शिकागो, मिशीगन, होनोलूलू, आदि विश्वविद्यालयों में पीएच.डी स्तर तक हिंदी अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है।

कनाडा, मैक्सिको, क्यूबा में भी हिंदी अध्ययन–अध्यापन की व्यवस्था है।

(ङ) आस्ट्रेलिया महाद्वीपः– आस्ट्रेलिया, न्यूजीलैण्ड, के विभिन्न संस्थानों में हिंदी अध्ययन अध्यापन होता है इसके अतिरिक्त जहाँ भी प्रवासी भारतीय रहते है, उनके आपसी सम्पर्क एवं एकता के सूत्र की भाषा हिंदी ही है। विदेशों में भारतीय फिल्मों के दर्शकों की संख्या करोड़ों में है।

"अहिंसा की भावना से अनुप्राणित रहकर ही प्राणियों पर अनुशासन करना चाहिये।– मनुस्मृति

■■■

– Hari Krishnan

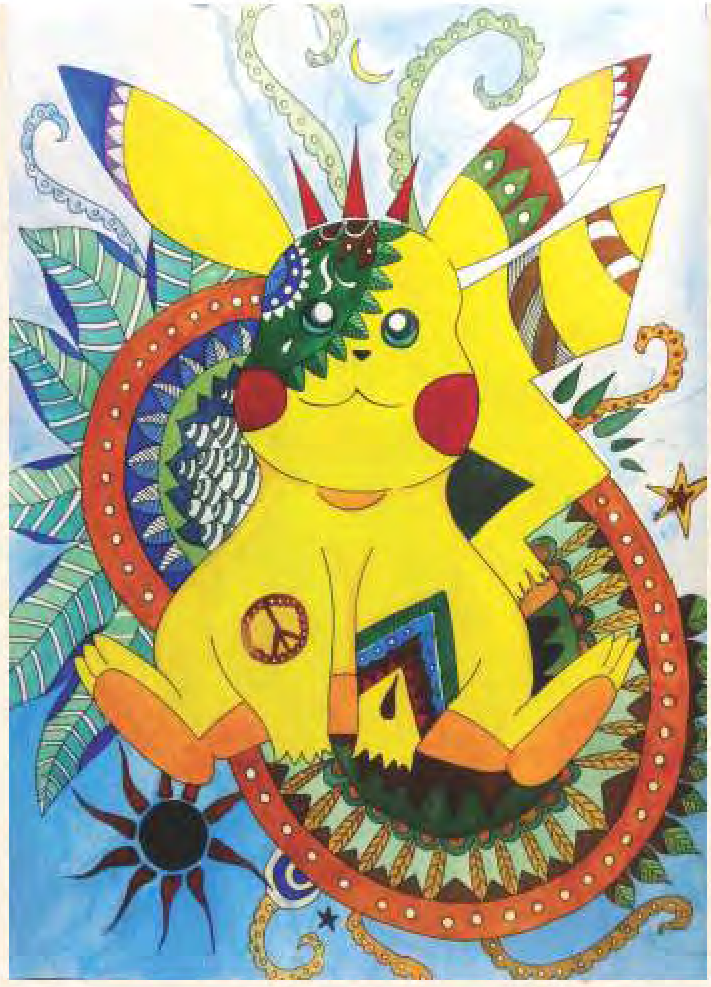

Mix the culture within you and it will change you completely. – Vikas Prajapat

– Aastha Khursija

Wisdom begins in wonder. – Vikas Prajapati

'Woods are dark , brown and deep. But i have many promises to keep.
To go miles and miles before I sleep.' – Rishika Revo

– Hari Krishnan

संस्कृत

संपादक मंडल

- डॉ. रणजीत कुमार मिश्र
- अजीत कुमार

छात्र-संपादक

- अतुल कुमार शुक्ला
- अनुराग त्रिपाठी

विषयानुक्रमणिका

1. आचार्यदेवो भव | अभिषेक पाँचाल | 41
2. अस्माकं भारतीयरत्नाः | अनुराग त्रिपाठी | 41
3. गुरुशिष्यसम्बन्धः | अनुराग त्रिपाठी | 42
4. स्त्रीशिक्षायाः आवश्यकता (स्त्रीशिक्षा) | विभूति आर्या | 43
5. विश्वशान्तिः | शिवांशु अग्निहोत्री | 43
6. अर्बुदरोगे प्लास्टिकवस्तूनां भूमिका | अनुज कुमार | 44
7. पंचतन्त्रम् | पूनम | 46
8. अहिंसा परमो धर्मः | नवल किशोर | 47
9. मानसिकं द्वन्द्वं तत्कारणानि च | निशांत कुमार | 48
10. पुराणानि | बालकृष्ण झा | 48
11. संस्कृतस्य महत्त्वम् | राघव वधवा | 49
12. मानसिकद्वन्द्वस्य मूलकारणं त्रिगुणस्वरूपं च | पवन कुमार | 50
13. जातिप्रथायाः दोषाः | सुजीत कुमार | 50
14. सत्यमेव जयते नानृतम् | सुजीत कुमार | 51
15. भारते शिक्षायाः स्थितिः | अतुल कुमार शुक्ला | 51
16. इदमपि किंचित् | रीतिका, अञ्जली | 54
17. हास्यमञ्जरी | 56
    - कारकविमर्शः | प्रियंका
    - दुःस्वप्नदर्शनम् | सविता
18. कथा मञ्जरी | 56
    - काष्ठिको जलदेवी च | गोविन्द
    - मूलभ्रान्तिः | आनन्दप्रकाश
19. गीतमञ्जरी | 57
    - जङ्गमदूरवाणी | सङ्गीता
    - संस्कृतभाषा | आदित्य
    - मधुरभाषिणी वाणी | अभिषेक पटेल
20. भारतस्य देवालयाः | 59
    - कन्याकुमारीमन्दिरम् | शुभम केसरी
    - तिरुपतिमन्दिरम् | कमल किशोर
21. भ्रष्टाचारः, समस्या समाधानं च | विशाल आर्य | 61
22. परहिताय सर्वस्वं त्यक्तव्यम् | अभिषेक पटेल | 62
23. शनैः शनैः मम जीवने आगच्छ |अतुल कुमार | 63
24. महर्षिदयानन्देन प्रतिपादिता शिक्षा वर्तमानकालिकी शिक्षा च | अजीत कुमार | 63

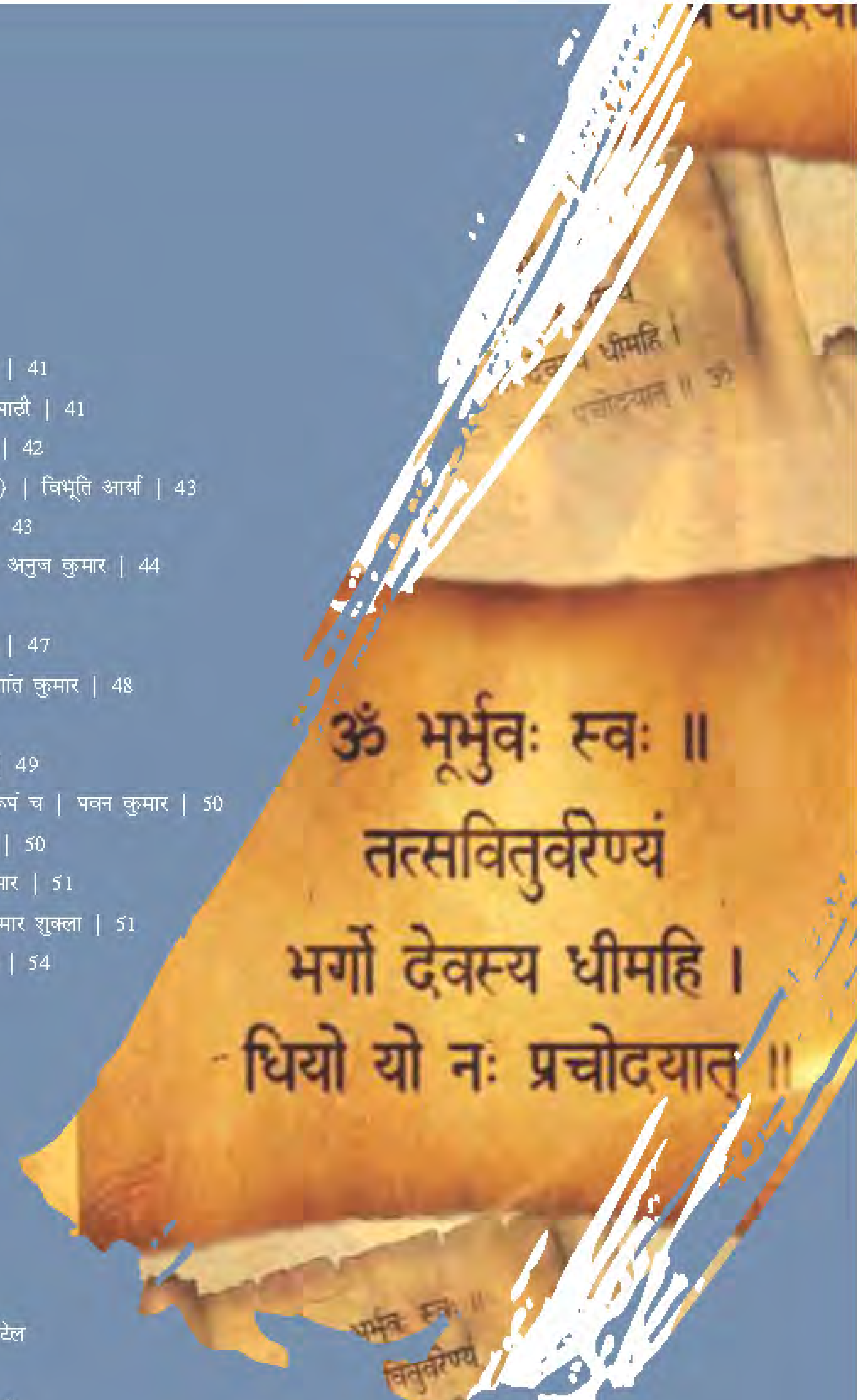

"SQUASH" – Men

FIRST POSITION IN DELHI UNIVERSITY INTER COLLEGE SQUASH CHAMPIONSHIP 2016-17

Name of the Players / Teachers from Left to Right:
Hanifa, Agastya Tiwari, Jamal Sakib, Siddharth Chaudhary, Abhishek Kumar, , Dr. Gaurav, , Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon

"BADMINTON TEAM " – Men / Women

RENNER'S UP IN DELHI UNIVERSITY INTER COLLEGE BADMINTON CHAMPIONSHIP 2016-17

Name of the Players / Teachers from Left to Right:
Tanya Singh, Anushka Gupta, Divya, Ishita Budhiraja, Mehul Kumawat , , Anubhav, , Kushagra Tayal , Kanishk Mishra, Utkarsh Arora, , Akshit Patela, Anant, Dr. Gaurav , Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon.

आचार्यदेवो भव

– अभिषेक पाँचाल
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

भारतीयशास्त्रेषु गुरोर्माहात्म्यं बहु गीतमस्ति। स ईश्वरस्य प्रतिमूर्तिरिति मन्यते। अत एवोच्यते- 'आचार्यदेवो भव' इति। आचार्यो देववत् पूज्यो मान्यश्च। यः शिष्येभ्यो विद्यां ददाति, कर्तव्याकर्तव्यं च बोधयति, सदाचारस्य संयमस्य त्यागस्य तपसश्च शिक्षां ददाति, स आचार्यो गुरुर्वा भवति।

गुरोर्माहात्म्यमेतस्माद् ज्ञायते यद् बालको यदा गुरोः समीपं शिक्षार्थं याति, यज्ञोपवीतं च धारयति, शिक्षां च प्राप्नोति, तदैव स द्विजो द्विजन्मा द्विजातिर्वा भवति। अन्यथा स शूद्र एव भवति। माता पिता च बालकस्य शरीरमेव सृजतः गुरुस्तु तं विद्यया शिक्षया दीक्षया कर्तव्योद्बोधनेन च मनुष्यं करोति। अतो मातुः पितुश्च गुरुः गरीयान् भवति। उक्तं च महाभारते –

> शरीरमेव सृजतः पिता माता च भारत।
> आचार्यशिष्टा जातिः, सा दिव्या सा चाऽजराऽमरा॥१॥
> गुरुर्गरीयान् पितृतो, मातृतश्चेति मे मतिः॥२॥

गुरुः भक्त्या सेवया शुश्रूषया च तुष्यति, आज्ञापालनेन तत्कथानुरूपव्यवहारेण च स प्रीतो भवति। गुरुः यदा प्रीतो भवति, तदा स यत् किंचिदपि जानाति, तत्सर्वं स्वशिष्याय समर्पयितुमिच्छति। अतो विद्याप्राप्त्यै गुरुभक्तेः महती आवश्यकता वर्तते। सत्यमेतदुक्तं च –

> गुरुशुश्रूषया विद्या, पुष्कलेन धनेन वा।
> अथवा विद्यया विद्या, चतुर्थान्नोपलभ्यते॥३॥

न केवलमेतदेव, अपि तु गुरुभक्त्या मनुष्यस्य चतुर्मुखी उन्नतिः भवति। उक्तं च-

> अभिवादनशीलस्य नित्यं वृद्धोपसेविनः।
> चत्वारि तस्य वर्धन्ते, आयुर्विद्या यशो बलम्॥४॥

गुरुभक्त्यैव आरुणिः ब्रह्मज्ञः संजातः, एकलव्यश्च महाधनुर्धरो जातः। गुरुशुश्रूषया गुरुभक्त्यैव च कालिदासादयो महाकवयो जाताः, अन्ये च केचन ऋषयो महर्षयः सिद्धाः कलाविदो विविधशास्त्रविशारदाश्च समभवन्। एष गुरुभक्तेरेव महिमा। ये गुरुभक्तिं न कुर्वन्ति, न वा जानन्ति, तेषां विद्या न जायते, तेषां यशो न वर्धते, तेषां तेजः क्षीयते, शरीरमायुश्चापि क्षयमुपैतिः ये गुरुभक्ता भवन्ति, तेषां विद्या सदा प्रकाशते, तेषां यशश्च प्रथते, तेषां तेजो विराजते, शरीरमायुश्चापि वृद्धिमेति अतः सर्वैः सर्वदा गुरवः पूज्या मान्याश्च।

■■■

अस्माकं भारतीयरत्नाः

– अनुराग त्रिपाठी
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

वैयाकरणः पाणिनिः

महर्षि-पाणिनेः जन्म ईसापूर्वं सप्तशताब्द्यां शलातुरग्रामे अभवत्। अतः

सः 'शलातुरीयः' इति नाम्ना अपि प्रसिद्धः अस्ति। वर्तमानके पाकिस्तानदेशे स्थितः लाहौरनामकः ग्राम एव शलातुरग्रामः आसीत्। पाणिनेः मातु नाम दाक्षी आसीत्। अतएव सः दाक्षीपुत्रः इत्यपि कथ्यते। 'पणिन्' इति तस्य पितुः नाम। अतः तस्य नाम 'पाणिनिः' अभवत्। 'आचार्यः वर्षः' पाणिनेः गुरु आसीत्। पाणिनिः 'तक्षशिला' विद्यापीठे शिक्षां प्राप्नोत्।

पाणिनिः व्याकरणस्य प्रथमः आचार्यः आसीत् यः लौकिकसंस्कृतस्य कृते नियमान् रचितवान्। तस्य व्याकरणग्रन्थः 'अष्टध्यायी' इति नाम्ना ज्ञायते। अस्मिन् ग्रन्थे अष्टसु अध्यायेषु व्याकरणस्य नियमाः नितान्त-वैज्ञानिकरूपेण निबद्धाः। ग्रंथः अयं सर्वाधिकः प्रामाणिकः मन्यते।

चाणक्यः

मौर्यवंशस्य प्रथमः राजा चंद्रगुप्तः आसीत्। तस्य सहायकः चाणक्य आसीत्। चाणक्य, कौटिल्यः नाम्ना अपि प्रसिद्धः। सः भारतस्य प्रथमः प्रसिद्धः कूटनीतिज्ञ आसीत्। तस्य पिता चणकः ब्राह्मण आसीत्। चाणक्यः यौवने तक्षशिलायाम् अपठत्। तत्र सः वेदान् शास्त्राणि नीतिशास्त्रं च अपठत्। चाणक्य 'अर्थशास्त्रं' इति ग्रन्थं च अलिखत्। एकदा चाणक्य मगधनृपस्य धनानन्दस्य समीपम् अगच्छत्। राष्ट्रस्य उद्धाराय सहायतां च अयाचत। किन्तु धनानन्दः तस्य अपमानम् अकरोत्। क्रुद्धः चाणक्यः प्रतिशोधं कर्तुं प्रतिज्ञाम् अकरोत्। तदा सः चन्द्रगुप्तम् अन्विष्य तस्य प्रशिक्षणम् अकरोत्। धनानन्दं पराजित्य चन्द्रगुप्तं मगधस्य सम्राट्पदे स्थापितवान्।

डॉ० ए.पी.जे. अब्दुल कलामः

डॉ० ए.पी.जे. अब्दुलकलाममहोदयस्य जन्म 15 अक्टूबर 1931 तमे वर्षे अभवत्। लोकः तं डॉ. अब्दुलकलामः इति सम्बोधयति। कलामः भारतस्य एकादशमः राष्ट्रपतिः अभवत्। कलामः एकः प्रसिद्धः वैज्ञानिकः आसीत्। कलामः 'विंग्स ऑफ फायर', 'इण्डिया 2020', 'दि न्यू मिलेनियम' तथा 'इनवाइटेड माइण्ड्स्' आदीनि पुस्तकानि अलिखत्। कलामः कुरानग्रंथस्य भगवद्गीतायाः च समानतया अध्ययनं करोति स्म। अपि च डॉ. कलामः भारतसर्वकारस्य सर्वोच्चनागरिकसम्मानेन भारतरत्नेन सम्मानितः। 27 जुलाई 2015 तमे वर्षे ए.पी.जे. अब्दुलकलामः स्थूलशरीरं त्यक्तवान्। परं स्वपुस्तकैः विचारैः च सदा सः अस्माकं मार्गदर्शनं करिष्यति। स अकथयत्–

यदि सूर्येण समं दीप्तिमान् भवितुमिच्छसि तर्हि प्रथमं सूर्येण समं प्रज्ज्वलितः भवेः।

■■■

गुरुशिष्यसम्बन्धः

– अनुराग त्रिपाठी
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

भौतिकताप्रधाने आधुनिकयुगे युवावर्गः तु उद्दण्डः अनुशासनहीनः, स्वार्थान्धः, गुरून् प्रति अश्रद्धालुः च दृश्यते। एतद्विपरीतम् अस्माकमेव प्राचीनभारते गुरु-शिष्य-सम्बन्धः पवित्रः आसीत्।

गु शब्दस्त्वन्धकारे स्याद् रु शब्दस्तन्निरोधके।
अन्धकारनिरोधित्वाद् गुरुरित्यभिधीयते॥

अनेन ज्ञायते यत् गुरुः स्व-ज्ञानालोकेन शिष्यस्य अज्ञानं नाशयति। अन्येषामपि शब्दानां व्युत्पत्तिरिव तस्य अर्थं स्पष्टीकरोति। यथा शासितुं योग्यः इति शिष्यः, विद्याम् अर्थयते इति विद्यार्थी, गुरोः अन्तिकं वसति इति अन्तेवासी।

प्राचीन-शिक्षा-व्यवस्थायाम् अष्ट नव वर्षीयः बालकः गुरुं प्रति गत्वा, तत्र गुरुकुले एव उषित्वा ज्ञानं प्राप्नोति स्म। द्वादश पञ्चदशवर्षाणि यावत् सः परिवारात् समाजात् वा पृथग्भूत्वा वसति स्म। एतस्मिन् सुदीर्घे काले गुरोः शिष्याणां च मध्ये अनेके मानवीय-संबंधाः जायन्ते स्म।

स्वामीसेवक-सम्बन्धः– 'गुरुशुश्रूषया विद्या' इति अवगम्य बालकः सेवा-परिचर्याम्, भिक्षाटनम्, गोचारणम्, समिधाहरणम् इति आदीनि सर्वाणि कार्याणि श्रद्धाभावेन अकरोत्। अनेन तस्य व्यक्तित्वे विनम्रता, ऋजुता, सत्यनिष्ठा, अद्रोहः आदयः गुणा विकसिताः अभवन्।

पूज्यपूजक-सम्बन्धः– 'आचार्य देवो भव' अनया भावनया शिष्यः विद्यां गृह्णाति स्म। ज्ञानम् उत्पादयति अतः गुरुः ब्रह्मा, ज्ञानं पोषयति अत एव गुरुः विष्णुः, दोषान् नाशयति अतः गुरुः देवो महेश्वरः, ब्रह्मविद्यां च ज्ञापयति अतएव गुरुः परब्रह्म अपि वर्तते।

समभाव-सम्बन्धः– 'सह नाववतु, सह नौ भुनक्तु, सह वीर्यं करवावहै' कठोपनिषदः अनेन वचनेन ज्ञायते यत् गुरुशिष्यमध्ये मैत्रीसौहार्दयोः अपि भावः आसीत्।

पितापुत्र-सम्बन्धः– 'वंशो द्विधा विद्यया जन्मना च' अर्थात् शिशुः प्रथमतः मातुः गर्भात् जायते ततः गुरोः विद्यादानात् तस्य द्वितीयं जन्म भवति। गुरु पितृवत् वात्सल्येन शिष्यं संस्कारं ज्ञानं च दत्वा तं समाजस्य उपयोगिसदस्यं करोति। ईदृशः पावनः गुरु-शिष्य-सम्बन्धः वर्तमानशिक्षापद्धतौ विलुप्तः एव। भारतस्य सम्यक् विकासाय सर्वश्रेयस्करी शिक्षा-प्रणाली निर्मापणीया यया अयं पुनीतः सम्बन्धः पुनरुज्जीवितः भवेत्।

■■■

स्त्रीशिक्षायाः आवश्यकता

– विभूति आर्या
बी.ए., संस्कृत, द्वितीय वर्ष

शिक्षा मनुष्ये स्वकर्तव्याकर्तव्यस्य ज्ञानमादधाति। शिक्षयैव जनाः शुभकर्माणि कुर्वन्ति, अशुभानि च परित्यजन्ति। शिक्षिता एव जना देशसेवां राष्ट्ररक्षां राष्ट्रसंचालनं पठनं पाठनं विज्ञानोन्नतिं च कुर्वन्ति। यथा पुरुषेभ्यः शिक्षा श्रेयस्करी वर्तते, तथैव स्त्रीभ्योऽपि शिक्षायाः महती आवश्यकता वर्तते।

स्त्रीणां कृते शिक्षायाः महती आवश्यकता एतस्मात् कारणाद् वर्तते यत् ता एव समये प्राप्ते मातरो भवन्ति। यथा माता भवति, तथैव सन्ततिर्भवति। यदि मातरोऽशिक्षिताः विद्याशून्याः कर्तव्यज्ञानहीनाश्च सन्ति, तर्हि पुत्राः पुत्र्यश्च तथैवाविद्याग्रस्ताः कुशलतारहिताश्च भविष्यन्ति। यदि नार्यः शिक्षिताः सन्ति, तर्हि ताः स्वपुत्राणां पालनं रक्षणं शिक्षणादिकं च सम्यक्तया करिष्यन्ति, एवं तासां सन्ततिः विद्यायुक्ता हृष्टाः पुष्टाः सद्गुणोपेताः च भविष्यति। अत एव महानिर्वाणतन्त्रेऽप्युक्तमस्ति– कन्याऽप्येवं लालनीया, शिक्षणीया प्रयत्नतः।।

विवाहे संजाते कन्याः गृहस्थाश्रमं प्रविशन्ति। यदि पुरुषो विद्वान् स्त्री च विद्याशून्या भवति, तर्हि तयोः दाम्पत्यजीवनं सुखकरं न भवति। विद्याया अभावात् स्त्री स्वकीयं कर्तव्यं सम्यक्तया न जानाति, अतएव बहवो रोगाः व्याधयश्च तत्र स्थानं कुर्वन्ति। अतः स्त्रीणामपि शिक्षा पुत्राणां शिक्षावदेव आवश्यकी वर्तते। स्त्रियो मातृशक्तेः प्रतीकभूताः सन्ति, अतस्तासां सदा सम्मानः करणीयः। यस्मिन् देशे समाजे च स्त्रीणामादरो भवति, स देशः समाजश्चोन्नतिं प्राप्नुतः। उक्तं च मनुना– यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवताः।।

बालिकानां शिक्षा बालकैः सहैव स्यात्, पृथग् वा, इत्येष विषयः साम्प्रतं यावद् विवादास्पदमेवास्ति। स्त्रीशिक्षाया भारते प्रथमं बहुविरोधोऽभवत्। साम्प्रतं स समाप्तप्राय एव। स्त्रीशिक्षायाः काश्चन हानयोऽपि दृश्यन्ते, तासां परिमार्जनं कर्तव्यम्। शिक्षिताः स्त्रियः प्रायोऽधिकं सुकुमार्यो भवन्ति। तासां चेतो गृहकर्मसम्पादने न तथा संलग्नं भवति यथा विलासे आमोदे प्रमोदे च रमते। एतास्त्रुटयः परिमार्जनीयाः। स्त्रीणां सा शिक्षाऽद्यत्वे विशेषतो लाभप्रदा विद्यते, यया ताः गृहकर्मप्रवीणाः कुलाङ्गनाः सत्यः पतिव्रताः साध्व्यो विदुष्यो मातरश्च भवन्ति। यया शिक्षया ताः देशस्य समाजस्य च कल्याणसम्पादने प्रवृत्ताः भवन्ति, सैव शिक्षा हितकारी वर्तते। देशस्य समाजस्य चोन्नत्यै श्रीवृद्धये च स्त्रीशिक्षाऽत्यावश्यकी वर्तते।

■■■

विश्वशान्तिः

– शिवांशु अग्निहोत्री
बी.ए., संस्कृत, प्रथम वर्ष

प्राणिनः स्वभावतः सुखं दुःखाभावं च कामयन्ते। एतदर्थमेव सर्वं कार्य-कलापं कुर्वन्ति। नानाविधव्यवसायद्वारा धनोपार्जनं विधाय अन्नवस्त्र-भवन-शिक्षण- मनोरञ्जनादिसाधनैः सुखम् अनुभवन्ति।

परन्तु कस्यचित् सर्वविधलौकिकसुखसाधनानां सत्यपि सुखानुभूतिर्न भवति। कश्चिच्च लौकिकसाधनानाम् अभावेऽपि सुखी विचरति। तत्र जिज्ञासोदेति लौकिकसामग्रीसत्त्वेऽपि सुखं कथं न जायते। तत्रैवमेव कथयितुं शक्यते, यत् सुखानुभूतये बाह्योपकरणातिरिक्तमपि कारणम् अस्ति, यदभावेन सुखानुभूतिर्न जायते। तत्किमलौकिककारणमिति जिज्ञासायां शान्तिः एव सर्वसुखानां मूलं कारणम् इति प्रतिभाति। अत एव भगवता श्रीकृष्णेन गीतायाम् उक्तम् – 'अशान्तस्य कुतः सुखम्' इति तत्र व्यष्टिशान्त्या समष्टिशान्तिः, समष्टिशान्त्या व्यष्टिशान्तिः भवति परस्परम् उभयोः सम्बन्धात्। अस्माकं शरीरस्य कश्चित् अवयवो यदि रोगाक्रान्तो भवति तर्हि तत्प्रभावः सम्पूर्णे एव शरीरे भवति। अत एव विश्वशान्तयेऽस्माकं वेदाः, उपनिषदः मार्गं वेदयन्ति। अस्माभिः इदं विचारणीयम् अस्ति यद् विश्वशान्तिः कथं भवेत्? विश्वशान्तये प्रथमं मानवानां हृदये एकात्मभावनाया आवश्यकताऽस्ति। जगति ये मानवाः अन्ये वा प्राणिनः सन्ति ते ममात्मस्वरूपा एव अहञ्च तेषामिति। येन सर्वोदयो भवेत् विश्वस्य कल्याणं भवेत् सैव वास्तविकी शान्तिः।

विश्वबन्धुत्वभावनयैव शान्तिर्भवेत्। मानवानां कृते शिक्षाया अतीवमहत्त्वमस्ति। यादृशी शिक्षा प्राप्यते तदनुसारमेव आत्मनि संस्कारो जायते। अतः शिक्षाप्रणाल्यां विश्वबन्धुत्वभावनोत्पादकशास्त्राणां सन्निवेश आवश्यकः। मानवानां यादृशी शिक्षा भवति तादृशी एव भावना अपि भवति। अतः शिक्षापद्धतौ वेदानामुपनिषदां च समावेश आवश्यकः। उपनिषत् प्रतिपादयति –

ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्।
तेन त्यक्तेन भुञ्जीथाः मा गृधः कस्य स्विद्धनम्॥

अर्थात् समस्तमेव जगत् ईश्वरेण परमात्मना आच्छादितम् अस्ति, कस्यापि धनमन्यायेन न अपहरणीयम्। गीतायामपि भगवतोक्तम् –

सर्वभूतेषु चात्मानं, सर्वभूतानि चात्मनि।
ईक्षते योगयुक्तात्मा सर्वत्र समदर्शनः॥

सम्प्रति भौतिक-विज्ञानस्य विध्वंसभयोत्पादकत्वेन सर्वे देशाः परस्परं शङ्कमानाः भीतिमापन्नाः सन्ति। अस्माकं देशनेतारो महात्मगान्धि-नेहरू- राजेन्द्रप्रसादादयो विश्वशान्तये लोकानां समक्षं सत्याहिंसामार्गाश्रयणस्य सन्देशं ददुः। अयं पन्थाः सर्वश्रेयस्करः। सत्ये नास्ति भयं क्वचित् इति। अहिंसावादस्य प्रचारे सति आक्रमणं सर्वथा स्वयमेव अवरुद्धं स्यात्। महात्मा बुद्धः, सम्राट् अशोकः, अन्ये च सज्जनाः विश्वशान्तये सत्याहिंसाप्रचारमतिशयेन अकुर्वन्।

यद्यपि सम्प्रति संयुक्तराष्ट्रमंचः सुरक्षापरिषदि विश्वशान्तये चेष्टते तथापि शान्तिस्थापना न दृश्यते। अतस्तदर्थं मानवानां हृदयपरिवर्तनस्यावश्यकताऽस्ति। आध्यात्मिकभावना समुपासनीया अस्माभिः। तदैव घृणा, द्वेषः, तुच्छभावनाश्च नश्येयुः। विश्वशान्तयेऽस्माकमृषीणामुद्घोषोऽस्ति –

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग् भवेदिति॥

सांप्रतमपि शंकराचार्य-करपात्रि-गङ्गेश्वरानन्दादयो महात्मानो विश्वशान्तये अस्माकं देशस्य विभिन्न-भागेषु विश्वशान्तियज्ञान् कारयन्ति। वयं च विश्वशान्तये जगदीश्वरं प्रार्थयामहे यत् वयं यथावसरं कृतसंकल्पाः भवेम, येन वसुधैव कुटुम्बकमिति सत्यं स्यात्।

■■■

अर्बुदरोगे प्लास्टिकवस्तूनां भूमिका

– अनुज कुमार
एम.ए., संस्कृत, पूर्वार्द्ध

सर्वेषामपि विदितमेव यत् इदं शरीरं जीवकोषनामकैः (बमससे) सूक्ष्मघटकैः निर्मितं वर्तते इति। शरीरस्य वर्धने क्षुण्णस्य क्षीणस्य वा भागस्य वर्धने एतेषां जीवकोषाणां संख्यायाः वृद्धिरेव कारणम्। जीवकोषाणां वृद्धिं शरीरे उत्पद्यमानाः 'स्रावकाः' नियन्त्रयन्ति। स्रावकैः जीवकोषाणां वृद्धिः न नियन्त्र्येत चेत् जीवकोषाः वर्धित्वा मांसग्रन्थिम् उत्पादयेयुः। जीवकोषाणाम् एषा अनियन्त्रिता वृद्धिरेव 'अर्बुद्' (Cancer) इत्युच्यते।

वैद्याः अर्बुदरोगस्य निवारणार्थं 'रासायनिक-चिकित्सा' (Chemotherapy) इति किञ्चन चिकित्सा विधानम् अनुसरन्ति। अस्यां चिकित्सायां रासायनिक-द्रव्याणि ग्रन्थिस्थाने प्रवाहयित्वा अर्बुदकणान् नाशयन्ति। अपरापि 'विकरणचिकित्सा' नाम्नी चिकित्सया (Radiation therapy) अर्बुदरोगग्रस्ताः जीवकणाः नाश्यन्ते। किन्तु एतादृशीनां चिकित्सानां परिमितिं विशदीकुर्वन् जॉन्सहाप्किन्सवर्यः (Johns Hopkin) अधोलिखितान् अंशान् वदति।

(१) सर्वेषामपि मानवानां शरीरे अर्बुदरोगग्रस्ताः जीवकणाः भवन्त्येव। यदा ते अर्बुदकणाः कोटिशः संख्यया वर्धेरन् तदा उपकरण-द्वारा तेषाम् अस्तित्वं ज्ञायते। चिकित्सायाः परमपि सर्वेऽपि अर्बुदकणाः नाशिताः इति वैद्यानां कथनस्य अयम् अर्थः यत् ते कणाः न्यूनसंख्याकाः इत्यतः उपकरणैः परीक्षणेन अपि ते दृष्टिगोचराः न भवन्ति इति।

(२) रासायनिक-चिकित्सया विकिरणचिकित्सया वा वर्धमानाः अर्बुदकणाः यदा नाश्यन्ते तदा अस्थिरज्जौ (Bone-morrow) विद्यमानाः जठरस्य आन्त्रस्य (Intestine) वा अन्नगमनमार्गे च विद्यमानाः स्वस्थाः अपि कणाः नश्यन्ति येन पित्तकोषः (Liver) मूत्रकोषः (Kidney) हृदयं पुप्फुसः (Lungs) इत्येतेषाम् अंगानां हानिः जायते।

(३) प्रथमवारं क्रियमाणायां चिकित्सायां रासायनिक द्रव्याणि विकिरणाः वा अर्बुदग्रन्थिं नाशयेयुः परं पौनः-पुन्येन चिकित्सायां कृतायां प्रभावं न जनयेयुः।

(४) रासायनिकचिकित्सायाः विकिरणचिकित्सायाः च कारणात् अर्बुदकणाः प्रबलाः भवन्ति, येन पश्चात् चिकित्सया तेषां नाशनमपि कष्टेन स्यात्। शस्त्र-चिकित्सायां कृतायामपि अर्बुदकणाः शरीरस्य अन्येष्वपि भागेषु संक्रामेयुः।

(५) यदा शरीरे रासायनिकचिकित्सया विकिरणेन वा उत्पन्नानां विषकणानां प्रमाणम् अधिकं भवेत् तदा रोगाणां रोधव्यवस्था दुर्बला भवेत् कदाचित् नश्येत् अपि, येन शरीरम् अनायासेन सूक्ष्मजीविभिः आक्रान्तं स्यात्।

(६) मनुष्यस्य जीवितावधौ षड्वारं दशवारं वा अर्बुदकणाः जायन्ते। यदा मनुष्यस्य शरीरे रोगनिरोधकव्यवस्था प्रबला भवेत् तदा तद्द्वारा एव अर्बुदकणाः नश्येयुः तेषां वृद्धिरपि स्थगिता भवेत्।

(७) अर्बुदकणानां वर्धनार्थं ये पोषकांशाः अपेक्षिताः तेषां निवारणमेव अर्बुदरोगस्य निवारणस्य सरलोपायः तद्यथा –

अ) मधुमेहिनः शर्करायाः पर्यायरूपेण 'आस्पार्टेम्' युक्तं (Aspartame) यत् सेवन्ते तस्य निवारणम्। नैसर्गिकस्य 'मनुका'- नामकस्य मधुप्रभेदस्य 'मोलेसस्' नामकस्य (डवसेंमे) सस्यजन्यपदार्थस्य वा सेवनं च।

आ) रासायनिकैः श्वेतीकृतस्य लवणस्य वारणं सैन्धवलवणस्य सेवनं च।

इ) दुग्धे अर्बुदकणानां पोषकस्य 'म्यूकस्'- नामकस्य पदार्थस्य आधिक्यं भवति इत्यतः दुग्धस्य वारणम्, पर्यायरूपेण सोयाबीन् निर्मितस्य दुग्धस्य सेवनं च।

ई) केफिनयुक्तस्य (Caffeine) काफी, चायं, चाकलेहः इत्यादेः निवारणं, शोधितस्य जलस्य सेवनं च।

उ) आम्लीये परिसरे (Acidic Environment) अर्बुदकणाः पुष्यन्ते इत्यतः आम्लीय गुणयुक्तत्वात् मांसाहारस्य वारणं एवं क्षारपरिसरे अर्बुदकणाः नश्यन्ति स्वस्थाश्च कणाः वर्धन्ते इत्यतः धान्यशाकबीजफलादीनां सेवनं च।

अर्बुदरोगस्य निवारणे जान्स्हाप्किन्स्वर्येण प्लास्टिकसम्बद्धाः अपि केचन अंशाः उक्ता तथा हि –

- 'डयोक्सिन्' नामकः रासायनिकपदार्थः अर्बुदरोगं, तत्रापि विशेषतः स्तनार्बुदं जनयति। प्लास्टिक्कूपीषु जलं पूरयित्वा शीतके स्थापनेन प्लास्टिकमध्ये विद्यमानं डयोक्सिन् बहिः निष्क्रांत भवति।
- डॉ. एड्वर्ड्फुजिमोटोवर्यः वदति यत् प्लास्टिक पात्रेषु आहारं संस्थाप्य मैक्रोवेव्द्वारा न उष्णीकरणीयम्। यतो हि मेदसः, उष्णतायाः प्लास्टिकपदार्थस्य च संयोगेन डयोक्सिन् बहिः निष्कासितं भवेत्, पश्चात् आहारेण सह संयुज्य कोषकणान् प्रविशेत् च। अतः अस्य पर्यायरूपेण काचमयेषु मृन्मयेषु वा पात्रेषु आहारं संस्थाप्य उष्णीकरणम् उचितम्। तच्च हानिं विना समानमेव फलं जनयति।
- सद्योनिर्मिताः आहारपदार्थाः (Fast Food) प्लास्टिक स्यूतैः सह यदि क्रीणीयुः तर्हि सपद्येव ततः निष्कास्य पात्रान्तरे संस्थाप्य उष्णीकरणीयम्।

प्लास्टिकावरणानि उपयुज्य आहारपदार्थानां पाचनेन अपि विषपदार्थाः आहारेण सह संयुक्ताः भवेयुः। यावत् शक्यं प्लास्तिकनिर्मितानि वस्तूनि निवार्य काचस्य मृदः वा पात्राणां उपयोगः अर्बुदरोगस्य निवारणे महत्पात्रं वहति इत्यत्र नास्ति सन्देहः।

■■■

पञ्चतन्त्रम्

– पूनम
बी.ए. संस्कृत, द्वितीय वर्ष

संस्कृत-कथा-ग्रन्थेषु पञ्चतन्त्रस्य स्थानं सर्वाधिकं महत्त्वपूर्णम् अस्ति। एषः ग्रन्थः न केवलं भारते एव अपितु अन्येषु देशेषु अपि बहु प्रचलितम् अस्ति। एतस्य अनुवादः विश्वस्य बहुभिः भाषाभिः अभवत्। पञ्चतन्त्रं हितोपदेशग्रन्थस्य रचनायाः आधारः अपि अस्ति। पञ्चतन्त्रस्य लेखकः पण्डित-विष्णुशर्मा अस्ति। पञ्चतन्त्रस्य पञ्चतन्त्राः (भागाः) सन्ति। प्रमाणानां आधारेण एतत् सिद्धम् अस्ति। यत् एतस्य ग्रन्थस्य रचना-समाप्तिः यदा अभवत् तदा विष्णुशर्मा अशीतिः वर्षस्य आसीत्। यद्यपि एतस्य रचना कस्मिन् काले अभवत् किमपि प्रमाणं न अस्ति तथापि विदुषां मतानुसारेण एतस्य रचनाकालः 'तृतीय शताब्दी' स्वीकृतः।

पञ्चतन्त्रम् एकः उत्तमः ग्रन्थरत्नम् अस्ति। एतेन ग्रन्थेन लघु लघु बालकान् संस्कृतभाषायाः ज्ञानं बहु सरलतया कारयितुम् शक्यते। एतस्मिन् ग्रन्थे लघु-लघु रोचकाः कथाः सन्ति। एषः ग्रन्थः लोकव्यवहारं सम्यक्तया बोधयति। पञ्चतन्त्रस्य सर्वाः कथाः बहु रोचकाः सरलाः सुबोध-भाषायां च सन्ति अतः बालकाः एतम् प्रेम्णा पठन्ति। आसां कथानां माध्यमेन बालकाः संस्काराणां उपदेशं अपि प्राप्नुवन्ति अपि च संस्कृतभाषायाः संस्कारं परिचयं च प्राप्तुम् शक्नुवन्ति। एतस्मिन् न केवलं ज्ञानस्य अपितु पुरुषार्थसम्बन्धिनः श्लोकाः अपि सन्तिः। यथा –

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी-
दैवं हि दैवमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्मशक्तया
यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोषः।।

उपदेशविषये श्लोकाः –

उपदेशो हि मूर्खाणां प्रकोपाय न शान्तये।
पयः पानं भुजंगानां केवलं विषवर्द्धनम्।।
मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्ठवत्
आत्मवत्सर्वभूतानि वीक्षन्ते धर्मबुद्धयः।।

संगतिविषये श्लोकः

मृगा मृगैः संगमनुव्रजन्ति
गावश्च गोभिस्तुरगास्तुरङ्गैः
मूर्खाश्च मूर्खैः सुधियः सुधीभिः
समानशीलव्यसनेन सख्यम्।।

बुद्धिविषये श्लोकम्

बुद्धिर्यस्य बलं तस्य निर्बुद्धेस्तु कुतो बलम्।
पञ्चतन्त्रस्य मित्रसम्प्राप्तिभागे विपत्तिसमये मित्रमेव सहायतां करोति। एतस्मिन् विषये एकः श्लोकः उक्तः

सर्वेषामेव मर्त्यानां व्यसने समुपस्थिते।
वाङ्मात्रेणापि साहाय्यं मित्रादन्यो न संदधे।।
सुहृदो भवने यस्य समागच्छन्ति नित्यशः।
चित्ते च तस्य सौख्यस्य न किञ्चत्प्रतिमं सुखम्।।

एतस्य ग्रन्थस्य अनुवादः सर्वप्रथमं ईरानदेशे '550 ई.' मध्ये अभवत्। एतस्मिन् संदर्भे एका कथा अस्ति तस्यां 'पञ्चतन्त्रम्' संजीवनी इति उक्तम्। एकस्याः प्रचलितकथायाः अनुसारेण ईरानस्य सम्राट् 'खुसरोः' मंत्री राजवैद्यः च पञ्चतन्त्रम् अमृतम् अवदताम्। ईरानस्य राजवैद्यः कस्मिञ्चन पुस्तके एतत् पठितवान् यत् भारते एका संजीवनी बूटी अस्ति तेन माध्यमेन मूर्खाः जनाः अपि विद्वांसः भवितुम् शक्नुवन्ति। तदा सः राजवैद्यः भारतम् आगत्य, संजीवनीबूटीं सर्वत्र पश्यन् आसीत् तदा राजवैद्यः एकम् विद्वांसम् 'संजीवनी बूटी' विषये पृष्टवान्। तदा सः विद्वान् उक्तवान्-भारतदेशे एका संजीवनी न अस्ति, अत्र बहवः पर्वताः सन्ति तत्र बहवः संजीवन्यः सन्ति किंतु अस्माकं पार्श्वे एकः ग्रन्थः अस्ति 'पञ्चतन्त्रम्'। पञ्चतन्त्रं पठित्वा मूर्खः व्यक्तिः अपि विद्वान् भवति। एतत् श्रुत्वा सः 'ईरानी राजवैद्यः' प्रसन्नः अभवत् तथा च एकं

पञ्चतन्त्रं स्वीकृत्य ईरानदेशं प्रति गतवान्। तत्र गत्वा सः पञ्चतन्त्रस्य अनुवादः 'पहलवी' भाषायां कृतवान्। पञ्चतन्त्रस्य सर्वप्रथमं अनुवादः ईरानदेशे 'पहलवी' भाषया एव अभवत्। अनन्तरम् पञ्चतन्त्रस्य अनुवादः 'लोरियाई' भाषायां अपि कृतः एतत् संस्करणं '570 ई.' मध्ये आगतम्।

अष्टम्यां शताब्द्यां पञ्चतन्त्रस्य पहलवी अनुवाद-आधारेण 'अब्दुलाइन्तछुएमुरक्का' नाम्ना एतस्य ग्रन्थस्य अरबी-अनुवादः कृतः। अरबी-भाषायाम् एतस्य ग्रन्थस्य नाम अस्ति- 'मौल्ली व दिमन'। एषः ग्रन्थः अद्यापि अरबी भाषायाः महत्त्वपूर्णः ग्रन्थः अस्ति। 'एकादश-शताब्द्यां' पञ्चतन्त्रस्य अनुवादः यूनानी भाषायां अभवत्।

• '1251 ई.' मध्ये एतस्य अनुवादः स्पेनिश भाषायाम् अभवत्। एतावत् एव न अस्यानुवादः हिब्रू भाषायां अपि अभवत् या विश्वस्य प्राच्यासु भाषासु एका भाषा अस्ति। 'हिब्रू' भाषायां यदा पञ्चतन्त्रस्य अनुवादः अभवत् तदा एतस्य महत्वः इतोऽपि अधिकः जातः।

• '1260 ई.' मध्ये इटली देशस्य कपूआनगरे निवसन् एकः विद्वान् 'यहूदी' पञ्चतन्त्रं अपग्त् तेन 'लैटिन' भाषायां अनुवादं कृत्वा देशनिवासिभ्यः उपहारस्वरूपं एतत् दत्तम् तथा च तेन उक्तम् 'साहित्य ज्ञानवर्धनाय', मनोरंजनाय च एतस्य अपेक्षया कोऽपि ग्रन्थः न शक्नुयात्।

• '1570 ई.' मध्ये 'सर टामस नार्थः' द्वारा एतस्य प्रथमः अनुवादः कृतः, यस्य प्रथमं संस्करणं बहु सफलम् अभवत् तथा च '1601 ई.' मध्ये एतस्य द्वितीयसंस्करणं प्रकाशितं जातम्।

• '1970 ई.' मध्ये पञ्चतन्त्रस्य हिन्दी भाषायाम् अनुवादः जातः। पञ्चतन्त्रस्य हिन्दी अनुवादः साहित्यजगति बहु सफलं जातम्।

नीतिविषयेषु एतस्य बहुमहत्त्वं अस्ति। अतः अन्यासु भाषासु एतस्य अनुवादः जातः। अन्येषु देशेषु अपि पञ्चतन्त्रस्य नीति-विषयेषु महत्त्वं स्वीकृतं वर्तते।

■■■

अहिंसा परमो धर्मः

– नवल किशोर
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

हिंसा लोकेन विद्विष्टा, हिंसा धर्मक्षयावहा।
अहिंसा परमा शक्तिः, अहिंसा परमं तपः।।
अहिंसया जितो लोकः हिंसा लोकैस्तु निन्दिता।
अहिंसाश्रितजनाः नित्यम् ऋद्धि सिद्धि समन्विताः।।

अस्मिन् भारतवर्षे प्राचीनकालादेव अहिंसायाः महत्त्वं मन्यते। सर्वेषु सम्प्रदायेषु धर्मेषु वा अहिंसायाः महत्त्वं वर्ण्यते। सामान्यतः जनाः प्राणीहननं हिंसा रूपेण मन्यन्ते, मनसा, वाचा, कर्मणा नैवं कस्यापि अहितचिन्तनं, कटुभाषणम् अप्रियम् आचरणमेव हिंसा भवति, सत्यब्रह्मचर्यादीनां सर्वेषां सद्गुणानां मूलम् अहिंसा एव अस्ति। अहिंसा एवं धर्ममार्गः सर्वोत्कृष्टगुणः मोक्षसोपानञ्च वर्तते।

अस्मिन् संसारे नैव कोऽपि एतादृशो धर्मप्रवर्तकोऽभवत् येन अहिंसायाः उपदेशः न कृतः सर्वैः एव अहिंसायाः आवश्यकता स्वीक्रियते। आचार्य मनुनापि स्वविरचितायां स्मृतौ दशसु धर्मलक्षणेषु सर्वप्रथमम् अहिंसायाः परिगणनं कृतं विद्यते। एवं चातुर्वर्ण्यार्थम् अहिंसायाः महत्त्वम् उपस्थाप्यते।

> अहिंसा सत्यमस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः।
> एवं सामासिकं धर्मं चातुर्वर्ण्येऽब्रवीन्मनुः।।

कोऽपि जनः हिंसां हिंसया शमीकर्तुं न शक्यते, किन्तु अहिंसया एव हिंसायाः उपरि विजयी भवति मानवः। विश्वप्रसिद्धमेतत् यत् बलशालीनां आङ्ग्लशासकानां समक्षे हिंसया किमपि भवितुं न शक्यते स्म, किन्तु अहिंसायाः पुरतः तैरपि समर्पणं कृतम्, भगवता बुद्धेन अहिंसायाः महान् प्रचारः विहितः, अस्माकं शास्त्रेषु आततायिनां वधव्यवस्था विहिता दृश्यते। वैदिककाले 'वेन' अस्योदाहरणम् अस्ति। आततायी सञ्जाते तस्य ऋषिभिः मिलित्वा वधः कृतः।

अस्माकं समाजे सदैव आचारवन्तः सम्मानं लभन्ते ये आचरणविहीनाः सञ्जाताः तेषां वधेऽपि नैव कोऽपि दोषोऽस्ति। अद्य सर्वतोऽपि विश्वे हिंसायाः प्रभावः दृश्यते सम्पूर्णा मानवता चित्कारोति तेषां समक्षे, एतादृशि समये अहिंसाया उपदेशः खलु अवलम्बोऽस्ति।

अतः सर्वैः जनैः अहिंसायाः पालनम् अवश्यमेव करणीयम्।

> अहिंसासत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम्।
> दयाभूतेष्वलौलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम्।।

■■■

मानसिकं द्वन्द्वं तत्कारणानि च

– निशांत कुमार
बी.ए., संस्कृत, प्रथम वर्ष

इन्द्रियाणां माध्यमेन गृहीतानां विषयाणां मनसि अत्यधिकं संग्रहात् मनसः संकल्पविकल्पात्मकस्वरूपत्वाच्च विषयाणां पदार्थानां वा हानोपादानविषये मनसि अन्तःकरणे वा प्रवर्तमानः अन्तर्कलहः 'मानसिक' कथ्यते। मुख्यरूपेण मनसि उपस्थितस्य अन्तर्द्वन्द्वस्य कामक्रोधलोभमदमोहेर्ष्याद्वेषमात्सर्याख्यानि अष्टकारणानि भवन्ति। एतेष्वपि कामः सर्वप्रमुखं कारणमत एव गीतायां स मनुष्यस्य महान् शत्रुः कथ्यते –

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।
महाशनो महापाप्मा विद्ध्येनमिह वैरिणम्।।

इह कामः तदुत्पन्नौ क्रोधलोभौ चापि ब्राह्मणवसिष्ठन्यायेन मानसिकस्य अन्तर्द्वन्द्वस्य कारणे उक्ते यैः मनुष्यः दुःखरूपं नरकमाप्नोति।

त्रिविधं नरकस्येदं द्वारं नाशनमात्मनः।
कामः क्रोधस्तथा लोभस्तस्मादेतत् त्रयं त्यजेत्।।

यद्यपि अस्य कामस्य इन्द्रियाणि मनो बुद्धिः त्रीण्यपि अधिष्ठानानि उच्यन्ते परन्तु एतेष्वपि मनः एव प्रमुखं आश्रयस्थानं वर्तते यतः विषयान् पदार्थान् वा प्राप्तुमिच्छा (कामः) मनसि एव उत्पद्यते। अतएव श्लोके उक्तं यत् 'रजोगुणसमुद्भवः काम' इति।

अस्याभिप्रायोऽयं यत् मानसिकद्वन्द्वस्य कारणभूतस्य कामस्यापि कारणं रजोगुणः वर्तते। अतः मानसिकद्वन्द्वस्यापि मूलकारणं रजोगुणः एवास्ति। वस्तुतः मनसा विषयाणां ध्यानेन मानसिकस्य द्वन्द्वस्य प्रक्रिया आरभ्य। यदा मनुष्यः विषयाणां ध्यानं करोति तद्विषये चिन्तयति वा यत् कियत् सुन्दरं रूपम्? कीदृशः वाङ्माधुर्यम्? अहो! कियत् स्वादिष्टः सः मोदकः इत्यादि तदा तस्य मनुष्यस्य मनसि तेषु तेषु विषयेषु आसक्तिः जायते। आसक्त्या तद्विषयमाप्तुं कामना इच्छा मनसि उत्पद्यते। यदि इच्छा पूर्णा भवति चेत् साधु, पूर्णा न भवति चेत् क्रोधः उत्पद्यते। क्रोधस्य कारणात् मनुष्यो मूढः उन्मत्तः इव वा भवति येन तस्य स्मृतिरपि लुप्यते। स्मृतेर्भ्रंशाद् बुद्धिः उचितानुचितस्य कर्तव्याकर्तव्यस्य च विवेकनिर्णये असमर्था भवति एवं सति विपरीतान्येव कार्याणि करोति। अत एवोक्तं 'विनाशकाले विपरीत बुद्धिः।'

■■■

पुराणानि

– बालकृष्ण झा
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

पुराणं पुरातनमाख्यानं उच्यते संस्कृते पुराणशब्दश्चिरन्तनपर्यायः पुराणेषु भूत- वर्तमान-भाविनश्चार्था वर्ण्यन्ते। इतिहासे तु भूता एवार्था वर्ण्यन्त इति पुराण इतिहासयोरन्तरम्। प्राचीनः तु पुराणमपीतिहासशब्दे नाभिदधते। पुराणेषु पुराणलक्षणम् इति उक्तम् –

सर्गश्च प्रतिसर्गश्च वंशो मन्वन्तराणि च।
वंशानुचरितं चैव पुराणं पञ्चलक्षणम्।।

सर्गः सृष्टिः प्रतिसर्गः सृष्टिलयः पुनश्च सृष्टिः, वंशसृष्ट्यादौ वंशावली मन्वन्तराणि के मनवः कदा कदा अजायन्तेति वर्णनानि, वंशानुचरितं सूर्यचन्द्रवंशयोः वर्णनम्, इदं वस्तुपञ्चकं पुराणेष्वपेक्ष्यते।

वस्तुतः नैतान्यैव वस्तूनि पुराणेषु वर्ण्यन्ते। इदं तु न्यूनतमं वर्णनीयं पुराणेष्वितोऽधिकान्यपि तानि तानि वर्ण्यवस्तूनि वर्ण्यन्ते। यथा – धर्माग्निपुराणमेव गृह्यताम्।

कस्यापि मानवसमाजस्य इतिहासस्तावन्नगण्यो मन्यते, यावत्तस्य सृष्टेः प्रारम्भकालतः इतिहासो न प्रस्तूयते। पुराणानां सर्वादिसिद्धं तेषां अष्टादशत्वं –

मद्वयं भद्वयं चैव ब्रत्रयं वचतुष्टयम्।
अनापलिंगकूस्कानि पुराणानि प्रचक्षते।।

श्लोकोऽयं पुराणानां नामानि संगृह्णाति। पुराणानां धार्मिकदृष्ट्या महत्त्वमधिकम् वर्त्तते यतो हि वेदविहितानां धर्माणां सरलसुबोधभाषायां वर्णनायैव विरचितानि –

इतिहासपुराणाभ्यां वेद समुपवृंहयेत्।
बिभेत्यलपश्रुताद्वेदो मामयं प्रहरिष्यति।।

यदा वेदोक्ता अर्थाः लोकानां बुद्धौ न प्रविष्टाः तदा वेदोक्तार्थस्य ज्ञानं सुलभं कर्तुं पुराणानि विरच्यन्ते स्म। समाजस्य तात्कालिकस्वरूपबोधनायापि पुराणानां महान् उपयोगः पुराणेषु प्राचीनभारतस्य इतिहासो निहितः। पुराणोक्तानामितिकृतानां प्रमाणिकत्वं शिलालेखादिभिः अपि कर्तुम् आरब्धम्।

अतिशयोक्तिप्रणाली तन्त्रपुराणेषु आदृता। अस्यां प्रणाल्यां वर्णिता अर्थाः यथार्थम् विविच्य ग्रहीतव्याः भवन्ति। पुराणानां तुलनात्मकम् अध्ययनं तदन्तः प्रवेशनं च यदि क्रियेत्, तदा तत्रत्यः इतिहासभागः सामाजिकवर्णानां रहस्यं च स्पष्टम् अवभासते इति विदुषां विचारः। पुराणानि उपयुक्तं समुचितव्याख्या वर्तते।

■ ■ ■

संस्कृतस्य महत्त्वम्

– राघव वधवा
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

अस्मिन् संसारे अनेकानां भाषाणां प्रयोगो भवति। वस्तुतः भाषा भावानाम् अभिव्यक्तिमात्रिका भवति, किन्तु यदापि यस्यापि भाषायां अधिकाधिकस्य उपयोगी साहित्यस्य निर्माणं भवति, तदानीमेव तस्याः भाषायाः महत्त्वं वर्धते। एतत् सर्वं संस्कृतस्योपरि अक्षरशः परिघटते।

इयं भाषा न केवलं भारतवर्षस्य, अपितु विश्वस्य प्राचीनतमा भाषा, अतएव अस्याः महत्त्वमतीव वर्तते। अस्यां भाषायां सर्वाधिकस्य वाङ्मयस्य संरचना जाता, एषा भाषा अतीव वैज्ञानिकी विद्यते। अस्याः पाणिनीयं व्याकरणमतीव वैज्ञानिकमस्ति। संस्कारयुक्ता परिष्कृता चेयं भाषा 'संस्कृत' इति कथ्यते। अस्याः अन्यत् नाम देवभाषा, देववाणी, सुरवाणी, गीर्वाणवाणी चाप्यस्ति। एभिरपि अस्याः भाषायाः महत्त्वं परिवर्धते।

'विद्वांसो हि देवाः' अनेनैव कथनेन भाषा एषा देववाणी अस्ति, कुतः पूर्वकाले एषा भाषा विद्वद्भिः परस्परदैनिकव्यवहारे प्रयुज्यते स्म। विश्वस्य सर्वाधिक प्राचीनतमः ग्रन्थः ऋग्वेदोऽस्यामेव भाषायां निबद्धोऽस्ति। यदि वयं प्राचीनज्ञानविज्ञानसंस्कृतिं प्रति जिज्ञासवः भवेम तर्हि संस्कृतभाषा खलु अस्माकं सहाय्या भविष्यति, एतदर्थं अस्या एव भाषायाः अध्ययनम् अपेक्षितम् अस्ति।

संस्कृतभाषा न केवलं भारतवर्षस्य, अपितु विश्वस्य अनेकानां भाषाणां जननी अस्ति। भारतवर्षः अनेकतायाः उदाहरणरूपः देशो विद्यते, यदि वयं अनेकतायां एकतायाः परिदर्शनं कर्तुं वाञ्छामः यदि वयं भाषागतवैमनस्यं दूरीकर्तुमिच्छामः, तर्हि अस्माभिः भाषा एषा वर्तमान समये राष्ट्रभाषारूपेण प्रतिष्ठिता कर्तव्या।

वस्तुतः इयं भाषा खलु सर्वेषां भारतीयानां मानसम् एकस्मिन् सूत्रे निबद्धं कर्तुं शक्नोति। संस्कृतभाषायाः साहित्यभण्डारोऽपि विपुल-ज्ञानविज्ञानसम्पन्नोऽस्ति। सम्पूर्णं वैदिकं साहित्यं आध्यात्मिकज्ञानविज्ञानस्याकरो वै वर्तते। महाभारतं रामायणञ्च द्वे अस्याः भाषायाः महत्त्वपूर्णे रत्ने स्तः।

महाकवि-कालिदास-भवभूति-माघ-हर्ष-चरक-सुश्रुत-कणाद-गौतम- आर्यभट्टादीनाम् अनेकेषां विदुषां कृतिभिः भाषा एषा समृद्धा विद्यते। राजनीतेः अप्रतिमो ग्रन्थः 'कौटिल्यार्थशास्त्रम्', मनुविरचिता 'मनुस्मृतिः' च अस्यामेव भाषायां विरचिता अस्ति। माधुर्यमस्याः भाषायाः महत्त्वपूर्ण-विशेषता, अनेनैव कथ्यते विद्वद्भिः 'भाषासु मधुरा रम्या दिव्या गीर्वाण-भारती।'

उपर्युक्तेन संक्षिप्तेन विवरणेन स्पष्टमेतत् भवति यत् संस्कृत-भाषायाः अनेकदृष्टिभिः अत्यधिकं महत्त्वमस्ति। अतः अस्माकं भारतवासीनां पुनीतकर्तव्यमेतत् यत् स्व गौरवास्यदमतीतमाधृत्य भविष्यनिर्माणाय संस्कृतस्य प्रचारस्य प्रसारस्य प्रयासो विधेयः।

संस्कृतस्य खलु उन्नतिभिरस्माकं सर्वेषामुन्नतिः सम्भाविता। ये जनाः स्वराष्ट्रस्य गौरवपूर्णमितिहासं स्मरन्ति ते खलु सफलतायाः चरमोत्कर्षं लभन्ते।

■ ■ ■

मानसिकद्वन्द्वस्य मूलकारणं त्रिगुणस्वरूपं च

– पवन कुमार
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

मानसिकद्वन्द्वस्य मूलकारणं विषयाणां ध्यानेन तेष्वासक्त्या वा तान् प्राप्तुं मनसि उत्पन्ना इच्छा कामना वा अस्ति। एषा कामना एव दार्शनिक-पारिभाषिक-शब्दावल्यां कामः उच्यते। अयं रजोगुणस्य विकारः अस्ति यतोऽस्य उत्पत्तिः रजोगुणात् भवति। यथोक्तम् -

काम एष क्रोध एष रजोगुणसमुद्भवः।

वस्तुतः संसारस्य प्रत्येकं तत्त्वस्य पदार्थस्य वा उत्पत्तौ सत्त्वरजस्तमांसि इत्येतानि त्रीणि कारणानि भवन्ति। यतः सत्वरजस्तमसां साम्यावस्था मूलप्रकृतिः कथ्यते। यदा च परमात्मनः सिसृक्षया एतेषु गुणेषु वैषम्यम् उत्पद्यते तदा संसारस्य समस्तपदार्थाः जायन्ते येषां कारणात् नित्यशुद्धबुद्धस्वरूपोऽपि आत्मा स्वात्मानं बन्धने अनुभवति। उक्तं हि -

सत्वं रजस्तम इति गुणाः प्रकृतिसम्भवाः।
निबध्नन्ति महाबाहो देहे देहिनमव्ययम्।।

यद्यपि प्रत्येकं तत्त्वे पदार्थे वा त्रयाणामपि गुणानां स्थितिः भवति परन्तु यस्मिन् पदार्थे यस्य गुणस्य प्राचुर्यं भवति सः पदार्थः तद्गुणयुक्तः तद्गुणोद्भवः वा कथ्यते। कामः रजोगुणसमुद्भवः उक्तः। अस्याभिप्रायोऽयं यत् यस्मिन् मनुष्ये रजोगुणस्य प्राचुर्यं भवति तस्य मनः विषयाणां ध्यानमधिकं करोति तेन तस्य मनसि तान् प्राप्तुं कामः इच्छा वा उत्पद्यते। इत्थं कामस्य कारणं रजोगुणः अस्ति कामश्च मानसिकद्वन्द्वस्य कारणमस्ति अतः मानसिकद्वन्द्वस्य मूलकारणं रजोगुणः एव वर्त्तते।

गीतायां श्रीकृष्णः त्रयाणां गुणानां प्रभावात् मनुष्ये जायमानानां विकाराणां वर्णनं कुर्वन् सत्वरजस्तमसां स्वरूपं प्रस्तौति, तच्च निम्नलिखितम् -

1. **सत्वगुणः** - सत्वगुणः लघुः प्रकाशकः प्रीत्यात्मकश्च भवति। अयं सदसद्वस्तूनां प्रकाशनं करोति। उचितानुचितयोः कर्त्तव्याकर्त्तव्ययोः च ज्ञानं कारयति। इत्थं सत्वगुणस्य वृद्ध्या प्रभावेण वा देहेन्द्रियादिषु सर्वेषु द्वारेषु प्रकाशः संजायते -

सर्वद्वारेषु देहेऽस्मिन्प्रकाश उपजायते।
ज्ञानं यदा तदा विद्याद्विवृद्धं सत्वमित्युत।।

2. **रजोगुणः** - रजोगुणः प्रेरकः चञ्चलः अप्रीत्यात्मकश्च भवति। अयं सत्वतमसी अपि स्वेषु स्वेषु कार्येषु प्रवर्त्तयति। समेषां पदार्थानां च क्रियाशीलतायाः हेतुरपि अयमेवास्ति। कामक्रोधलोभाद्याः विकाराः मनुष्ये रजोगुणे वृद्धिं प्राप्ते एव उत्पद्यन्ते। उक्तं हि -

लोभः प्रवृत्तिरारम्भः कर्मणामशमः स्पृहा।
रजस्येतानि जायन्ते विवृद्धे भरतर्षभ।।

3. **तमोगुणः** - तमोगुणः गुरुः प्रकाशस्य आच्छादकः विषादात्मकश्च भवति। प्रमादनिद्रातन्द्रामोहाद्याः विकारः मनुष्ये तमोगुणे वृद्धिं प्राप्ते एव जायन्ते -

अप्रकाशोऽप्रवृत्तिश्च प्रमादो मोह एव च।
तमस्येतानि जायन्ते विवृद्धे कुरुनन्दन।।

■■■

जातिप्रथायाः दोषाः

– सुजीत कुमारः
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

वर्णव्यवस्थैव स्वस्थानात् प्रच्युता परस्ताद् जातिप्रथाम् आपन्ना। तदा च जन्ममूलकमेव जातेर्विभाजनं सम्पन्नम्। एतदत्रावधेयं यद् वर्णव्यवस्थायां मूलं वृत्तिः कर्म गुणो वाऽवर्तत। जातिप्रथायाश्च मूलं जन्ममात्रम्। सेयं जातिप्रथा सर्वविधदोषसंवलिता लक्ष्यते। तत्र गुणकर्मणोः प्राधान्याभावाद् विद्वेषाः उच्चावचत्वभावना, वर्णसांकर्यम् सजातीय-विजातीय विरोधाः, स्पृश्यास्पृश्यत्वदोषः, उत्कृष्टत्वापकृष्टत्वादिजघन्य विचार-चर्चा। एवंविधा भूयांसो दोषाः सम्प्रवर्तन्ते। अतएव भारतीयैर्वैदेशिकैश्च विद्वद्भिर्जातिप्रथा सर्वदोषालयेति निन्द्यते गर्ह्यते च। एवं विज्ञायते यद् वर्णव्यवस्था समाजोन्नतिसाधिका लोकहितकारिणी वैज्ञानिकी चास्ति। जातिप्रथा नूनं दोषावहा कलङ्कास्पदा च।

■■■

सत्यमेव जयते नानृतम्।

– सुजीत कुमारः
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

सते अर्थात् कल्याणाय हितं सत्यं भवति। यद् वस्तु यथा विद्यते, तस्य तेनैव रुपेण कथनं प्रकाशनं लेखनं वा सत्यमिति अभिधीयते। परमेश्वरेण जिह्वा सदुपयोगार्थं दत्ता, अतः जिह्वायाः सदुपयोगः सत्यभाषणेन कर्तव्यः।

जगति सत्यस्य यादृशी आवश्यकता विद्यते, न तादृशी अन्यस्य कस्यचिद् वस्तुनः। सत्येनैव समाजस्य स्थितिः वर्तते। यदि सर्वेऽसत्यवादिनो भवेयुस्तर्हि न लोकस्य स्थितिः क्षणमात्रमपि भवितुं शक्नोति। सत्यस्यैव एषा महिमा यद् वयं समाजे मनुष्येषु विश्वासं कुर्मः। अतः सिध्यति यत् सत्यं लोकस्याधारोऽस्ति। अत एवोच्यते

गोभिर्विप्रैश्च वेदैश्च, सतीभिः सत्यवादिभिः।
अलुब्धैर्दानशूरैश्च, सप्तभिर्धार्यते मही।।

सत्यभाषणेन मनुष्यो निर्भीको भवति। सत्यभाषणेन तस्य तेजो यशः कीर्तिः विद्या गौरवं च वर्धन्ते। यः सत्यं वदति, स सर्वेभ्यः पापेभ्योऽपि निवृत्तो भवति। यदा स कस्मिंश्चित् पापे प्रवर्तते, तदा स चिन्तयति यदि अहम् असत्यमेव वदिष्यामि, अतः सर्वेषां दृष्टिषु हीनो भविष्यामि, एवं स पापाद् विरमति। सत्यभाषणं वस्तुतो जीवने सर्वोत्तमं तपो वर्तते। अत एवोक्तम्–

अश्वमेधसहस्रं च सत्यं च तुलया–धृतम्।
अश्वमेधसहस्राद् हि, सत्यमेव विशिष्यते।

सत्यस्य प्रतिष्ठयैव संसारस्य कल्याणम्, अभ्युदयः, उन्नतिश्च भवन्ति। यः कश्चित् सत्यमाश्रयति, तस्य जीवनं सफलं भवति। अत उच्यते – 'सर्वं सत्ये प्रतिष्ठितम्'। ये सत्यं पालयन्ति, ते सर्वोत्तमं धर्मं कुर्वन्ति। ये च सत्यं परित्यज्य असत्यं भजन्ते, ते महापातकं कुर्वन्ति। यतो हि असत्यभाषणेन स्वस्य हानिः नाशश्च भवतः। समाजस्य देशस्य लोकस्य च मिथ्याभाषणेन नाशो भवति। अत एवोच्यते–नहि सत्यात् परो धर्मो नानृतात् पातकं परम्।

सत्यस्य पालनार्थमेव महाराजो दशरथः प्रियं पुत्रं रामं वनं प्रैषयत्। राजा हरिश्चन्द्रः सत्यपालनार्थमेव, सर्वाणि दुःखानि असहत्। युधिष्ठिरः सत्यभाषणस्य प्रभावादेव विजयमलभत। महात्मा गाँधिमहोदयः सत्यस्यैव सदा शिक्षामदात्। भारतस्य राजचिह्नेऽपि 'सत्यमेव जयते' इत्यादरेण उल्लिख्यते। 'अतः सर्वैरपि लौकिकपारलौकिकाभ्युदयाय सत्यमेव सदा भाषणीयम्।'

■■■

भारते शिक्षायाः स्थितिः

– अतुल कुमार शुक्ला
बी.ए. संस्कृत, तृतीय वर्ष

'भारत' इति तस्याः पुण्यभूमेः नाम अस्ति यत्र विद्याशिक्षायाः गुणगानं भवति स्म। विद्यां मुक्तेः साधनं मन्यन्ते स्म।

उक्तं च –

सा विद्या या विमुक्तये

सा विद्या एव विद्या अस्ति या व्यक्तिं तारयेत्। परं मुक्तिः अत्र तात्पर्यं न केवलं मोक्षमात्रम् अस्ति। अपितु अज्ञानान्धकाराव्यसायावगुणेभ्यः मुक्तिः मन्यते। अस्माकं शास्त्रेषु शिक्षायाः महत्वकथने निगदितमिदम् वचनम् –

माताशत्रुः पितावैरी येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभा मध्येहंसमध्ये बको यथा।।

अर्थात् भारतीयसमाजे यः स्वान् बालान् न पाठयन्ति तादृशं

मातापितरं शत्रुः वैरी इत्यादिभिः पदैः संबोध्यते। यतो हि ते बालानां शत्रुसदृशाः सन्ति कारणं किं इति? चेत् अशिक्षा जीवनविकासे बाधिका अस्ति। तम् अशिक्षितं तादृशमेव निन्दितं मन्यते यथा हंसेषु बकः न शोभते तथैव सः अशिक्षितः सभ्यानां शिक्षितानां मध्ये न शोभते। प्राचीनकाले भारतीयसमाजे शिक्षा सामाजिकः नियमः आसीत्, सामाजिकानां च नियमानां पालनं प्रत्येकव्यक्तीनां कृते आवश्यकम् आसीत्। ये सामाजिकानां नियमानां पालनं न चक्रुः तान् राजा प्रशासनं समाजं वा दण्डयति स्म। एवं प्रकारेण वयं पश्यामः यत् शिक्षा तात्कालिके समाजे सर्वसुलभा आसीत्।

प्राचीन-भारतीय-समाजः चतुर्षु आश्रमेषु विभक्तः आसीत्। ब्रह्मचर्यः गृहस्थः वानप्रस्थः संन्यासश्च, ब्रह्मचर्यकालः विद्या-अध्ययनस्य बभूव। तत्र च अध्यापकानां शिक्षकाणाम् आचार्याणां च भूमिकां निर्वहमाणेषु वानप्रस्थाश्रमस्य पालनं चक्रियमाणाः जनाः भवन्ति स्म ये जीवने परिपक्वाः अनुभवपूर्णाः भवन्ति स्म।

एवं शिक्षासदृशं महत्त्वपूर्णं कार्यं विना केनापि राजव्ययेन सामाजिकपरम्परया बभूव। राज्यस्य व्ययाभावात् शिक्षा केनापि प्रकारेण राजनैतिकहस्तक्षेपेण मुक्तः "ज्ञानविज्ञानविमुक्तये" इति मार्गं अनुसरति स्म। तथा सम्पूर्णोऽपि समाजः उच्च-नीच-धनिकाधनिकभेदात् परं बन्धनैः रहितः शिक्षां प्राप्नोति स्म। भारतस्य प्राचीनशिक्षा आध्यात्मिकाश्रिता आसीत् शिक्षा मुक्तेः आत्मबोधस्य च साधनरूपेण अवर्तत। शिक्षा व्यक्तिगतानां स्वार्थानां कृते नासीत्, किन्तु धर्मस्य (नैतिकनियमानां) कृते आसीत् भारतस्य शैक्षणिकी सांस्कृतिकी च परम्परा विश्व-इतिहासे प्राचीनतमा सर्वोत्तमा च आसीत्।

डॉ. अल्तेकरानुसारं -

आवैदिकयुगात् अधुना पर्यन्तं भारतीयानां कृते शिक्षायाः अभिप्रायः "प्रकाशः" अस्ति, तथा च इयं शिक्षा जीवनस्य विभिन्नेषु मार्गेषु अस्माकं मार्गम् आलोकयति।

उक्तं च-ऋते ज्ञानान् न मुक्तिः। विद्ययाऽमृतमश्नुते। विद्याधनं सर्वधानप्रधानं। विद्या परा देवता।

प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धतौ स्त्रीशूद्रादीनां सर्वेषां कृते शिक्षायाः समानः स्तरः आसीत् तस्माद् एव वेदेषु; अपाला, घोषा इत्यादयः ऋषिकाः कवल-एलूष- सत्यकाम-जाबाल-इत्यादयः ऋषयः सन्ति, उपनिषत्सु गार्गी मैत्रेयी सदृशीनां विदुषीणां संवादः प्राप्यते तथा च सूत्र ग्रन्थेषु स्त्रीणां शूद्राणामपि उपवीतसंस्कारस्य भिक्षाटनस्य दण्डधारणस्य च प्रमाणानि प्राप्नुवन्ति। परं समयानुसारं स्थितयः परिवर्तिताः समाजस्य च प्रवृत्तौ परिवर्तनम् अभूत् तदनन्तरम् यादृशः समाजस्य निर्माणमभवत् सः समाजः अधुनापि अस्माकं समक्षे एव अस्ति। सः समाजः विभिन्नेभ्यः वर्गेभ्यः क्रमशः शिक्षा सदृशं आवश्यकं तत्त्वं हर्तुं प्रारम्भं कृतवान् क्रमेऽस्मिन् शूद्रनिषादसदृशेभ्यः विभिन्नेभ्यः वर्गेभ्यः, अग्रे च गत्वा मानवप्रजात्याः अर्धं स्त्रीभ्यः शिक्षा अपहृता।

एतादृशानाम् अनैतिकानाम् अमानवीयानां मतानां स्थापनायाः कृते तात्कालिक-समाजस्य बुद्धिजीविवर्गैः भिन्न-भिन्न-प्रकाराणां शास्त्राणां स्मृतीनां भाष्याणां च रचना कृता यत्र एतादृशाम् अनैतिकानां कृत्यानां नैतिकता प्रतिपादिता। अस्यैव उदाहरणरूपे एतानि "सुवचनानि" प्राप्यन्ते (1) स्त्री शूद्रौ नाधीयताम् नारी नरकस्य द्वारम्। (2) ढोल गंवार पशु शूद्र और नारी ये सब ताड़न के अधिकारी। (3) न स्त्री स्वातन्त्र्यमर्हति इत्यादयः। एवं प्रकारेण २५०० शतेषु वर्षेषु समाजस्य विभिन्नान् वर्गान् शिक्षातः दूरीकृतवन्तः। समाजस्य अन्तः विभिन्नाः कुरीतयः व्याप्ताः अभवन् यथा यदि नार्यः शूद्राश्च वेदान् पठेयुः चेत् तेषां कर्णयोः पारदं पातयेत् एवम् अनेकाः कुप्रथाः अजायन्त एतैः सर्वैः कारणैः एव विश्वगुरुरूपेण विभूषितः भारतः गड्डरिकाणां आहितुण्डिकानां च देशोऽभूत्। एषु सार्धद्विसहस्रवर्षेषु अयं देशः अज्ञानस्य अशिक्षायाश्च पाशेषु बद्धः आसीत् किन्तु स्वातंत्र्यपूर्वमेव अस्मिन् देशे शिक्षायै व्यापकसामाजिकस्तरे कार्यः प्रारम्भः जातः, शिक्षायाः कार्योऽयं स्वातंत्र्यज्योतिम् अज्वलयत् तां च स्वातंत्र्यज्योतिं संबलं ददुः।

अस्मिन् महति कर्मणि, स्वामी दयानन्दः, ईश्वरचन्द्र विद्यासागरः, एनी बेसेन्टः, स्वामी श्रद्धानन्दः, काशीनागरी प्रचारिणी सभा, डी.ए.वी. महात्मा हंसराजः, श्री गोपाल कृष्ण गोखले महोदयः, मदनमोहन मालवीयः, मौलाना अब्दुल कलामः, महात्मा गान्धी, अरबिन्दो घोषः, रवीन्द्रनाथ टैगोर इत्यादयः, शिक्षायाः क्षेत्रे महत्त्वपूर्णं योगदानं कृतवन्तः तथा शिक्षायाः ज्योतिः भारतीय समाजे पुनः आलोकयितवन्तः। परं वयं यदा स्वातन्त्र्योत्तरकाले स्वदेशं निरीक्षामः चेत् लब्धामहे

यत् शिक्षा अद्यापि न सर्वजनसुलभा अस्ति। अद्यापि अस्माकं संविधाननिमार्तृणां स्वप्नं साकारं नाभूत्। अद्यापि सोमनाथलहरी महोदयस्य वचनः तादृशः एव प्रासाङ्गिकः तेन कथितं यत् "शिक्षां विना न भारतस्य कश्चिद् भविष्यः।"

किमत्र कारणानि? यत् अद्यापि अस्माकं देशे प्रत्येकं बालः शिक्षासदृशीं मूलभूतां सुविधां न उपलभते। सा शिक्षा सामान्यजनेभ्यः निरन्तरं दूरताम् उपैति। स्वातंत्र्योत्तरे शिक्षासुधारकार्यक्रमेषु दृष्टिपातं कुर्मः चेत् तेषाम् एका दीर्घसूची प्राप्यते तेषु केषांचित् इमानि। यथा –

राधाकृष्ण–आयोगः
माध्यमिक शिक्षा आयोगः
विश्वविद्यालय अनुदान आयोगः
कोठारी शिक्षा आयोगः
राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः
नयी राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः
शिक्षायाः अधिकारनियमः 2009

एषां सुधारकार्यक्रमाणाम् अनन्तरम् अपि भारतीय शिक्षायाः क्षेत्रे अद्यापि तानि परिवर्तनानि न अभवन् यान्यपेक्षितानि सन्ति। संयुक्त–राष्ट्रसंघस्य सूचनाप्रपत्रानुसारम् अद्यत्वेऽपि भारते विद्यालयात् बहिः स्थितानां छात्राणां संख्या अनुमानानुसारं विंशतिः लक्षाधिकं वर्तते। किमस्य कारणमिति चिन्तयामः? चेत् लब्धामहे यत् दिल्ल्याः चकमकया दूरं ग्रामीणक्षेत्रेषु विद्यालयानां का स्थितिः का तत्र गतिः विदितमेव सर्वेषां। तेषां विद्यालयानां स्थितिः अस्ति, यत् तत्र कुत्रचित् छात्राः न सन्ति अन्यत्र कुत्रचित् अध्यापकाः अपि न सन्ति यदि सन्ति अपि चेत् ते न पाठयन्ति। कदाचित् ते निर्वाचने संलग्नाः भवन्ति, कदाचित् मतदाने कदाचित् मतगणनायां कदाचित् मतसूचीं सञ्जीकर्तुं कदाचित् जनगणनायां कदाचित् स्वकार्ये वा एवं तेषां पठन–पाठनकार्यक्रमो प्रचलित तत्र का गतिः स्यात् छात्राणां, ईश्वरः एव तेषां रक्षकः। मध्याह्न–भोजननाम्ना प्रारब्धया योजनया तु अध्यापकाणां स्फूतः पोषणं प्राप्नोति अथवा ग्रामप्रधानस्य। तस्य मध्याह्नभोजनस्य गुणवत्ता ईदृशी भवति यत् तत् भोजनं केवलं पशूणां आहारतुल्य एव भवति। तया योजनया बालानां स्थाने ग्रामप्रधानस्य अध्यापकस्य वा गौमाता पोषणं प्राप्नोति। धन्योऽयं देशः। नास्ति इत्यत्र कश्चिद्दोषः यतो हि गोपालनम् अपि तु आवश्यकम् एव।

विडंबना अत्रैव न परिसमाप्यते, अध्यापनं कियत् सार्थकं अस्ति, अस्य अन्यतमः उदाहरणः दिल्ली सर्वकारस्य "रीडिंग मेला" इति नामिनी एका योजना अस्ति। अस्याः योजनायाः प्रचारप्रसारकार्यक्रमे स्वयमेव अस्माकं सर्वकारः वदति। यत् अस्माकं छात्राः पुस्तकपठनम् अपि न जानन्ति। किं कृतं अस्माकं सर्वकारैः सप्तति–वर्षेषु। अयं तु स्थितिः भारतस्य किं एतादृशाः योजनाः अस्माकं लोकतन्त्रस्य, सर्वकाराणां वा विफलतायाः प्रतीकानि वा चिन्तनीयम् एतत् विद्वद्वर्गैः।

राजधान्यां इयं स्थितिः अस्ति चेत् का कथा अन्येषां प्रदेशाणां यत्र तु मूलभूतानि साधनानि अपि न सन्ति।

कथा अत्रैव न समाप्तः भवति, सर्वकारतन्त्रे शिक्षकाणां योग्यतायाः परीक्षणं मध्यप्रदेशसदृत्सु राज्येषु "व्यापम" सदृशी "योग्यया निष्पक्षया" संस्थया कारयते यत् अवशिष्टां त्रुटिं पूर्णतां एति।

सर्वकारस्येयं सुयोग्यतन्त्रसमानान्तरम् एव एकः नूतनः तन्त्रः विकसितः यः निजीतन्त्रः इति नाम्ना आख्यायते एतैः अपि निर्धनानां धनम् अपहर्तुं काल इव मुखं विवृतं स्थाप्यते अथवा स्व आखेटं नितराम् अन्विषति तेषां उद्देश्यः एव यथाकथंचित् धनार्जनमेव वर्तते न तु शिक्षायाः प्रचारः प्रसारः तेषां धेयः।

> अद्यत्वे अस्माकं तन्त्रे शिक्षार्जनं सरलः सौकार्यसुक्तः न अस्ति।
> तत्रापि निर्धनैः वञ्चितैः शोषितैः पीडितैः तु कथमपि न।

वर्तमाने अस्माकं समाजे शिक्षायाः महत्यावश्यकता वर्तते अस्माभिः सर्वैरपि मिलित्वा शिक्षायाः प्रचारः प्रसारः करणीयः तदैव अस्माकं देशे नैकोऽपि अशिक्षितो भविष्यति। वयं येऽपि समाजस्य अङ्गानि स्मः अस्माभिः एकः प्रणो कर्त्तव्यः यत् वयं जीवने यत्र कुत्र चिद् अपि भविष्यामः परं शिक्षायाः प्रचाराय प्रसाराय कार्यं अवश्यमेव करिष्यामः, तदैव शिक्षायाः वास्तविकम् उद्देश्यः पूर्णतामेति।

॥ ज्ञानविज्ञान विमुक्तये ॥

■■■

इदमपि किञ्चित्

– रीतिका, अनजली
बी.ए.; संस्कृत, द्वितीय वर्ष

- अमजदखान – कितने आदमी थे?
- अमजदखानः – कति जनाः आसन्?
- दीपिका पादुकोण – एक चुटकी सिन्दुर की कीमत तुम क्या जानो रमेश बाबू!
- दीपिका पादुकोणः – एका छोटिकासिन्दुरस्य मूल्यं त्वं किं जानीयाः भो रमेशबाबू!
- मोहब्बत/इश्क करना खता है, तो सजा दो मुझे।
- प्रेम यदि दोषोऽस्ति। चेत् दण्डं दीयताम्।
- बाजीराव – बाजीराव ने मस्तानी से मोहब्बत की है, अय्याशी नही।
- बाजीरावः – बाजीरावः मस्तानीं स्नेहम् अकरोत् अय्याशी नैव।
- रणबीर – किसी से प्यार करना हमारे बस में नहीं पर उससे दूर हो जाना हमारे बस में है।
- रणबीरः – कयाऽपि सह स्नेहः स्यात् इति हस्ते न अस्ति, परं तस्माद् दूरं गन्तुं पारयामः।
- रणबीर – एक तरफा प्यार की ताकत कुछ और ही होती है। यह रिश्तों की तरह दो हिस्सों में नही बँटता।
- रणबीरः – एकपक्षतः प्रेम्णः शक्ति अन्यतम एव भवति। एषः सबन्ध इव भागद्वयों न भवति।
- शाहरुखखान – कभी-कभी जीतने के लिए कुछ हारना पड़ता है और हारकर जीतने वाले को विजेता कहते हैं।
- शाहरुखखानः – जेतुं पराजयः आवश्यकः तथा च यः पराजितः भूत्वा विजयं प्राप्नोति तम् 'बाजीगर' इति कथ्यन्ते।
- शाहरुखखान – इतनी शिद्दत से मैंने तुम्हे पाने की कोशिश की है कि हर जर्रे ने मुझे तुमसे मिलाने की साजिश की है।
- शाहरुखखानः – एतावत्या इच्छया मया भवतीं प्राप्तुं प्रयासः कृतः यत् सर्वेण जगता माम् भवतीं मेलितुं षड्यन्त्रः कृतः।
- शाहरुखखान – बाबूजी ने कहा गाँव छोड़ दो सबने कहा पारो को छोड़ दो। पारो ने कहा शराब छोड़ दो, एक दिन आएगा जब वो कहेगा दुनिया छोड़ दो।
- शाहरुखखानः – पित्रा उक्तम्-ग्रामं त्यज, सर्वैः उक्तं-पारोम् त्यज 'पारो' उक्तम्-मदिरां त्यज, एकः दिवसः एवम् आगमिष्यति सः वदिष्यति लोकं त्यज।
- सुभाष चन्द्र बोस – तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा।
- सुभाषचन्द्र बोसः – भवन्तः मह्यं रक्तं यच्छन्तु, अहं भवद्भ्यः स्वातन्त्र्यं दास्यामि।
- धर्मेन्द्र – कुत्ते! मैं तेरा खून पी जाऊँगा।
- धर्मेन्द्रः – तिष्ठ रे शुनक! अहं ते रक्तं पास्यामि।
- सलमान खान – मुझ पर एक अहसान करना की मुझ पर कोई अहसान न करना।
- सलमानखानः – मयि एकं उपकारं कुर्युः। यत् मयि कोऽपि उपकारं न कुर्युः।
- प्रियंका चोपडा – किसी को कभी इतना भी मत डराओ, कि डर ही खत्म हो जाए।
- प्रियंकाचोपडाः – कदापि कानपि एतावदपि मा भाययतु, यत् भयमेव समाप्तं भवेत्।
- शाहरुखखान – कौन कमबख्त बर्दाशत करने के लिए पीता है, हम तो पीते हैं, यहाँ बैठ सकें, तुम्हे देख सकें, तुम्हे बर्दाश कर सकें।
- शाहरुखखानः – कः मूढः सोढुं पिबति, वयं तु एतदर्थं पिबेम, यत् अत्र उपवेष्टुम् शक्नुयाम भवतीं द्रष्टुं शक्नुयाम त्वां सोढुं शक्नुयाम।
- आमिर खान – हमारी छोरियाँ छोरों से कम है, के।
- आमिरखानः – अस्माकं बालिकाः पुरुषाणां अपेक्षया न्यूनाः सन्ति वा।

• सोनाक्षी सिन्हा – चाटें से डर नहीं लगता साहब, प्यार से लगता है।

• सोनाक्षी सिन्हाः – चपेटिकायाः न बिभेमि महोदय! प्रेम्णः बिभेमि।

• सुनील शेट्ठी – मैं तुम्हें भूल जाऊँ ऐसा हो नहीं सकता, तुम मुझे भूल जाओ, ऐसा मैं होने नहीं दूँगा।

• सुनील शेट्ठीः – अहं भवतीं विस्मरेयम् एवं भवितुं न अर्हति। भवती मां विस्मरेत् एवं अहं भावयितुं न शक्ष्यामि।

• बसन्ती – भाग धन्नो भाग, आज बसन्ती की इज्जत का सवाल है।

• बसन्तीः – धाव धन्नो धाव, अद्य बसन्त्याः प्रतिष्ठायाः प्रश्नः अस्ति।

• आमिर खान – मैं हमेशा से सोचकर रोता रहा, कि यदि बेटा होता तो देश के लिए कुश्ती में सोना लाता, परंतु ये बात समझ नहीं आई, सोना तो सोना होता है, बेटा लाये या बेटी।

• आमिरखानः – अहं सर्वदा एवं चिन्तयित्वा रुदन् आसम्, यदि पुत्रः अभविष्यत्, तर्हि देशाय मल्लयुद्धे स्वर्णपदकं आनेष्यत्। परंतु मया इयं वार्ता न अवगता। स्वर्णपदकं तु स्वर्णपदकं भवति, पुत्रः आनेयत् पुत्री वा।

• अक्षय कुमार – Don't angry me जो मैं बोलता हूँ, वो मैं करता हूँ। जो मैं नहीं बोलता वो तो definately करता हूँ।

• अक्षयकुमारः – मां कोपितं मां करोतु। यत् अहं वदामि, तत् अहं करोमि। यत् अहं न वदामि, तत् तु निश्चयेनैव करोमि।

• सन्नी देओल – उतार के फेंक दो ये वर्दी और पहन लो, बलवन्त राय का पट्टा अपने गले में। बलवन्त राय के कुत्तों।

• सन्नीदेओलः – अवतार्य क्षिपतु इदं समवस्त्रं तथा च ध्रियताम् बलवन्तरायस्य शुनकगलबन्धं, भोः बलवन्तरायस्य शुनकाः।

• अमिताभ बच्चन – रिश्ते में तो हम तुम्हारे बाप लगते हैं, नाम है शहंशाह।

• अमिताभबच्चनः – सम्बन्धे तु अहं तव जनकः अस्मि, नाम्ना शहंशाहः।

• धर्मेन्द्र – बसन्ती इन कुत्तों के सामने मत नाचना।

• धर्मेन्द्रः – बसन्ति! एतेषां शुनकानां समक्षं नृत्यं मा कुरु।

• सन्नी देओल – अगर मैं अपनी बीवी बच्चों के लिए सर झुका सकता हूँ। तो सबके सर काट भी सकता हूँ।

• सन्नीदेओलः – यदि अहं स्वपत्न्यै पुत्राय च शिरः अधः कर्तुं शक्नोमि तर्हि सर्वेषां शिरांसि छेत्तुम् अपि कर्तुं शक्नोमि।

• दंगल – अब तो दंगल होगा।

• दंगलः – इदानीं तु मल्लयुद्धं भविष्यति।

• ये मजदूर का हाथ है। कातिया लोहा पिघलाकर आकार बदल देता है।

• एषः कर्मकारस्य हस्तः अस्ति, कातिया! लौहं क्षीणीकृत्य रूपं परिवर्तयति।

• तू क्या चाहता है? तू कहे तो भौकूँ, तू कहे तो काटूँ।

• त्वं किम् इच्छसि? त्वं वदेः चेत् भुक्कामि, त्वं वदेः चेत् दंशयामि।

• बैठी हो, होठों को सिलकर पछताएँगी, आप इश्क जाग उठता है। अक्सर खामोशी के बाद।

• ओष्ठौ सिव्य उपविष्टा अस्ति, भवती पश्चात्तापं करिष्यति, प्रायशः प्रीतिः उद्भवति मौनस्य पश्चात्।

• Pushpa I hate tears.

• पुष्पे! मह्यं अश्रुणि न रोचन्ते।

• मुझसे दूर जाओगे कैसे? दिल से मुझे भुलाओगे कैसे? हम तो वो खुशबू हैं, जो साँसों में बसते हैं, खुद की साँसों को रोक पाओगे कैसे।

मत् दूरं कथं गमिष्यसि? हृदयात् मां कथं विस्मरिष्यसि? वयं तु एवंविधाः सुगन्धाः स्मः, यत् निश्वासे निवसामः, स्वस्य निश्वासं अवरोद्धुं कथं शक्ष्यसि।

■■■

हास्यमञ्जरी

कारकविमर्शः

– प्रियंका
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

एकस्मिन् विद्यालये संस्कृतवर्गः प्रचलति स्म। तत्रस्थः शिक्षकः व्याकरणमध्यापयति स्म। तत्रापि कारकप्रकरणम्। तत्रापि सम्प्रदानकारकं यस्य अर्थे चतुर्थीविभक्तिः भवति। शिक्षकः छात्रान् बोधयन् अवदत् – "दानकर्मणा कर्ता यमभिप्रैति अभिलषति वा सः सम्प्रदानम्। तत्र चतुर्थीविभक्तेः एव प्रयोगः भवति। उदाहरणतः, 'रामः ब्राह्मणाय गां ददाति'। अत्र गोदानकर्मणा रामः ब्राह्मणमभिलषति अर्थात् सः ब्राह्मणस्य कृते गोदानं कर्तुमिच्छति। अतः ब्राह्मण इत्यत्र चतुर्थीविभक्तिः भवति।" एतत् बोधयित्वा तद्दिने सः शिक्षकः प्रस्थितः। परेद्युः सः वर्गम् आगत्यापृच्छत् 'भिक्षुकाय भिक्षां देहि', 'गुरवे दक्षिणां देहि', 'दरिद्राय दानं देहि' इत्येतेषु वाक्येषु किं कारकं भवतीति। वर्गे एकः बालकः झटित्येवोत्थायावदत् – "श्रीमन्, एतत्सर्वं महाहानिकारकं भवतीति मम विचारः।"

■■■

दुःस्वप्नदर्शनम्

– सविता
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

गोपालः एकः पञ्चदशवर्षीयः बालकः। सः रात्रौ सर्वदा दुःस्वप्नान् पश्यति। एकदा सः एकस्य चिकित्सकस्य समीपं गत्वा अवदत् – "श्रीमन्, रात्रौ अहं सर्वदा दुःस्वप्नान् पश्यामि। तदा अहमतीव भीतो भवामि। अनेन मम महती हानिरपि भवति। किमपि करोतु कृपया।" तस्य वचनं श्रुत्वा चिकित्सकमहाशयः अवोचत् – "दुःस्वप्नदर्शनं तथा हानिकारकं नास्ति यथा त्वं चिन्तयसि। अतः व्याकुलो मा भव।" चिकित्सकस्य वचनेन किञ्चिन्निराशो गोपालः पुनः अवदत्, "परन्तु श्रीमन्, मम कृते तु एतत् महाहानिकारकम् अस्ति।" चिकित्सकः पुनः तमपृच्छत् – "कथम् एतत्?" ततः गोपालः तस्य वृत्तान्तमश्रावयत् – "शृणोतु तावत् गतरात्रौ किं जातम्। गतरात्रौ अहं स्वप्ने अपश्यं यदहमेकः शण्डो भूत्वा घासानद्मि। अन्यानि शुष्कतृणान्यपि चर्वामि।" ततः चिकित्सकः अनेन का हानिरिति अपृच्छत्। गोपालः अवदत्, "श्रीमन्, यदा स्वप्नं पश्यामि स्म तस्मिन् समये तु किमपि ज्ञातुं न अपारयम्। परन्तु प्रातरुत्थाय अपश्यं यत् शय्यायाः एकः अंशः सम्पूर्णतया मया चर्वितः। इदानीं वदतु एतत् हानिकारकं न वा?"

■■■

कथा-मञ्जरी

काष्ठिको जलदेवी च

– गोविन्द
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

एकदा कश्चित् काष्ठिकः काष्ठसङ्ग्रहणाय वनम् अगच्छत्। तेन सह तस्य पत्नी अपि आसीत्। यदा सः वृक्षकर्तने मग्नः आसीत् तदा तस्य पत्नी नद्यां मुखपादादीन् प्रक्षालयति स्म। अस्मिन्नवसरे स्खलितचरणा सा नद्यां मग्ना। तस्याः चीत्कारं श्रुत्वा काष्ठिकः धावन् जलसमीपमगच्छत्। परन्तु सन्तरणज्ञानाभावात् सः तामुद्धर्तुं नाशक्नोत्। ततः सः पत्नीवियोगदुःखेन तत्र उपविश्य उच्चैः क्रन्दितुमारब्धः। तस्य क्रन्दनं श्रुत्वा जलदेवता तत्र आविरभवत्। तया पृष्टः काष्ठिकः स्वदुःखमवर्णयत्। सर्वं श्रुत्वा जलदेवता जलं प्राविशत्। क्षणात् परं स्वर्गस्य अप्सराम् उर्वशीमानीय तं काष्ठिकं दर्शयन्ती अपृच्छत् – "किम् एषा तव पत्नी?" तदा अविलम्बं काष्ठिकः अवदत्– "आम्, आम् एषा एव मम पत्नी।" तस्य एतादृशं मिथ्यावादित्वं दृष्ट्वा जलदेवता कुपिता सती तं जनं भर्त्सयमाना अवदत् – "मिथ्यावादिन्! जानासि त्वं किं वदसि? एषा तु स्वर्गस्य अप्सरा उर्वशी। कथमेषा तव पत्नी? तव एतादृशस्य व्यवहारस्य हेतोः अहं केनापि प्रकारेण तव सहायतां न करिष्यामि।" एवमुक्त्वा सा जलदेवता यदा जलं प्रवेष्टुमुद्यता तदा सः काष्ठिकः कथमपि तां सन्तुष्य अवदत् – "हे जलदेवते! अहं तादृशो नास्मि यथा भवती इदानीं मां मन्यते। अहं भयवशाद् एवम् अवदम्।" "भयवशात्! किमत्र भयस्य कारणम्" इति जलदेवता तं काष्ठिकमपृच्छत्। तदा काष्ठिकः अवदत् – "मन्ये गतवारे घटितां घटनां भवती अवश्यं स्मरति। तस्मिन् समये यदा मम कुठारः जले अपतत् तदा भवती अत्र आगता। वारं वारं जलं प्रविश्य एकमेकं महार्घं कुठारमानीय माम् अदर्शयत्। परन्तु अहं तत् सर्वं नाङ्गीकृत्य केवलं मम लौहकुठारमेव ऐच्छम्। तदा मम व्यवहारेण सन्तुष्य भवती मह्यं मम कुठारेण सह अन्यान् त्रीन् कुठारान् अपि उपहाररूपेण प्रायच्छत्। तथैव एतद्-वारे उर्वशीं दृष्ट्वा यदि अहम् एषा मम पत्नी नास्तीति अवदिष्यं तर्हि भवती मां रम्भामानीय अदर्शयिष्यत्। पुनरपि नाङ्गीकृते मेनकामानीय अदर्शयिष्यत्। पुनरपि नाङ्गीकृते मम पत्नीमानीय अदास्यत्। अन्ते च तया सह एताः तिस्रः अपि मह्यम् उपाहरिष्यत्। हे जलदेवते, भवती एतत् सम्यक् जानाति यत् अस्मिन् युगे एकस्या अपि भार्यायाः पालनं कीदृशं कष्टकरमिति। एतस्यां स्थितौ अहं चतस्रः नीत्वा कथं ताः पालयेयमिति भीत्या जानन् एव उर्वशीं दृष्ट्वा एषा मम पत्नी इति अवोचम्।"

■■■

मूलभ्रान्तिः

– आनन्दप्रकाश
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

आसीत् कदाचित् कोऽपि चतुरो मनुष्यः। स आत्मानं बहुरूपं कर्तुम् अशकत्, समकालमेव स्वम् अनेकरूपेषु परिवर्तयितुम् अपारयत्। तानि रूपाणि च तथा वास्तवानि अभवन् यथा वास्तवे रूपे कृत्रिमरूपेषु च भेदज्ञानम् अतीव दुःसाध्यम् अभूत्।

एकदा तेन ज्ञातं यद् यमराजस्य दूतः मां मृत्युलोकं नेतुम् आगच्छति। तदा जीवनसङ्कटे पतितः असौ दूतात् त्राणस्य उपायं चिन्तयितुं प्रवृत्तः। अन्ते स कमपि चातुर्यपूर्णम् उपायम् आविष्कृतवान् यः खलु नितरां प्रशंसनीयः। स द्वादशरूपः अभवत्, आत्मतुल्याः स्वस्मात् सर्वथा अभिन्ना एकादशमूर्तीः रचयित्वा तासां मध्ये स्वयम् अतिष्ठत्। यदा यमदूतः आगतः तदा स वास्तविके जनं परिचेतुं न अशकत्। अतः स तूष्णीं निवृत्तः।

यमपुरीं गत्वा स निजस्वामिने यमराजाय न्यवेदयत्– "भगवन्, यस्य जनस्य आनयनार्थम् अहम् आदिष्टः तादृशाः जनाः तु तस्मिन् गृहे द्वादश सन्ति। तत्र कः भवदभीष्टः? तं परिचेतुं च मया किं कर्तव्यम्?"

यमः तस्य कर्णे किञ्चित् जपित्वा तं पुनः पृथ्वीतलं प्रैषयत्। स तत्र प्रत्यागत्य तं नेतुं पुनः प्रायतत। तम् अज्ञातजनं सम्बोध्य असौ अकथयत् – "प्रियवर, निःसन्देहं त्वम् अतीव चतुरः, नाना-रूप-धारणविद्यायां विशारदः, सिद्धहस्तः। किन्तु अस्त्येकः विषयः यत्र त्वया प्रमादः कृतः, केवलम् एकैव त्रुटिः अवशिष्टा तव कृतौ।"

एतत् श्रुत्वा वास्तविकजन झटिति उत्प्लुत्य अपृच्छत् – "कुत्र अस्मिन् अंशे?" दूतश्च तत्क्षणम् अवदत् – "यथार्थतः अस्मिन्नेव अंशे।"

एवं तासु मूकमूर्तिषु यमदूतः तं चतुरपुरुषं निगृह्य यमपाशेन बद्धवान्।

■■■

गीतमञ्जरी

जङ्गमदूरवाणी

– संगीता
एम.ए., संस्कृत, पूर्वार्द्ध

जय जय जय! जङ्गमवाणी! जय मोहनवाणि!
मानसमोहन सुन्दरवाणि! जय जङ्गमवाणि।। जय-जय...।।

आपणिकानां स्त्रीणां किमुवै! चौरजनानाञ्च
कर्षकचालककामिजनानां भूषणमेषा हि!
चित्रं गीतं नाट्यं वाद्यं प्रेक्ष्यं सर्वमहो। जय-जय...।।

यात्रासमये सर्वत्रैषा तिष्ठति कर्णपुटे
दृश्यश्रव्यमनोहरकेलिं दास्यति हा सुलभाम्।
आशयलेखनमायात्यपि चिरमाश्चर्यं नूनं
प्रपञ्चजालिकगेहं चित्रं सर्वं ज्ञानमयम्।। जय-जय...।।

पठितुर्हस्ते मा भूदेषा सर्वैर्विदितमहो
स्यूते कोशे कुत्रचिदेषां कांक्षति सामीप्यम्।
पाठनसमये कष्टं पश्यत निश्शब्द भजति
'मिस्काल्' केलिं कलत्यनिशं तस्मैनिश्शुल्कम।। जय-जय...।।

रात्रौ शय्यालङ्कृतिरेषा कामिजनानां हि
स्वैरालापः प्रचलति सौख्यं नित्यं हा चित्रम्।
जगति समस्ते जनताहस्ते वाण्येषा हस्ते
ददाति सौख्यं सर्वजनेभ्यः सुकरं दिनमानम्।। जय-जय...।।

आतुरभवने शय्यायां जनमेलननिलये च
त्याज्या ग्राह्यविवेचनबुद्ध्या अतुला सा योज्या।
कक्ष्यादेशे देवस्थाने श्मशानभूमौ च
परजनदुःखप्रसूतिरेषा धीरजनैस्त्याज्या।। जय-जय...।।

■■■

संस्कृतभाषा

– आदित्य
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

संस्कृतभाषा सुधासकाशा।
वेदादीनां सा वाणी।

परमात्मप्रेरिता पवित्रा
वाणीनां सैवेन्द्राणी॥

भव्य-सुभव्या निषेवितव्या।
नित्यं नित्यं नव्या नव्या।

संवेदनानि सर्वाण्यपि नो-

ऽस्यामाविष्करणीयानि॥

गीर्वाणानां प्रिया गिरेयम्।

अस्या अनुशीलनं विधेयम्।

सहजा वागेषैवार्याणां

प्रथितान्यस्याः कार्याणि॥

संस्कृतसंस्कृतिरात्माराध्या।

शुभैः प्रयत्नैः सा नः साध्या।

परमा प्रीतिर्भवतात् तस्यां

ददाति सा वरदानानि॥

■■■

मधुरभाषिणी वाणी

– अभिषेक पटेल
एम.ए., संस्कृत, पूर्वार्द्ध

❖ येषां न विद्या न तपो न दानं, ज्ञानं न शीलं न गुणो न धर्मः।
ते मर्त्यलोके भुवि भारभूताः, मनुष्यरूपेण मृगाश्चरन्ति॥

❖ माता शत्रुः पिता वैरी, येन बालो न पाठितः।
न शोभते सभामध्ये हंसमध्ये बको यथा।

❖ जाड्यं धियो हरति सिञ्चति वाचि सत्यं, मानोन्नतिं दिशति पापमपाकरोति।
चेतः प्रसादयति दिक्षु तनोति कीर्तिं, सत्सङ्गतिः कथय किं न करोति पुंसाम्॥

❖ परिवर्तिनि संसारे मृतः को वा न जायते।
स जातो येन जातेन याति वंशः समुन्नतिम्॥

❖ दानं भोगो नाशः तिस्रो गतयो भवन्ति वित्तस्य।
यो न ददाति न भुङ्क्ते तस्य तृतीया गतिर्भवति॥

❖ भवन्ति नम्रास्तरवः फलोद्‌गमैर्नवाम्बुभिर्दूरविलम्बिनो घनाः।
अनुद्धताः सत्पुरुषा समृद्धिभिः स्वभाव एवैष परोपकारिणाम्॥

❖ श्रोत्रं श्रुतेनैव न कुण्डलेन, दानेन पाणिर्न तु कङ्कणेन।
विभाति कायः करुणापराणां, परोपकारेण न तु चन्दनेन॥

❖ प्रारभ्यते न खलु विघ्नभयेन नीचैः, प्रारभ्य विघ्नविहता विरमन्ति मध्याः।
विघ्नैः पुनः पुनरपि प्रतिहन्यमानाः, प्रारभ्य चोत्तमजना न परित्यजन्ति॥

❖ सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग भवेत्॥

■■■

भारतस्य-देवालयाः

कन्याकुमारीमन्दिरम्

– शुभम केसरी
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

भारतभूमौ अस्ति एकं स्थानं यतः युगपदेव त्रयाणां समुद्राणां जलानि द्रष्टुं शक्यन्ते। तदेव कन्याकुमारी कुमार्यन्तरीपः वा – भारतभूमेः अन्तिमप्रान्तः। तत्र स्थित्वा त्वं बङ्गोपसागरस्य उपरि सूर्योदयम् आरब्यसागरस्य उपरि सूर्यास्तं च द्रष्टुं शक्नोषि। यदि तव वामतः बङ्गोपसागरः स्यात् दक्षिणतश्च आरब्यसागरः तर्हि त्वत्सम्मुख जलविस्तारः खलु भारतमहासागरः।

यदि त्वं नत्वा मुष्टिपूरम् उपलान् उद्धरेः तर्हि द्रक्ष्यसि ते विभिन्नवर्णाः इति। कोऽपि स्थानीयः बद्धः त्वां तान् प्रशंसन्तं पश्येत् चेत् तर्हि तत्र विरम्य कथं ते ईदृशाः जाताः इति कथयेत्। तत् मधुरम्, सुवासम्, रञ्जितम् ओदनम् उपलेषु परिवर्तितम्। तदा गोष्ठीप्रसङ्गेन सः कामपि अश्रुतपूर्वां विषादपूर्णां च कथां श्रावयेत्।

प्राचीनकाले भारतभूमिः असुरराजेन बाणासुरेण सन्त्रासिता अभवत्। देवा अपि भयभीताः। दिव्यजननी असुरदलनाय कस्यचित् राज्ञः कन्या भूत्वा धरणीम् अवतीर्णा। तस्य राजधानी भारतभूमेः सीमायाम् आसीत्।

वर्धमाना सा राजकन्या रूपयौवनसम्पन्ना अभवत्। तस्याः विवाहं कर्तुकामः तत्पिता योग्यवरान्वेषणम् अकरोत्। किञ्चित्कालाय स्वभगवत्तां विस्मृता देवी अकस्मात् इदं तथ्यं प्रति प्रबुद्धा यत् सा कमपि मनुष्यं वरयितुं नार्हति। यदि विवाहः कर्तव्यः तर्हि स्वचिरन्तन-सहचरः शिव एव वरणीयः।

राजकुमारी शिवम् अध्यायत्। स्वधामनि कैलासपर्वते प्रगाढसमाधेः प्रबुद्धः शिवः अबोधयत् यत् अधुना सुदूरदक्षिणं गत्वा राजकन्या वरणीया। शुभमुहूर्तः निश्चितः – मध्यरात्रे विवाहः भविष्यति।

निश्चितसमयात् बहुकालपूर्वं शिवः स्वहिमसिंहासनात् अवतीर्य भारतभूमेः सीमाभिमुखं पदयात्राम् आरभत। किन्तु आसन्नः विवाहः सकलान् देवान् ऋषीन् च व्याकुलयामास। देवी बाणासुरवधाय अजायत। कुमारीरूपेण एव सा तत् कर्तुं शक्नुयात्। यदि सा शिवं वरयित्वा कैलासं गच्छेत् तर्हि तस्याः धरित्र्याम् अवतरणस्य उद्देश्यं विफलं भवेत्।

चतुरः ऋषिः नारदः समस्यासमाधानाय प्रार्थितः। सः कुक्कुटस्य आकृतिं धृत्वा, गच्छतः शिवस्य मार्गसमीपगुल्मेषु लुक्कायमानः अरौत्। अन्यमनस्कः शिवः कुक्कुटरवं श्रुत्वा मर्माहतः अभवत्। तेन चिन्तितम् – शुभमुहूर्तः अतिक्रान्तः, उषाकालः सम्प्राप्तः। विषण्णः सः उपाविशत्। तस्य उपवेशनं नाम गभीरसमाधौ निमज्जनम्।

तदेवम्, शिवः कन्यागृहं न प्राप्नोत्। सः कन्याकुमार्याः कतिपय-क्रोशेषु 'शुचीन्द्रम्' नामके मन्दिरे अतिष्ठत्, अधुनापि तिष्ठति।

अचिरं बाणासुरः राजकन्यायाः रूपगुणादिविषये श्रुत्वा घटनास्थलं प्राप्तवान्। सः राजकन्यया सह विवाहम् अभ्ययाचत। यदा तस्य अधियाचना प्रत्याख्याता तदा सः तां बलेन ग्रहीतुम् अयतत। राजकन्या खड्गं धृत्वा, तेन सह किञ्चित्कालं नियुध्य, तं धृष्टासुरम् अमारयत्।

वधूवेशा सा सुदीर्घकालं शिवस्य प्रतीक्षाम् अकरोत्। विवाहभोजाय रन्धितम् ओदनं कालक्रमेण लघूपलेषु परिवर्तितम्। ततः एव कन्याकुमार्याम् उपलाः इयद्-वर्णवैचित्र्ययुक्ताः।

भारतभूमौ, सुदूरे दक्षिणापथे अन्तिमस्मृतिशिलायाः अभ्यन्तरे देवी अद्यापि उत्तानं तिष्ठति। अतीव रमणीया हि देव्याः प्रतिमा। पूर्वदिशायां क्षितिजे उदयन्तं सूर्यं पश्यन्ती देवी शिवस्य आगमनं प्रतीक्षते। इत्थं शाश्वत-आशायाः प्रतीकं सा। पवित्रभारतभूमेः सीमायाः अधिष्ठात्री देवी अपि सा। असुरं निहत्य अक्षतं विराजमाना सा चिरन्तनी भारतभूमिः अपराजेया इति स्मारयति।

कन्याकुमारीं गच्छति मार्गे अरण्यानि, गुल्माः क्रोशानुक्रोश-व्यापि- नारिकेलवृक्षाश्च तस्याः स्मृतौ सदा हरितायन्ते। न खलु कन्याकुमार्याः मन्दिरं भव्यभवनं तथापि बहुशताब्दीभ्यः इदं तीर्थस्थानं परिगण्यते। शतशः वर्षाणि तमिळ्राज्यस्य शासनं कुर्वन्तः पाण्ड्यनृपतयः देवीं पूजयन्ति स्म। द्वादश्यां त्रयोदश्यां वा शताब्द्यां पुरातनस्य उपरि नूतनं वर्तमानमन्दिरं तैः निर्मितम् इति प्रतिभाति।

ऑक्टोबर्मासे नवरात्रोत्सवः भवति। अयं कन्याकुमार्याः बाणासुरस्य उपरि विजयस्य स्मारकोत्सवः। सत्यपावित्र्ययोः साक्षात्प्रतिमायाः देव्याः कामदर्पयोः मूर्तरूपस्य बाणासुरस्य च युद्धं चित्ताकर्षकरूपेण अभिनीयते अत्र। सम्भवतः अधुनावधि सङ्घर्षः न समाप्तः इति मनुष्यान् स्मारयति इदम्।

■■■

तिरुपतिमन्दिरम्

– कमल किशोर
बी.ए., संस्कृत

अस्ति प्राचीपर्वतमालायां शेषाचलम्-नाम्ना प्रसिद्धः पर्वतः। तस्य शृङ्गम् अतीव शान्तं मनोहरं च।

एकदा महर्षिः नारदः विष्णोः समक्षं तच्छृङ्गस्य महतीं स्तुतिम् अकरोत्। तत् स्थानं द्रष्टुं समाकृष्टमनाः विष्णुः योग्यावसरं प्रतीक्षमाणः अस्ति।

अथैकदा लक्ष्मीदेव्या सह विष्णोः विवादः अभवत्। विष्णुः वैकुण्ठं त्यक्त्वा पृथिवीम् आगतः। सः न केवलं स्वपत्न्याः अपि तु देवदेवीभ्यः मानवेभ्यश्च दूरे स्थातुम् ऐच्छत्। तदर्थम् उपयुक्तम् एकान्तस्थानं प्राप्तुकामः सः शेषाचलं स्मृत्वा तत्रैव अगच्छत्।

हरितवनैः विभूषितां सप्तानां सुनीलशृङ्गाणां मालां दृष्ट्वा विष्णुः नितरां प्रसन्नः अभवत्। सः तत्र ध्यानं कर्तुम् उपाविशत्।

बहुकालः व्यतीतः। ध्यानस्थं विष्णुं परितः वल्मीकं सञ्चितम्। तेन सः पूर्णतया आच्छादिताङ्गः अभवत्।

अनन्तरं कस्यापि पशुपालस्य कुतूहलेन विष्णोरिदं गुह्यस्थानं प्रकटीभूतम्। पशुपालस्य धेनुः नित्यं तद् वनं गत्वा कुत्रापि अदृश्या भवति स्म। एकदा सः तां निभृतम् अन्वगच्छत्। सा वनं प्रविश्य, पर्वतम् आरुह्य वल्मीकस्य उपरि अतिष्ठत्। अहो आश्चर्यम्! तस्याः स्तनात् दुग्धधाराः प्रास्रवन्।

भयापहृतचेताः, विस्मयाविष्टः सः झटिति नगरं गत्वा राज्ञे सर्वं न्यवेदयत्। राजा त्वरितं तत्र गत्वा वल्मीकाच्छन्नं विष्णुविग्रहं बहिरकरोत्। तस्मिन् स्थाने तेन महता व्ययेन रमणीयं मन्दिरं निर्मापितम्। असौ विग्रहः 'तिरुपतिबालाजी' नाम्ना विख्यातः अभवत्।

विष्णुविरहविधुरा लक्ष्मीः स्वपतिसान्निध्यं प्राप्तुं पृथिव्यां कस्मिंश्चित् राजकुले प्रादुर्भूय पद्मावतीनाम्ना प्रथिता अभवत्। एकदा सा वनं भ्रमितुं गता। बालाजी तस्मिन् वने मनुष्यरूपेण विचरति स्म। अपूर्वसौन्दर्यमयीं पद्मावतीं दृष्ट्वा सः तां तत्कालम् अभ्यजानात्। तत्र देवदम्पत्योः पुनर्मिलनम् अभवत्।

अधुना अस्माभिः दृश्यमानं बालाजीमन्दिरं चोलवंशीयनृपेण थोण्डमन्महोदयेन निर्मितम् इति अनुमीयते। सः ख्रिस्तीयप्रथमशताब्द्यां विशालराज्यस्य अधिपतिरासीत्।

तिरुपतिमन्दिरं दक्षिणभारतीय-शिल्पकलायाः भव्यं निदर्शनम्। तस्य पावनगर्भगृहस्य उपरिस्थं 'विमानं' स्वर्णेन आच्छादितम्।

आन्ध्रप्रदेशस्थम् इदं मन्दिरं प्रतिवर्षं लक्षशः यात्रिणाम् आकर्षणकेन्द्रम्। यात्रिषु बहवः भक्ताः बृहतः उपहारान् प्रयच्छन्ति। अतः भारते सुसमृद्धमन्दिरेषु इदं मन्दिरम् अन्यतमम्। अस्य आयस्य भूरिभागः विभिन्नशैक्षिक-सांस्कृतिक-सामाजिक-संस्थाभ्यः साहाय्यरूपेण प्रदीयते।

तेलुगुभाषायां 'तिरु' इति शब्दस्य अर्थः 'श्रीः'। अतः तिरुपतिमन्दिरं नाम श्रीपतेः, लक्ष्मीपतेः विष्णोः वा मन्दिरम्। विष्णुमाहात्म्येन तत् स्थानमपि 'तिरुपति' इति कथ्यते।

अधुनातन-मन्दिरस्य निर्माणात् बहुकालपूर्वम् अत्रत्यः देवः सुप्रसिद्धः आसीत्। तस्य दर्शनार्थम् आगताः रामसीतालक्ष्मणाः तत्र किञ्चित्कालम् अवसन् इति अनुश्रूयते। तेषां निवासस्थानं स्वामितीर्थं कथ्यते।

ततः शताधिकवर्षेभ्यः परं पाण्डवाः अपि तत्र एकस्मिन् शृङ्गे वर्षमेकम् अत्यवाहयन्। तत् शृङ्गं परम्परया पाण्डवशृङ्गम् इति विश्रुतम्।

सार्धचतुःशतमानमिते समुच्चशिखरे निर्झरैः परिवृतं तिरुपतिमन्दिरं खलु भगवतः विष्णोः अनुरूपं दिव्यं निकेतनम्।

■■■

भ्रष्टाचारः, समस्या समाधानं च

– विशाल आर्य
बी.ए. संस्कृत, तृतीय वर्ष

भ्रष्टाचारस्तु सर्वेषां, पापानां मूलकारणम्।
भ्रष्टाचारेण लोकानां, सन्मतिः क्षीयते सदा।।

कः भ्रष्टाचारः – अनुचितसाधनेन धनोपार्जनम्। भ्रष्टाचारो अनेकरूपः। यथा उत्कोच- (घूस) ग्रहणम्, खाद्यवस्तुषु अखाद्यस्य मिश्रणं अनुचितसाधनेन धन-प्राप्तिः, स्वेष्टकार्यस्य संपादनार्थं उत्कोच-प्रदानम्। साम्प्रतं भारतवर्षे भ्रष्टाचारः विषवृक्षवत् संवर्धते। उकोचदानम् उत्कोचग्रहणम् च सर्वत्र दृश्यते। उत्कोच-प्रदानं विना राजकीय-कार्यालयादिषु स्वल्पमपि कार्यं साधयितुम् न शक्यते। पदे पदे उत्कोच ग्रहणम् एका महती समस्या वर्तते। केवलं सामान्याः अधिकारिणः एव अत्र न वर्त्तन्ते, अपितु उच्चाधिकरिणः अपि आमूलं उत्कोचग्रहणे प्रवृत्ताः।

यथा राजा तथा प्रजा – यदा उच्चाधिकारिणः उत्कोचं गृह्णन्ति, तदा निम्नपदस्थाः अधिकारिणः अपि निर्भयं उत्कोचग्रहणे प्रवर्तन्ते। भारते भ्रष्टाचारस्य स्थितिः भयावहा वर्तते। जनतया किं कर्तव्यम् – किंकर्तव्यविमूढा वर्तते। कस्य नु शरणं गच्छामि। न कश्चिद् मां श्रृणोति।।

भ्रष्टाचारः शतविधः – यो यत्र वर्तते, स तत्रैव भ्रष्टाचारे प्रवृत्तः। मन्त्रिणः सांसदाः, विधायकाः अपि एतस्मिन् कार्ये न लज्जाम् अनुभवन्ति।

सत्यम् एतत् यद् भ्रष्टाचारः असाध्यो रोगः इव सञ्जातः। परन्तु निपुणाः भिषजः असाध्यमपि रोगं साध्यं कुर्वन्ति। यत्ने कृते नहि किंचिद् असाध्यम् भवति। सर्वकारस्य शिथिलतैव अत्र प्रमुख कारणं, अत् च – आतंकवादस्य कारणाद् अपि भ्रष्टाचारः भवति इति।।

आतंकवादस्य कारणानि – संक्षेपतः एतानि कारणानि सन्ति आतंकवादस्य-स्वार्थपरता, स्वार्थनिबद्धा संकुचिता दृष्टिः वा, आतंकस्य मूल-कारणं वर्तते। एषा स्वार्थदृष्टिः साधनरूपेण आतंकवादं पोषयति प्रसारयति च यथा क्षेत्रवादः, भाषावादः धर्मान्धता, आर्थिकी विषमता, समन्वयस्य अभावः च। न्यायपालिकायाः दुर्बलत्वं नैतिक-मूल्यानां ह्रासः, प्रशासनस्य निष्क्रियत्वम्, राजनैतिकं वा कारणम् इत्यादीनि नैकानि कारणानि।

अद्यत्वे क्षेत्रवादो विशेषरूपेण वैमनस्यं जनयति। भारते वर्गविषये स्वीयां सांस्कृतिकीं श्रेष्ठतां साधयितुं सांप्रदायिकं संघर्षं प्रेरयति। चौर्यादि-कार्येषु आतंकवादस्य मूलकारणं आर्थिकं वर्तते। शिक्षितेषु अवृत्तिः समस्या चौर्यादिकस्य कारणं वर्तते। ते धनार्थं भ्रष्टाचारम् अपराधवृत्तिम् च आश्रयन्ते।

भ्रष्टाचारस्य कुप्रभावः – भ्रष्टाचारकुप्रभावः सांस्कृतिकं आर्थिकं, सामाजिकं धार्मिकं च पक्षं दूषितं करोति। भ्रष्टाचारस्य कारणेन समाजे हिंसा, अनैतिकता, आराजकता च वर्धते।। जनतायाः मनोबलं क्षीयते असामाजिकानाम् उत्साहः वर्धते।।

भ्रष्टाचारस्य निरोधोपायाः – १. आचारशिक्षायाः, नैतिकशिक्षायाश्च शतविधः प्रचारः प्रसारः स्यात्। २. कठोरदण्डस्य व्यवस्था भवेत्। महाभारते उच्यते-दण्डः शास्ति प्रजाः सर्वाः दण्ड एवाभिरक्षति।। ३. धनलोलुपतायाः परित्यागस्य शिक्षणम्। ४. विलासि-जीवनस्य परित्यागः। ५. कठोरश्रमस्य शिक्षा। ६. राजपुरुषाणां चल-अचल- संपत्ति-घोषणा अनिवार्या स्यात्। ७. महर्षिमनोः शिक्षायाः प्रसारणम्।

यथाः – अधर्मेणैधते तावत्, ततो भद्राणि पश्यति।
ततः सपत्नान् जयति, समूलस्तु विनश्यति।।
मनु. ४.२७४

■■■

परहिताय सर्वस्वं त्यक्तव्यम्

– अभिषेक पटेल
एम.ए. संस्कृत (उत्तरार्द्ध)

नास्ति विद्यासमं चक्षुः नास्ति सत्यसमं तपः।
नास्ति रागसमं दुःखं नास्ति त्यागसमं सुखम्।।

पुराकाले एकदा भगवान् बोधिसत्त्वः शिवीनामा राजा बभूव। बाल्यकालात् एव सः विनयशीलः, शास्त्रपारङ्गतः, वृद्धोपसेवी च आसीत्। समस्तगुणोपेतः सः नगरस्य परितः दानशालाम् अकारयत् यत्र याचकानां समूहः अन्न-सुवर्णादिकानि अभिष्टानि वस्तूनि प्राप्य सन्तुष्टः अभवत्। तत्र देश-देशान्तरेभ्योऽपि जनाः आयान्ति स्म।

स राजा बहुधनलाभेन सन्तुष्टानां याचकानां विरलसंख्यां दृष्ट्वा अचिन्तयत् "मम अर्थिनः तु धनलाभमात्रेण सन्तोषं भजन्ते। नूनं ते दानवीराः सौभाग्यशालिनः यान् याचकाः शरीरस्य अङ्गानि अपि याचन्ते।" तदा तस्य दानशीलतां परीक्षितुं देवाधिपतिः इन्द्रः नेत्रहीनयाचकस्य रूपं धारयित्वा तत्पुरतः अवदत् – "हे राजन्! भवतः दानवीरताम् आकर्ण्य भवत्समीपम् आगतोऽस्मि। देव! रवि-शशि-तारा-मण्डलभूषितं जगत् एतत् कथमिव पश्येयं चक्षुर्हीनः।"

राजा उवाच – भगवन्! आदिश्यताम्, किं करवाणि?

विप्रः उवाच – यदि भवान् प्रीतः तदा त्वत्तः एकचक्षुषः दानम् इच्छामि येन मम लोकयात्रा निर्बाधा भवेत्।

राजा उवाच – भो मित्र! किमेकेन चक्षुषा, अहं भवते चक्षुर्द्वयमेव प्रयच्छामि इति। राज्ञः नेत्रदानार्थं निश्चयं ज्ञात्वा अमात्याः अवदन् – महाराज! अलं दुस्साहसेन, प्रभूतं धनमेव दीयताम्।

अथ स राजा तान् अवदत् – "दास्यामीति प्रतिज्ञाय योऽन्यथा कुरुते मनः।
कार्पण्यानिश्चितमतेः कः स्यात् पापतरस्ततः।।

नाहं स्वर्गं न मोक्षं वा कामये किन्तु आर्तानां परित्राणाय एव मे निश्चयः। इत्युक्त्वा। स वैद्योक्तविधिना नीलोत्पलम् इव चक्षुर्द्वयं शनैः उत्पाट्य प्रीत्या याचकाय समर्पितवान्। अथ विस्मितः शक्रः अचिन्तयत् –

"अहो धृतिः! अहो सत्त्वम्!
अहो सत्त्वहितैषिता!"

कतिपयैः दिनैः व्रणविरोपणे जाते एकदा राजा सरोवरस्य समीपे विहरति स्म। तदा तस्य पुरतः पुनः देवाधिपतिः इन्द्रः उपस्थितः भूत्वा तस्य अपूर्वत्यागवृत्तिं प्रशंसन् अभाषत् –

"शक्रोऽहमस्मि देवेन्द्रस्त्वत्समीपमुपागतः।
वरं वृणीष्व राजर्षे। यदिच्छसि तदुच्यताम्।।"

एवम् उक्तेन राजा नेत्रार्थं प्रार्थिते सति शक्रस्य प्रभावेण तस्य चक्षुर्द्वयं प्रतिष्ठितम् अभवत्। तदा प्रीतः शक्रः वरम् अदात् –

"शतयोजनपर्यन्तं शैलानां पारं च द्रष्टुं समर्थः अभवत्" इति। इत्युक्त्वा शक्रः तत्रैव अन्तर्हितः अभवत्।

अतः सत्यमेव उक्तम् –

गौरवं प्राप्यते दानान्न तु वित्तस्य सञ्चयात्।
स्थितिरुच्चैः पयोदानां पयोधीनामधः स्थितिः।।

■■■

शनैः शनैः मम जीवने आगच्छ
(धीरे-धीरे से मेरी ज़िन्दगी में आना)

– अतुल कुमार
बी.ए., संस्कृत, तृतीय वर्ष

प्रतिपलं मम संस्मरणं स्मरणे मात्रं त्वम्
हृदयस्येमां वार्त्तां कथयायसहं कम्?
प्रतिपलं मम संस्मरणं स्मरणे मात्रं त्वम्
हृदयस्येषां वार्त्तां कथयान्यहं कम्?
तव मम मम तव एक-प्राणाः एक-प्राणाः किं कुर्याम?
भ्रमाणि, नृत्यानि, गायानि, लिखानि तव कृते किं कुर्याम्?
शनैः शनैः मम जीवने आगच्छ
शनैः शनैः मम हृदयं चोरय।
त्वत्तः प्रेम कति मे शुभ्रे प्रियतमे।
सति मेलमे जानीहि ज्ञापने...
सायं हितत् कार्यं हितत् त्वां विना सुहृदे!
निद्रा नहि त्वागमो नहि त्वां विना सुप्रिये!
सायं हि तत् कार्यं हि तत् त्वां विना सुहृदे!
निद्रा नहि त्वागमो नहि त्वां विना सुप्रिये!
तव मम मम तत एक-प्राणाः एक-प्राणाः किं कुर्याम्?
भ्रमाणि, नृत्यानि, गायनि लिखानि तव कृते किं कुर्याम्?
शनैः शनैः मम
तव मम योगः जीवने सुसंयोगः श्रावयामीदमहं तु सर्वान्
त्वं मत्तः दूरेऽहम् एकाकी सखि रे! प्रार्थये सदा परमेशान
त्वां विना दिनं मम गतमेकवर्षं
ममाऽभवत् दुर्दशा ममाऽभवत् दुर्दशा
स्थिति स्वां सर्वां मामपि ज्ञापय
प्रत्यावर्त्तय कदापि त्वां मम पार्श्वे एहि नु...
शयेऽहं किल खिद्येऽहं त्वां विना सुरमे!
प्राप्य सर्वं गतं मे त्वं विना सुप्रिये!
शयेऽहं ....
तव मम मम तव एक-प्राणाः एक-प्राणाः किं कुर्यामि?...
शनैः शनैः

■■■

महर्षिदयानन्देन प्रतिपादिता शिक्षा वर्तमानकालिकी शिक्षा च

– अजीतकुमारः
सहायक प्राध्यापक, संस्कृत-विभाग

शिक्षा मानवसमाजस्याभिन्नमङ्गमस्ति एतस्मात्कारणात् मानवनिर्माणस्यापि प्रमुखा घटिका विद्यते। मानवस्य जीवनयात्रायाः आरम्भः शिक्षणेन भवति। शिक्षाजगति प्रबलप्रयत्ने कृतेऽपि मानवस्य पूर्णरूपेण निर्माणविकासौ न सम्भवतः। अतोऽद्यतनीयासु परिस्थितिषु शिक्षा-सम्बन्धिगम्भीरमन्थनस्य आवश्यकता प्रतीयतेऽद्य।

काले काले मनीषिभिः शिक्षा परिभाषिता क्रियते। अत्र महर्षिणा दयानन्देन प्रतिपादितशिक्षायाः स्वरूपमुद्घाटयिष्यामः अनेन सह एव वर्त्तमानकालिकशिक्षायाः स्वरूपमपि। ऋषि दयानन्दानुसारं शिक्षायाः अर्थः, कन्यानां शिक्षा, विद्यार्थिनां शिक्षकानां च कर्त्तव्यानि, पठनपाठनविधिः, सहशिक्षायाः हानिः, आर्ष-शिक्षा, बालकबालिकानां पाठशालानां पृथक्-पृथक् व्यवस्था, शिक्षायाः: प्रारम्भिकमूलसिद्धान्ताः पितृणां कर्त्तव्यानि, वर्त्तमाने शिक्षायाः स्वरूपं चेत्यादिविषयाः लेखेऽस्मिन् प्रकाशिताः भविष्यन्ति।

शिक्षायाः विषये ऋषेः दयानन्दस्य मान्यताऽस्ति 'यया विद्यायाः सभ्यतायाः, धर्मात्मतायाः, जितेन्द्रियतायाश्चेत्यादिशुभगुणानां वृद्धिः भवेत् अविद्यादिदोषाणां च शमः जायते' सा शिक्षेत्युच्यते।१ एतदेव तथ्यं ऋषिः दयानन्दो व्यवहारभानौ स्पष्टं कुर्वन् लिखति- 'यया मनुष्या विद्यादिशुभगुणान् प्राप्याविद्यादिदोषांश्च त्यक्त्वा सदानन्दिताः स्युः सोच्यते शिक्षा।'

महर्षेः मन्तव्यानुसारं शिक्षा परिष्कारसंस्कारप्रधानयोः प्रथमं साधनं विद्यते। विचारेणानेन महर्षिणा दयानन्देन स्वप्रसिद्धग्रन्थे सत्यार्थ-प्रकाशस्य प्रमुखतया समुल्लासद्वयं शिक्षासम्बद्धं लिखितम्। ययोः द्वयोः समुल्लासयोः शिक्षायाः प्रारम्भिकमूलभूतसिद्धान्तानां वर्णनं कुर्वताऽध्ययनाध्यापनविधेरन्तर्गतशिक्षणालयेभ्यः पाठ्यक्रमस्यापि समायोजना कृता। विषयेऽस्मिन् प्रकाशः अग्रे प्राप्स्यते। शिक्षा मानवनिर्माणस्य प्रमुखं सोपानं विद्यते तथ्यमिदं दृष्टिगतं कुर्वता द्वितीयसमुल्लासस्यारम्भे शतपथब्राह्मणस्य प्रमाणं प्रस्तुवता महर्षिणा लिखितम् – 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेद'

समुल्लासेऽस्मिन् वर्णितायाः बालशिक्षायाः उत्तमसरणी गृहस्थानां कृते वरणीयोपादेया चास्ति। इयं मनुष्यनिर्माणस्याधारभूता शिक्षास्ति या मात्रा पित्रा च गृहकुले एव प्रदीयते। तदनन्तरं गुरुकुलेऽध्ययनस्य क्रमः प्रारभ्यते। यस्मिन्नसौ आचार्यस्यान्तेवासी भूत्वा शास्त्रीयज्ञानमधिगतं कुर्वन् तदाचरणरूपेण आत्मसात् करोति। विद्याव्रतस्नातकोपाधिं चालङ्कृत्य समावर्तनेन गृहकुलं प्रत्यागच्छति।

शिक्षायाः तात्पर्यं केवलमक्षरज्ञानमेव नास्ति पूर्णशिक्षा सैवास्ति या भौतिकविकासेन सदाचारस्यापि विकासं कारयेत् 'सा शिक्षा या विमुक्तये' यया सर्वाङ्गीणा समुन्नतिः सञ्जायते सा भवति शिक्षा। ईदृश्याः शिक्षायाः प्राप्तौ सुयोग्यशिक्षकानां महती भूमिका भवति। विदुषः शिक्षकस्य स्वरूपं तस्य कर्तव्यानां च बोधः वेदे सविस्तरं प्राप्यते। ऋग्वेदीयप्रमाणेन स्वामिनो लिखन्ति। स एवास्ति विद्वान् सर्वेषां मङ्गलकारी यः स्वयं धर्ममार्गं गत्वा अन्यान् धर्ममार्गं गन्ता कुर्यात्' (दयानन्दभाष्य)।

स्वामिदयानन्दानुसारं विद्वत्शिक्षकस्य कर्तव्यं

राष्ट्रस्य-भाविकर्णधारशिष्येभ्यः विद्यायाश्चरित्रस्य च शिक्षां दत्वा तान् सुयोग्यान् कुर्यात्। शिक्षकाः कीदृशाः भवेयुः? विषयेऽस्मिन् स्वामिनो लिखन्ति ये नित्यनूतनविद्याग्रहणस्य इच्छुकाः ऐश्वर्याभिलाषिणः, जितेन्द्रियाश्चेदृशाः अध्यापकाः एव येऽज्ञानिनामज्ञानं दूरीकृत्य तेभ्यः ज्ञानं ददति ते एव पूजनीयाः भवन्ति। अग्रेऽपि लिखन्ति यो मेधावी परोपकारी पूर्णपण्डितः तमेव सुयोग्यशिक्षकं ज्ञात्वा शिष्यैः प्रश्नोत्तरविधिना स्वस्यसर्वाः शङ्काः दूरीकर्तव्याः किन्तु योऽविद्वान् ईर्ष्यालुः कपटी स्वार्थी च भवेत् तस्मात् दूरे एव भवितव्यम्।

यथा शिक्षकानां छात्रान् प्रतिः कर्तव्यं विद्यते यत् तेभ्यः प्रेम्णा शिक्षां दत्त्वा तान् सुसंस्कृतान् कुर्युः। तथैव छात्राणामपि शिक्षकान् प्रति कर्तव्यमिदमस्ति यन्मनसा सदैव छात्रैः ते शिक्षकाः सेवनीयाः।

विषयेऽस्मिन् महर्षिणा दयानन्देन येषु महत्त्वपूर्णतथ्येषु ध्यानमाकृष्टं तानि सन्त्येतानि-विद्यार्थिनां कृते उचितमिदं यत्ते विदुषां शिक्षकानां मनसा वाचा कर्मणा वा सत्कारं विधाय सुसंस्कृतान्नादिभिः नित्यं तेषां सेवां कुर्युः।३ विद्यार्थिनः विद्यायाः सत्योपदेशस्य च प्रदातुः आचार्यस्य श्रेष्ठपुष्कलदक्षिणादिभिः सत्कारं कुर्युः।४

ब्रह्मचर्ये वीर्यनिग्रहं कृत्वा परिमिताहारविहारं कुर्वन्तः आचार्यस्य समीपे गत्वा सेवां च कृत्वा परिमिताहारविहारं कुर्वन् नीरोगी भूत्वा विद्याप्राप्तयेऽधिकाधिकं प्रयत्नशीलाः भवेयुः छात्राः।५ ते एव विद्यार्थिनः श्रेष्ठाः भवन्ति ये सोत्साहं पठितपाठस्योत्तमपरीक्षां ददति। किन्त्वद्य पठनपाठने गुरुशिष्यपरम्परायाः उदात्तोऽयं क्रमो विलुप्तप्रायो दृश्यते। परिणामतः जीवने शिक्षायाः अवतरणस्यापि अवसानं दृष्टिगतं भवति। शिक्षायाः जीवनेन सह कश्चित् सम्बन्धः शेषो न विद्यते। नैतिकतायाः अभावे शिक्षिता अपि अशिक्षिता एव सन्ति। अद्य शिक्षायाः प्रचारः पूर्वापेक्षयाधिकं विद्यते पुनरपि मनुष्यः पशुत्वं प्रति पलायते तर्हि अस्य अयमेवार्थः यत् वर्तमानशिक्षायां क्वचित् तु त्रुटिरवश्या विद्यते। अद्य विद्यालयेषु केवलं छात्राणां बुद्धेः विकासस्य प्रयत्नो विधीयते तेषामङ्गत्रये आत्मनि शरीरे मनसि च किञ्चिदपि ध्यानं न दीयते। नैतिकतायाः धर्मस्य च पाठोऽद्य विद्यालयेषु न पाठ्यते। अस्यैव परिणामः यद्द्योच्चशिक्षासम्पन्नछात्रेषु अपि नैतिकतायाः धार्मिकतायाश्चाभावो दृश्यते परं महर्षिदयानन्दस्य मते शिक्षा ईदृशी विद्यते या व्यक्तौ सर्वाङ्गीणविकासने सहैव तस्मिन् सर्वोत्तमगुणानामाधानं कारयेत्।

विद्यालयेषु महाविद्यालयेषु च त्वद्य चारित्रिकस्तरेऽपि छात्रः पतितो भवति। एतदर्थमेव स्वामिदयानन्देन सहशिक्षाया अपि विरोधः कृतः यतो हि विद्यालयेषु सहशिक्षया हानिरेव भवति। छात्राणां चरित्रपातने सहशिक्षायाः पर्याप्तं योगदानं विद्यते। महाविद्यालयानां विश्वविद्यालयानां च छात्राः छात्राश्च परस्परं चुम्बनालिङ्गनं कुर्वन्तः सर्वत्र द्रष्टुं शक्यन्ते। स्वामिनः सहशिक्षायाः पक्षे नासन्। विषयेऽस्मिन् ऋषिदयानन्दाः स्वग्रन्थे सत्यार्थप्रकाशे लिखन्ति बालकबालिकानां पाठशालायाः पारस्परिकदूरी द्वि कोशपरिमिता स्यात्। तत्र च येऽपि अध्यापकाः याश्चाध्यापिकाः स्युः, भृत्याः अनुचराश्च स्युः तत्र कन्यानां पाठशालायां सर्वाः स्त्रियः, पुरुषाणां पाठशालायां च सर्वे पुरुषाः भवेयुः।६ ऋग्वेदस्य एकस्य मन्त्रस्य भावार्थे स्वामिनो लिखन्ति- 'हे विद्वांसो ये धर्मात्मनो विदुष्यः स्त्रियः स्युस्ताभिः सर्वाः कन्याः शिक्षयन्तु यतः कार्यनाशो न स्यात् सर्वथा विद्यायुक्ता भूत्वात्युत्तमानि कर्माणि कुर्युः' (दयानन्द भाष्य २.१७.९)।

एकस्मिन्नेव काले एकस्यैव विषयस्य अध्ययने पूर्णसमयं दत्त्वा

क्रमशो विषयाणामध्ययनविधिः प्रतिपादिता महर्षिणा दयानन्देन। शिक्षाप्राप्तेः क्रमोऽयं शिक्षां सम्यक् करोति। गुरुगर्भे स्थित्वा प्राप्ता शिक्षा ज्ञानकर्मपरिपाकेन फलवती भवति। ज्ञानकर्मणोरयं महर्षिदयानन्देन स्वग्रन्थेषु शिक्षायाः विभिन्नबिन्दुषु व्यापकं प्रकाशं कुर्वता ऋग्वेदयजुर्वेदयोः भाष्ययोरपि अनेकानां वेदमन्त्राणां शिक्षापरकम् अर्थं कुर्वता शिक्षाविषयकमहत्त्वपूर्णतथ्यानि प्रति ध्यानमाकृष्टं कृतम्। ऋषेः मन्तव्यानुसारं वेदे शिक्षाया उपादेयतानिवार्यता च विद्याप्राप्तेरुपायाः शिक्षकानां योग्यता, समाजे विदुषां सत्कारः शिक्षायां दण्डविधानम् इत्यादीनां विषयाणां समीचीनं स्पष्टीकरणं दृष्टिगतं भवति। महर्षिकृतवेदभाष्यस्य शिक्षाविषयकतथ्यानि अतिमहत्त्वपूर्णानि सामयिकदृष्ट्या चापि अत्यन्तोपादेयानि सन्ति। शिक्षायाः सुफलं लब्धुमद्यतनीया निर्धारितशिक्षासम्बन्धिनो मापदण्डाः परिवर्तनीयाः सन्ति।

विद्यालयेषु लिखितं भवति यत् शिक्षार्थमागच्छन्तु सेवार्थं च गच्छन्तु किन्त्वद्य छात्रः सेवार्थं समाजे न गच्छति अपितु स्वार्थाय गच्छति। प्रश्नोऽयं विद्यते ईदृश्याः शिक्षायाः को लाभः येन छात्रस्य बौद्धिकं स्तरं तु वर्धते परं मानसिकचारित्रिकाध्यात्मिकदृष्ट्यासौ पतितो भवति। ईदृश्यां शोचनीयावस्थायामाशायाः रश्मिः अस्ति तु केवला आर्षशिक्षैवास्ति। महर्षिणा पठनपाठनविधौ ऋषिकृतग्रन्थानामध्ययनस्य निर्देशः कृतः। सन्दर्भेऽस्मिन् एते आर्षग्रन्थानां लाभमनार्षग्रन्थानां च हानिं दर्शयन्तः लिखन्ति यत् आर्षग्रन्थानां पठनमीदृशमस्ति। यथा-एकवारं निमज्ज्य बहुमूल्यरत्नानां प्राप्तिरेव।

अद्यत्वे पाश्चात्यशिक्षापद्धतावाधारितविद्यालयेषु प्रचलितदूषितसहशिक्षापद्धतिः सर्वविषयाणां अल्पसमये पठनस्य विधानं च स्वामिना विहितपद्धत्यां नास्ति। अद्यतनीयशिक्षाप्रणाल्यां दण्डविधानमपि समाप्तं दृश्यते, प्रायः अद्य गृहस्थिनो विद्यालये स्वपुत्रपुत्रीणां ताडनादिकस्य विरोधं कुर्वन्ति, शिक्षकोऽपि बिभेति क्वचित् विद्यालयात् तस्य निष्कासनं न स्यात् परं सन्दर्भेऽस्मिन् स्वामिना दयानन्देन उद्धृतं यत् –

'सामृतैः पाणिभिर्घ्नन्ति गुरवो न विषोक्षितैः।

लालनाश्रयिणो दोषास्ताडनाश्रयिणो गुणाः।।'[7]

अर्थात् ये मातरः पितरश्च अन्ये गुरवः स्वसन्तानानां शिष्याणां च ताडनं कुर्वन्ति ते स्वपुत्रान् शिष्यान् च स्वहस्तैः अमृतपानं कारयन्ति परं ये तेषां लालनादिकं कुर्वन्ति ते स्वहस्तैः तेभ्यः विषं दत्त्वा तान् नष्टान् भ्रष्टान् च कुर्वन्ति। एवं महर्षिदयानन्दस्य शिक्षाविषये विचारधाराऽत्यन्तसूक्ष्मा मनोवैज्ञानिकी चास्ति। यथायोग्यसन्ततेः निर्माणस्य योजनापि जन्मनः प्राक् गर्भाधानकाले एव कर्त्तव्या। बालकानां हृदये सर्वाधिकप्रभावो मातुः शिक्षाया एव भवति। अतः स्वामिनः पुनः द्वितीयसमुल्लासे कथयन्ति- 'बालकेभ्यो मातोत्तमशिक्षां दद्यात्।'

अद्यतनयुगस्य शिक्षायाः समुचितविकल्प आर्षशिक्षा विद्यते यत्र महर्षिप्रणीतग्रन्थानामध्ययनं भवति आधुनिकज्ञानसम्पन्नव्यक्तौ सर्वशुभगुणानामाधानं भवति।

स्वामिदयानन्दस्य शिक्षादर्शनस्य वर्णनमस्मिन् लघुशोधपत्रे न पूर्णतया कर्तुं शक्यते। पुनरपि एतद्विवेचनेन इदं तु सिद्धमेव यत् महर्षिदयानन्दः एकस्याः ईदृश्याः शिक्षाप्रणाल्याः पक्षपाती आसीत् यदन्तर्गतशिक्षितसमाजः पूर्णरूपेण सभ्यः, सशक्तः, सुसम्पन्नः आनन्दयुक्तश्च भवेत्। अद्यावश्यकतास्ति या शिक्षा अस्मान् अध्यात्मं चरित्रनिर्माणं देशहितचिन्तनं च शिक्षयेत्। परमाधुनिकशिक्षायामेतेषां गुणानां गवेषणा व्यर्था एवास्ति। अतः शिक्षाया उचितदिशाया चयनमावश्यकमस्ति।

सन्दर्भसूची-

१. सत्यार्थ-प्रकाशः स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाशः संख्या-२२-२३

२. परेहि विग्रमस्तृतमिन्द्रं पृच्छ विश्चितम्। यस्ते सखिभ्य आ वरम्। ऋग्वेदः १.४.४.

३. ऋग्वेदः १.६१.२१

४. नूनं सा ते प्रति वरं जरित्रे दुहीयादिन्द्र दक्षिणा मघोनी। ऋग्वेदः २.११.२१

५. ऋग्वेदः ४.२३.१

६. सत्यार्थ-प्रकाशः तृतीयसमुल्लासः।

७. सत्यार्थ-प्रकाशः, द्वितीयसमुल्लासः।

■■■

– Aastha Khursija

'The sky is infinite and so are my dreams' – Rishika Revo

'Universe inside you' – Vikas Prajapati

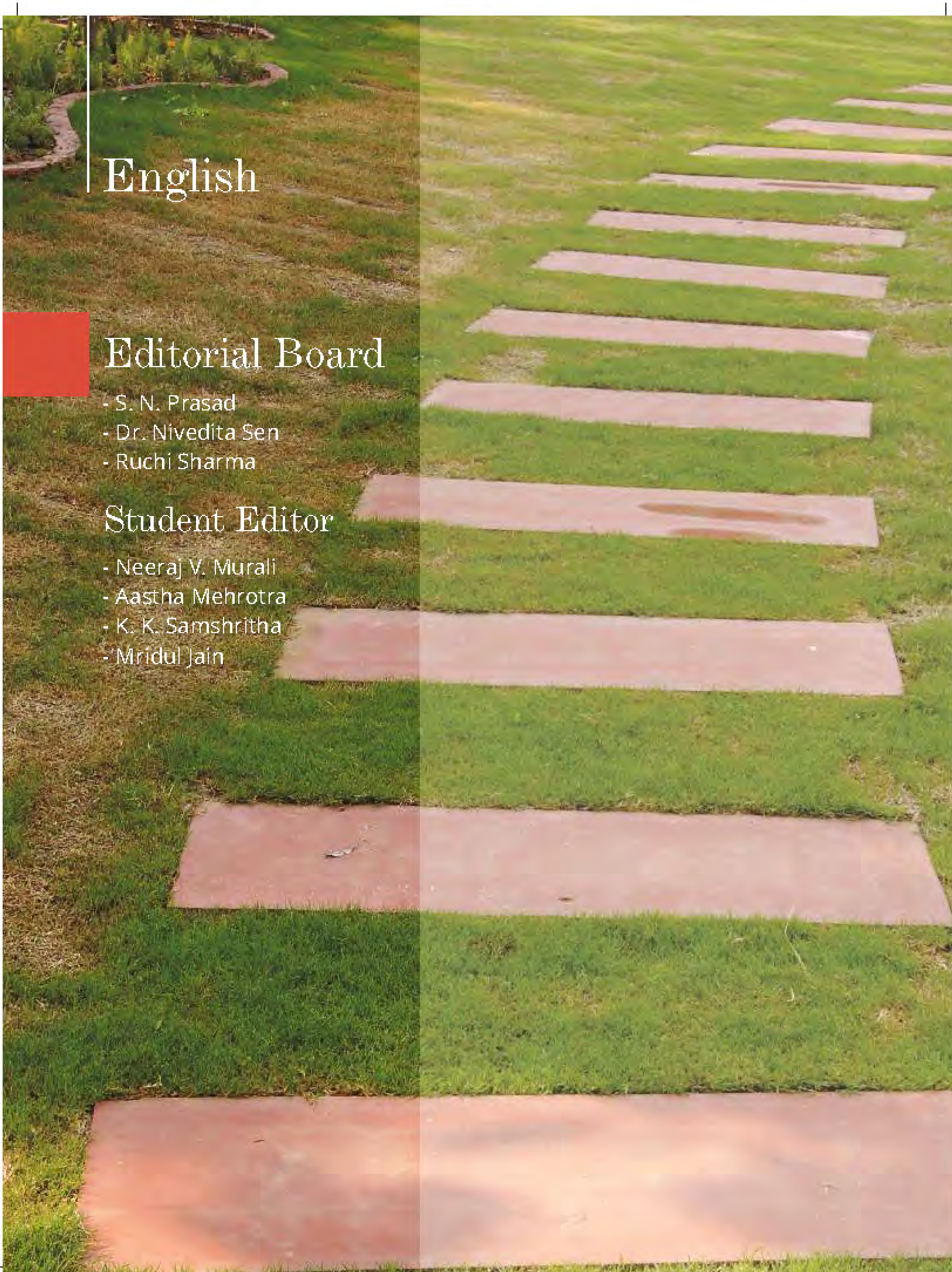

English

Editorial Board

- S. N. Prasad
- Dr. Nivedita Sen
- Ruchi Sharma

Student Editor

- Neeraj V. Murali
- Aastha Mehrotra
- K. K. Samshritha
- Mridul Jain

Index

1. Delhi | 71
2. My winter comes | 71
3. His wails and cries | 71
4. The Mother Earth | 72
5. Days When I Sing | 72
6. Ek Rupaya | 72
7. The santa claus of my life!! | 73
8. Increased Smoking and the Era of Cancer | 74
9. Sculpture | 74
10. Haiku Corner | 75
11. As the Clock Strikes Twelve | 76
12. Good Bye Hans Raj | 78
13. Man and Machine | 78

"ARCHERY" – Men & Women

FIRST POSITION IN THE DELHI UNIVERSITY INTER COLLEGE ARCHERY CHAMPIONSHIP MEN SECTION & THIRD POSITION IN WOMEN SECTION 2016-17

Name of the Players / Teachers from Left to Right:
Prachi, Ishita Gupta,Aditi Bhatia, Sangeeta, Twinkle Singh, Niharika, Abhishek Chauhan , Amit Sharma, Aditya, , Dr. Gaurav , Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon.

"BASKETBALL" – Men

SRCC Basketball Tournament : 2nd Position
YMCA : 1st Position
BITS Pilani Basketball Tournament : 1st Position

Name of the Players / Teachers from Left to Right:
Raghvendra Singh Rathor,Akshay Adhana, Ajay Dabas, Sahil Delu, Rohan Sehrawat,Rahul Jakhar, Dr. Gaurav, Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon

Delhi

-Tanay Sikarvar
B.A. (Hons) English, IIIrd year

Dilli ke Na the kuuche auraaq-e-musavvar the
Jo shakl nazar aai tasvir nazar aai
-Mir

Nimbly we treaded along the angsty lanes
Time peeks from beneath cracked plaster on walls
Which stand besides the dirty meandering drains
That flow under balconies which threaten to fall
The crowd of day, the march ahead, the dust
All resting on the hot terrain over which
The icy winds, the rains, produce no mist
But smoke, which irritates your throat and it
With cough forces out of you a grave question
What is there for one to love in this city?
I wish I could pour out anything but confusion
Delhi has no streets but painted pages
Every face I saw was a portrait
And when I sit huddled in my cluttered room in Delhi
And some verse of Ghalib's reminds me of you
I still miss Delhi

■■■

My winter comes

-Aaryaka Nidhi
B.A. Hons English, Ist year

My winter comes
in folds of skin
embracing sins,
in stormy skies,
and greys of eyes,
in a blurred, hazy
face, through a
frosted, misty pane,
in cackling, flickering
flames and hushed,
silent names, in
parched, cracked lips
against burnt finger tips,
in low, dreamy sighs
over cold, frozen ties,
in slow, swaying toes
on crusted, crisp snow,
in warm, dewy traces
within whispering,
closed spaces, in
'twined, tangled
shapes amidst hidden,
veiled escapes, in
snug, singing smiles
across forgotten,
forlorn aisles.

■■■

His wails and cries

- Aditi Katyal
B.Sc Mathematics Hons., IInd year

It started with the pitter patter
Proclaiming the descend of glory of gods
The crystal droplets falling down
Caressing the golden gravel
Leaving the flabbergasted faces
At the beautiful bequest of nature
Amidst the soft murmur of mizzle
The wails of anguish could be heard
He was hungry, He was frail
He was hopeless, So he wail
His sobs of pain passed tremor through my soul

I was just a by stander
Witnessing him being beaten to death
I looked around to clear the cloud of dreariness I
felt Rather I saw few children dancing in mud
puddles
And a bevy of girls laughing with mirth
Oblivious to the torment in the world
I was perplexed as to why they weren't bothered

I questioned the bearer of my life
What should I do?
I want to stop this but why I am not able to
They said you don't know what sin he may
have committed to deserve
But while looking at his innocent faces dressed
in shabby rags
I mused- what could he have done?
Stole a biscuit or a shilling
Instead of living he was begging
In lieu of smiles, he carries bags of sadness
If it was a sin
Then I was a sinner too
Committing a sin far more graver than that

Standing helplessly looking at him
Being abused as a ragdoll
I realized the callousness of society
And went home with one thought
With closed eyes
Trying hard to ignore the echo of his howls

We ourselves are sinners
Living with a demon inside
Being an enemy of oneself

■■■

The Mother Earth

- Avrati Gupta
BA(Hons) English, Ist year

For help to whom shall she cry,
At this time of drought and dry.
When no one had listen to her earlier then who will now,
It is all because you shall reap what you sow..!!
For help to whom shall she beg,
When this a hole you yourself had dug.
All the time she kept giving you countless warnings,
But you just ignored her by taking sharp turnings..!!
For help to whom shall she ask,
At this hour where to breathe you all need an oxygen mask.
For all in the lust of profit and money,
Are now for living 1 more day spending their every penny..!!
For help now why should she bother,
When her very existence was brutally smothered.
But what she can do, being the mother of these careless stupid children,
She has no other option but to be in a state of oblivion.
And try till her last breath,
To give her children no pain and prove to be the best mother..THE MOTHER EARTH..!!

■■■

Days When I Sing

- Mridul Jain
English (Hons) CIC, IInd year

On a windy Sunday
Church bells ring,
my eyes are gloomy
but still I sing......
Not a glorious Monday,
Monday morning bells ring,
But peacocks don't fail to dance
and I sing.....
Fast forward to Thursday
When I read Keats and Byron,
in the dim of the courtyard,
amongst many I read...
Not a mention to Friday ,
When it's unusually loud,
CP is overflowing with people and
Lodhi Gardens are clouded
I wish for a Sunday,
When the Church bells ring,
While the cuckoo is still yawning
and I sing......

■■■

Ek Rupaya

- Subhash Bezawada
B.A. Prog., IIIrd year

is what she says,
if she does at all.
"Aapka naam?"
"Ekrupaya"
Her glance hops around from shoe to shoe
sticking to the most hopeful ones
And "ekrupaya" she would mumble
accompanied by a demanding clink
of an understanding tin, scattered
with minted steel full of lonely numbers
trying hard to hold on to her lovely tin.
More numbers!
Oh no numbers!
Thump-tap: clink, clink.
Clackety-clack: clink, clink.
"Umar?"
"Ekrupaya"
They come thumping and clacking
to fad bollywood numbers
Or to interesting conversations
on Trump or karwa-chauth.
They come and go.
leather loafers, bulky boots
Oxfords and Uggs
Bare-feet too, sometimes.
But mostly soles or heels.
Some tightly tied up with fancy laces
that seem to satiate serious trust issues.
Some, loosely let down,
for others to stumble upon.
They do come
but they go too.
Care to know how she looks like?
Ekrupaya.
haanji, that's how she looks like.
Her "ekrupaya" might mean the same
in your Punjabi, his Haryanvi or her Hindi
or even in the crooked flow of grammarless tongue
with no silent letters
that they call Indian English.
But how do we translate
the clinks of her lovely tin?

■■■

The santa claus of my life!!

- Ayushi Goyal
B.A. (Hons) Economics, Ist Year

Today is 25 December or, the Christmas day. If we go a century back, this day was usually celebrated only in western countries. In India very few people knew about it. But nowadays Christmas day is celebrated like any other major festival in India. The market is full of gifts, sweets and Santa's clothes. I usually don't celebrate Christmas day because my family doesn't. But something different happened today. Today when I woke up in the morning, I saw a chocolate wrapped in a letter beside my pillow. It may be common for most children but not for me. You may be flabbergasted to know that I am older than 17 and have never got a Christmas present before this. When I opened the letter, I was astonished to see that it was written by my mother. I was surprised because my mother is not educated and she doesn't have any knowledge about western festivals. She doesn't know about it, yet she placed a gift beside my pillow. She did so, because she wanted to see me full of joy and happiness. Her only intention was to see a smile on my face.

So, from there I came to know that a person who comes in red clothes with his Reindeers from the sky with a bag full of gifts, isn't the real Santa Claus. Santa Claus is a person who gives you a reason to be happy. He is a person whose happiness lies in yours. He is a person who can do anything to see a single smile of yours. Although we know that Santa is a fictional character just for making children happy, my argument is why the right to remain happy is only given to the children below 12? Just because we know that in reality Santa doesn't exist can't we have happiness? In my view, there exists at least one Santa in the life of each and every person. But the fact is that we don't know who it is and even if we knew, we never respected them.

After getting a Christmas present from my Santa Claus I was very happy and joyful .But suddenly my

brother came into my room and we started talking about the Christmas day. His argument was that why do we celebrate the festivals which are the giving of western countries? We have lots of Indian festivals, why don't we celebrate them? Later, to strengthen his argument, he said a few lines of a very famous poet which clinched my attention:

"We were not able to protect our sacred plant of Tulsi that's why our children are celebrating Christmas day"

This was the gift given by my mom!

Then I told my brother that the festival can't be bifurcated on the basis of any religion, caste or country. Instead of debating on which festival we must celebrate, whether Eid, Diwali, Christmas or Holi, we must understand the meaning of a festival which is to remain happy and make other people happy.

So on the occasion of Christmas I would ask all to celebrate and enjoy the day.

■■■

Increased Smoking and the Era of Cancer

- Chirag and Rishabh Jain
B.Sc. (Hons) Zoology, Ist Year

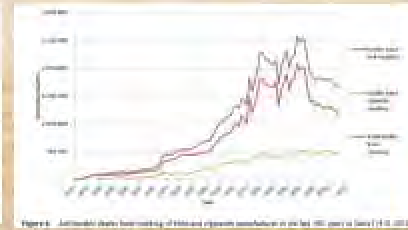

Smoking is by far the most prevalent and fast growing cause of cancer, killing more than a million people in India every year. It can lead to 14 types of cancer, like, mouth and upper throat, larynx, oesophagus, lung cancer, etc. Lung cancer is the most lethal of all. Filter and low-tar cigarettes make little difference as the risk of lung cancer is not reduced in comparison with smokers of average cigarettes. This may be because smokers tend to change the way they smoke in order to satisfy their nicotine craving. For example, by taking bigger puffs or smoking more cigarettes. The more cigarettes you smoke in a day, the higher the risk of cancer you face. Scientists have stated that the number of years you smoke matters in enhancing the risk of cancer, and not the number of cigarettes you smoke a day. Smoking causes cancer chiefly by damaging the DNA. Chemicals like benzene, polonium-210, nitrosamines and benzo(a)pyrene ccause heavy mutilation in the DNA, including that of the genes which protect us against cancer cells. Benzo(a)pyrene is made by chromium which sticks to the DNA. Arsenic and nickel interfere with the pathways of DNA repairing. Inordinate smoking can be fixed by running awareness campaign by the government. Special health camps should be organized to spread awareness among the people about the dangers of heavy smoking. Rehabilitation centers should be setup for smokers who want to be quitters. What is required is proper legislation and its execution to ensure a healthy and unimpaired life to our fellow homo sapiens.

■■■

Sculpture

- Ishita Gautam
B.A. (Hons) English, Ist Year

There is a sculptor within us
Who starts from the inside of things to chisel,
chisel as he cuts
Cuts into a whole from what he knows- a part;
Shapes a face, a mouth, a limb but never, never
the heart
For the heart is something he had wronged
And feels he cannot atone
Rue lies indelible when is write
In heart as in stone.

■■■

Haiku Corner

- Ishita Gautam
B.A. (Hons) English, Ist Year

Shadows behind me
Gripping, groping, leaving
No one ahead.

Sepia sheets the dusk
To gather what remains now
Of the day; of you.

Brick by brick I build
A wall, a world, all of which
Falls apart word by word.

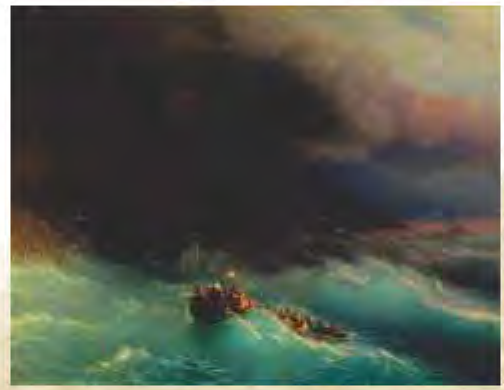

- Hemakshi Malik
B.Sc. Physcial Sciecne, Ist year

As the Clock Strikes Twelve

- Prateek Kundu
B.A. Hons, Economics IIIrd year

As the clock strikes twelve
the hungry dead arrive
Try not to catch those loathsome spirits
For they feed on those alive

It was a rather dull summer for those of us left behind at school. Some of the other students chose to stay back because of poor relations with their parents. Others like me had little choice in the matter. My parents had died when I was six and my aunt and uncle weren't very friendly people. I was the youngest one amongst the four students who had stayed back. I was in the 10th standard while Chiraag, Rinjee and Lokesh were all in 12th.

Our school, the prestigious Mt. Hermon School, was a convent for boys nestled among the soft hills of Darjeeling. Located in a way so as to face the Kanchenjunga, the view from the field was breath-taking. Despite having studied at Mt Hermon for 8 years, it never failed to amaze me. We had a large, old sturdy building that was over 200 years old, with stone walls and long corridors. The walls seemed to whisper the long history they had witnessed, every time you walked by them.

Like most convents located in hill stations, we too had our fair share of horror stories, filled with long haired women in white sarees, the boy who jumped from the hostel building, the graveyard nearby and other horrible clichés. Nobody earnestly believed in them and these stories were mostly used to scare and prank the younger students. I remember being told to never go near the haunted toilet, that later turned out to be a popular smoking spot for the older students.

One warm summer night, as a thunderstorm raged, three of us sat at one table in the dining hall. Chiraag was up in his room because he was unwell. Lokesh and Rinjee conferred in low voices. Curious, I asked them what they were talking about.

"Nothing concerning you", Rinjee said through a mouthful of pork. "You are anyway too young. You'll be too scared to do it. There's no point in telling you about it."

Few things are as compelling as someone telling you that you're incapable of doing something. I said immediately "I'm not scared of anything. If you guys can do it, I can as well."

After a hurried discussion amongst the two, Lokesh looked around furtively and leaned in towards me, "We're going to speak to spirits tonight. My parents gave me an Ouija board for my birthday. We'll try it out in front of the piano room tonight. You can stay back if you're scared, but don't tell the warden."

"I told you I'm not scared of anything. I'll come. I'll meet you guys upstairs", I pushed my plate away and headed to our dormitory.

As I entered my room, I saw Chiraag sitting in his bed by the window looking far into the distance. "Chiraag, are you coming with us to speak to the spirits tonight?"

"Nope. I've seen them man. I've seen them take people. You guys shouldn't do this," he looked towards me as if he was looking at a dead man.

I laughed nervously. It was probably his fever speaking. "Well anyways take care," and I moved to my bed. Chiraag had always been a little weird.

I heard the footsteps of Lokesh and Rinjee coming up at around 9:30. They didn't speak to me and retired to one of the corner beds. I lay reading Alice in Wonderland. The lights were switched off and I reached out to my bag below the bed for my torch. I was determined to stay awake till midnight and accompany the two to the piano room.

At about a quarter to 12 Lokesh and Rinjee got up,

whispering quietly. I could see their shapes moving around in the darkness. They opened a window to let the moonlight in. It was a full moon. The thunderstorm had subsided and a million stars shone through, their radiance magnificent even from a billion miles away.

I got up quietly and whispered to Lokesh, "I told you I was coming with you". Lokesh said nothing and the three of us quietly slipped out.

The piano room was supposedly the most haunted area of our school. There were several accounts of music being heard near the room at midnight. Stories passed down from one generation of students to another, as if they were priceless heirlooms. The room itself was situated at the end of a long corridor, with nothing but store rooms in between.

We sat at the entrance of the piano room and set up the Ouija board. We set up four candles at each edge of the board. Rinjee took out a coin to use.

"O holy spirit passing by, hear our call", Rinjee chanted, our fingers on the coin.

"O holy spirit passing by, hear our call"

"O holy spirit passing by, hear our call", a chilly wind passed through the corridor from unseen windows.

"O holy spirit passing by, hear our call", the candles began fluttering.

"Tell us your name", said Lokesh. And to the surprise of us all, the coin began to move.

H-U-N-G-R-Y

"Hungry? What sort of a name is that?" I asked. "Shhh", said Lokesh, the fear evident in his eyes. "What is your purpose?"

H-U-N-G-R-Y

"I can't do this" Rinjee whispered, "Let's leave. This is too real". Both of us agreed. We blew out the candles, and wrapped the board up. I held the coin in my hand. We began to walk towards the end of the corridor. I looked up and saw Chiraag, standing in the doorway. Wearing his pyjamas, feet bare and swaying slightly. The coin grew heavier in my hand.

"I warned you guys. You shouldn't have come up here", Chiraag said, his voice hoarse and inhuman. The coin grew heavier in my hand. "Hey man, let's get out of here. You were right. This place is too weird", Rinjee said, his voice quavering.

"It's too late don't you see? You've awakened the hungry".

The coin grew heavier in my hand and began to burn.

Chiraag was now walking towards us smiling. "Once the hunger has awakened, it must be satiated", he whispered even as his eyes became a glowing red and his body radiated darkness. We began to run away from Chiraag, towards the piano room. Chiraag was now laughing. We ran from him. We didn't know why. We were too afraid to think, fear paralyzing all thought.

The coin dropped from my hand and as it hit the floor, the only tube light in the corridor went out. The air was filled with a hollow ring and our screams. The last thing I remember before it all went black was a distant clock tower ringing as the clock struck twelve.

■■■

Good Bye Hans Raj

- Brig M. N. Kaushik (Retd)
Alumnus HRC (Batch 1962-65)

Three years ago, we entered the college,
we knew nothing, were a blank paper of knowledge
three years passed, we are leaving the college,
Thanks, Hansraj, as we go for the test of knowledge.

Some of us may go east, some of us may go West,
rest may go to South, but not to forget
those mornings and evenings we passed together,
as we flew together - the birds of the same feather.

We cannot forget you, nor any scene
nor your men, nor those happy hours we have seen
nor lib nor lab or those we leave behind,
we have to leave you all, please don't mind.

Don't be sad Hansraj, for when you lose something
which you kept so affectionately like anything
today you present the country with good quality of men
of tomorrow – doctors, scientists, artists, and army men

We pledge to keep your glory and your name high
never we would act for which you may feel shy
we will prove to be loyal, dutiful, obedient gentle citizens
people would thensay, 'they seem to be Hansrajians'.

We may grow old, unable to see with an open eye
but when we would close them, recollect, no reason why
your red rose structure may not appear,
Of course! We would feel delighted to see you so near!

If somebody would ask where to join
join Hansraj, if you want to be a Lion
God! If you have reserved us for next birth,
Almighty! In Hansraj then, pleasereserve a berth.

■ ■ ■

Man and Machine

(A tribute to Lt Col AB Tarapore, PVC)

- Brig M. N. Kaushik (Retd)
Alumnus HRC (Batch 1962-65)

Their one machine
The enemy thought would be equal to
India's hundred ordinary men
But
Enemy realised too late
Their hundred machines were not equal to
India's one extra-ordinary man.

"CHESS TEAM" – Men

RUNNER'S UP IN DELHI UNIVERSITY INTER COLLEGE CHESS CHAMPIONSHIP 2016-17

Name of the Players / Teachers from Left to Right:
Shivam Verma, Yashasvi Singla, Akash Payasi, Amir Asim, Jagdeep Singh Sudan, Dr. Gaurav, , Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon

TEACHING & NON-TEACHING STAFF

Name of the Non-Teaching/ Teachers Staff from Left to Right:
Ramnaresh, Harbhan Verma, Vijay Verma, Gaurav, Dr. Gaurav, Dr. Rama (Principal), Dr. M. P. Sharma (Teacher In-Charge), Anshika Tandon

Delhi University Gold Medalists 2016-17

PREETIKA DHAWAN
M.Sc. Physics

ADITI TAILOR
M.Sc. Botany

SHIVANI MANGLA
M.Sc. Anthropology

VISHESH GAUTAM
M.Sc. Geology

KRISHAN ARYA
M.A. Sanskrit

KARTIKEYA SINGH SANGWAN
M.Sc. Earth Science

ANUP DAS
B.Sc. (Hons.) Zoology

SHIVANI GROVER
B.Sc. (Hons.) Physics

SARTHAK MALHOTRA
B.Sc. (Hons.) Anthropology

HANSRAJ COLLEGE

— University of Delhi —

Tel.: 011-27667458, 27667747 • Fax: 011-27666338
Email: principal_hrc@yahoo.com • www.hansrajcollege.co.in